पंद्रह रुपए

वर्ष : 2 अंक : 16
मंगलवार, 07 जून, 2022

RNI-UPHIN/2021/79954

लघु-कथा अंक
प्रतियोगिता-१

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार–पत्र

आवरण : अक्षि त्यागी

इस अंक के कहानीकार

प्रो. शरद नारायण खरे, महेश केसरी, डॉ. रंजना जायसवाल, डॉ. तबस्सुम जहां, हरदीप सबरवाल, सीताराम गुप्ता, निरुपमा मेहरोत्रा, भारत दोसी, अनन्त आलोक, सतीश 'बब्बा', डॉ अर्चना प्रकाश, समीर उपाध्याय 'ललित', विजयानंद विजय, व्यग्र पाण्डे, सतेन्द्र शर्मा 'तरंग', राजेन्द्र ओझा, डॉ. प्रणव देवेन्द्र श्रोत्रिय, डॉ. सुपर्णा मुखर्जी, विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप', रंगनाथ द्विवेदी, डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल', शिल्पी शर्मा 'निशा', निशा भास्कर, रेखा शाह आरबी, मोतीलाल दास, डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा, डॉ जया आनंद, विनोद कुमार विक्की, अनिल कुमार राणा और डॉ. मृदुला त्यागी

राष्ट्र उत्थान, हमारा ध्येय

प्रकाशनाधीन

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क
9897742814

दर्दीला गीतकार
रामावतार त्यागी

अमन कुमार 'त्यागी'

हमारी संस्कृति और हमारा पर्यावरण
(शोध आलेख)

अमन कुमार 'त्यागी'
डॉ. अमित कुमार

वृद्धावस्था
(सामाजिक अध्ययन)

रश्मि अग्रवाल

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...
प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद

समाचारपत्र भी
पुस्तकें भी

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

पंद्रह रुपए

RNI-UPHIN/2021/79954

MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

वर्ष : २ अंक : १६ मंगलवार, ०७ जून, २०२२

संपादक
अमन कुमार 'त्यागी'
9897742814
amankumarnbd@gmail.com

प्रबंध संपादक
सौरभ भारद्वाज

प्रतिनिधि
डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' (हरिद्वार)
उपेन्द्र सिंह (दिल्ली)
अर्चना राज चौबे (नागपुर)
निधि मिथिल (सतारा)
अतुल शर्मा (मेरठ)

कार्यालय प्रमुख
तन्मय त्यागी

सदस्यता प्राप्त करें

एक साल १००० रुपए, दो साल १६०० रुपए
पांच साल ४८०० रुपए
अंक प्रकाशित न होने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

भुगतान करें
Ac- Name - OPEN DOOR, Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD,AC- 368602000000245, IFSC- IOBA0003686 PAN-AABAO7251R

संपादकीय कार्यालय- साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)

वैधानिक- समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी लेख/समाचार/कविता/कहानी/विज्ञापन आदि के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा।

सभी पद अवैतनिक हैं

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद, बिजनौर से मुद्रित तथा ए-7, आदर्श नगर (तातारपुर लालू), नजीबाबाद-246763 जिला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक-अमन कुमार
मोबाईल नं. 9897742814
Email-opendoornbd@gmail.com
RNI-UPHIN/2021/79954

सम्पादकीय

बात कही सी

वर्तमान में हिंदी साहित्य में जितनी संख्या कवि और लेखक की है उतनी शायद ही किसी अन्य भाषा में हो। यह एक ओर प्रसन्नता की बात है मगर चिन्ता भी यहीं से प्रारंभ हो जाती है। अधिक संख्या में मौजूद साहित्यकारों की उपस्थिति भाषा के लिए तो उत्तम बात है किंतु साहित्य की दृष्टि से यह स्थिति संदेह उत्पन्न करती है। अर्थशास्त्र क्या कहता है? यह बात छोड़ दीजिए, साहित्य में अधिक प्रोडक्शन गुणवत्ताहीन हो जाता है। साहित्य किसी मशीन से निकला प्रोडक्शन नहीं बल्कि मानसिक संघर्ष से निकलने वाला अनुभव होता है। आज देखने में आ रहा है कि पुस्तकों की स्थिति पर एक ओर चिंता व्यक्त की जा रही है दूसरी ओर धड़ल्ले से पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। पाठक की कमी का रोना रोने वाले भूल जाते हैं कि आज पुस्तकों के प्रकाशन में बूम आया हुआ है। पत्र-पत्रिकाएं निरंतर वृद्धि कर रही हैं। अब यह बात अलग है कि उनकी गुणवत्ता क्या है? महंगाई के इस दौर में भले ही अच्छे साहित्यकार अंधेरे में सफर कर रहे हों मगर कितने ही लोग हैं जो जोड़तोड़ कर पैसे के दम पर पुस्तकें प्रकाशित कर अपने आपको साहित्यकार सिद्ध करवा ही लेते हैं। धनाभाव में जीवन-यापन कर रहा एक बेहतरीन साहित्यकार भी आज बेमतलब की पुस्तकों की समीक्षा और भूमिका लिखने पर मजबूर नजर आ रहा है। कितने ही साहित्यकारों को जानता हूं जो न चाहते हुए भी उन विमोचन उत्सवों में जाते हैं जिनमें वह दिल से जाना ही नहीं चाहते। बल्कि जिन्हें वह साहित्यकार ही नहीं मानते घंटों उनकी बकवास सुनने के लिए मजबूर से नजर आते हैं। टुकुर-टुकुर देख रहे होते हैं साहित्य को नंगा होते हुए। मानते हैं कि यह विडंबना है, मगर इस विडंबना का हिस्सा झूठे सम्मान की खातिर बने रहते हैं। सम्मान का मोह छोड़ना बड़ा मुश्किल है। ठीक उतना ही मुश्किल जितना कि शरीर छोड़ना होता है। अच्छा, यह बात भी है कि एक स्वाभिमानी साहित्यकार न भी जाए तो भी उस किताब का विमोचन तो होगा ही, मंत्री करेगा, कमिश्नर करेगा, जिलाधिकारी करेगा मतलब कोई तो करेगा ही। खाना-पीना भी होगा, जितनी देर लोग वहां रहेंगे तारीफें भी करते रहेंगे। विमोचित पुस्तक प्राप्त करेंगे और घर की उस टेबिल पर रखी जाएगी जिस पर आगंतुकों की नजरें जा सकें। सिर्फ एक वाक्य सुनने के लिए 'अच्छा आप भी थे इस कार्यक्रम में।'

'अब क्या करें साहब! लेग बुलाते हैं तो जाना ही पड़ता है, अब वो साहित्य कहां रहा है?' यह जवाब भी रटा-रटाया होता है। ऐसे में हमने एक बेहतर प्रयास करने का कदम उठाया है लघु-कथा के माध्यम से। जिसमें प्रो. शरद नारायण खरे, महेश केशरी, डॉ. रंजना जायसवाल, डॉ. तबस्सुम जहां, हरदीप सबरवाल, सीताराम गुप्ता, निरुपमा मेहरोत्रा, भारत दोसी, अनन्त आलोक, सतीश 'बब्बा', डॉ अर्चना प्रकाश, समीर उपाध्याय 'ललित', विजयानंद विजय, व्यग्र पाण्डे, सतेन्द्र शर्मा 'तरंग', राजेन्द्र ओझा, डॉ. प्रणव देवेन्द्र श्रोत्रिय, डॉ. सुपर्णा मुखर्जी, विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप', रंगनाथ द्विवेदी, डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल', शिल्पी शर्मा 'निशा', निशा भास्कर, रेखा शाह आरबी, मोतीलाल दास, डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा, डॉ जया आनंद, विनोद कुमार विक्की, अनिल कुमार राणा और डॉ. मृदुला त्यागी आदि महानुभावों ने भी आहूति दी है।

हमारा यह सामूहिक प्रयास कैसा रहा? पाठक ही बताएंगे मगर हम आप सबके सहयोग से सार्थक कदम उठाते ही रहेंगे।

अमन कुमार 'त्यागी'

अंदर के पन्नों पर

१. प्रो. शरद नारायण खरे	०४	१६. सतीश 'बब्बा'	२०
२. डॉ जया आनंद	०५	१७. विजयानंद विजय	२१
३. मोतीलाल दास	०७	१८. रेखा शाह आरबी	२२
४. डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा	०८	१९. समीर उपाध्याय 'ललित'	२३
५. विनोद कुमार विक्की	०९	२०. राजेन्द्र ओझा	२४
६. महेश कुमार केशरी	१०	२१. शिल्पी शर्मा 'निशा'	२५
७. भारत दोसी	११	२२. व्यग्र पाण्डे	२६
८. डॉ. रंजना जायसवाल	१२	२३. सतेन्द्र शर्मा 'तरंग'	२७
९. डॉ. तबस्सुम जहां	१३	२४. डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	२८
१०. हरदीप सबरवाल	१४	२५. डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'	२९
११. सीताराम गुप्ता	१५	२६. निशा भास्कर	३०
१२. डॉ अर्चना प्रकाश	१६	२७. विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'	३१
१३. अनिल कुमार राणा	१७	२८. डॉ. मृदुला त्यागी	३२
१४. निरुपमा मेहरोत्रा	१८	२९. रंगनाथ द्विवेदी	३३
१५. अनन्त आलोक	१९	२६. डॉ. प्रणव देवेन्द्र श्रोत्रिय	३४

प्रो.शरद नारायण खरे
प्राचार्य

शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (मप्र)-४८१६६१
मो.- ९४२५४८४३८२, ७०४९४५६५००

समझदारी

'मेम साब, कल तो बहुत बुरा हुआ, मेरा घरवाला दारू पीकर घर में बहुत हुल्लड़ कर रहा था, मेरे साथ बहुत मारपीट कर रहा था, तो किसी पड़ोसी ने थाने फोन कर दिया, तो पुलिस आई और उसे पकड़कर ले गई। रात भर बंद रखा और उसकी ख़ूब पिटाई की। कितना ख़राब हुआ न?' कामवाली बाई ने वर्तन मलते हुए घर-मालकिन से कहा।

'क्या, ख़ाक बुरा हुआ। जब वो दारू पीकर हुड़दंग कर रहा था, और तेरी मारकुटाई कर रहा था, तो यह तो अच्छा ही हुआ। अब वो बिलकुल सुधर ही जाएगा। पुलिस ने बढ़िया ही पिटाई की उसकी।' घर-मालकिन ने कहा।

'नहीं, मेम साब! ऐसा मत कहिए। अगर उसने मारपीट की तो क्या हुआ, वह मुझे प्यार भी तो बहुत करता है,और मेरी जिन्दगी की डोर भी तो उसके साथ बंधी हुई है। जब मैंने उसके साथ शादी की है, तो निभाना भी तो जरूरी है। और फिर आपस में काहे की ऐंठ और कैसी अकड़?' बाई ने अपनी बात कही।

अनपढ़ बाई का जवाब सुनकर ऊंचे पद पर नौकरी करने वाली तलाकशुदा मेम साहिबा दंग रह गईं।

यादें

'पापा आपसे कुछ नहीं बनता है! दवा भी नहीं पी पा रहे हैं! और चम्मच में भरी सारी दवा ही फैला दी! ऐसा कैसे चलेगा?' जवान बेटे ने बिस्तर पर लेटे, सत्तर वर्षीय रिटायर्ड बाप को डंपटते हुए कहा!

'हां बेटा दिक्कत तो है!' बुदबुदाते हुए पिता बोले!

'लगता है कि धीरे-धीरे पापा की याददाश्त जा रही है!' धीरे से बेटे ने अपनी पत्नी की ओर मुखातिब होते हुए कहा!

पर यह बेटे का भ्रम था! पिता को गुजरे वक्त के सारे वाकया याद थे! वे बेटे के बचपन के दिनों में पहुंच गए!बेटा अब नन्हें बालक के रूप में उनके सामने था, और तीन पहिये की साइकिल चलाने की कोशिश कर रहा था!

'पपा-पापा, मुझसे नहीं बनेगी यह साइकिल चलाते! मैं तो बार-बार गिर जाता हूँ!' बेटे ने तुतलाते हुए कहा!

'नहीं बेटा, जरूर बनेगी! क्यों नहीं बनेगी? अरे मेरा स्ट्रोंग बेटा सब कुछ कर सकता है! मेरा बेटा, न केवल एक दिन साइकिल के साथ मोटर साइकिल, कार चलाएगा, बल्कि-बल्कि-बल्कि बड़ा होकर मेरा भी सहारा बनेगा!'

यादों की परतें खुलते ही पिता की आंखें भर आईं! वे वर्तमान में वापस लौट आए, और हिम्मत जुटाकर खुद का सहारा खुद बनने की तैयारी करने लगे!

धर्मपरायणता

'क्या, डॉक्टर साब! पाँच तारीख के पहले एबहर्शन संभव नहीं?'

'नहीं! मेरी कोई डेट खाली नहीं।पर आपको पाँच तारीख में क्या प्रॉब्लम है?'

'दरअसल पाँच तारीख से नवरात्रि पर्व शुरु हो रहा है, और मैं पूरे नौ दिन उपवास रखती हूँ, तो उस दौरान यह काम कराना गलत माना जाएगा न, डॉक्टर साब?'

'क्या मतलब?'

'मतलब यह डॉक्टर साब! कि नवरात्रि में हम कन्या पूजन करते हैं, और उस दौरान मैं अपनी गर्भस्थ पोती का, बहू के एबॉर्शन द्वारा ख़ात्मा कराऊँ, तो यह पाप माना जाएगा न?' दादी जी ने जवाब दिया।

डॉक्टर उनका जवाब सुनकर उनका मुँह ताकने लगा।

वह एक ही तो है

'अरे निगारआज तो अपने एरिया में कहीं बिजली गिरी है न?' नीलम ने कहा!

'अरे एरिया नहीं, वो सामने वाली वाली मस्जिद के गुम्बद पर गिरी है, जिसमें वो गुम्बद को काफी नुकसान पहुंचा है!' निगार ने जवाब दिया!

'चलो गनीमत है कि बिजली किसी बिल्डिंग पर नहीं गिरी, नहीं तो जन हानि भी हो सकती थी!...पर एक बात है निगार कि तेरे खुदा ने हम सबकी बड़ी रक्षा की, सबकी मार अपने सिर पर ले ली, और हम सबको बचा लिया!' नीलम ने कहा!

'बिलकुल सही कह रही हो नीलम, पर इसी तरह से दो साल पहले तेरे भगवान ने भी तो हम सबको बचाया था!' निगार ने कहा!

'क्या मतलब?' नीलम ने जानना चाहा!

'अरे तू भूल गई क्या? दो साल पहले मोहल्ले के राम मंदिर के शिखर पर इसी तरह से बिजली गिरी थी न?' निगार ने नीलम को याद दिलाते हुए कहा!

'हां-हां बिल्कुल याद आ गया! पर एक बात तो है निगार, कि जब सच्चाई यही है तो फिर खुदा- भगवान में अंतर ही क्या हुआ?नीलम ने अपने दिल की बात कही!

'तुम सच कह रही हो नीलम, लेशमात्र भी फर्क नहीं हुआ! दोनों एक ही तो हुए न?' निगार ने समर्थन करते हुए कहा!

'तो फिर निगार! धर्माचार्य दोनों को अलग- अलग क्यों बताते हैं?'

'अरे नीलम, हिन्दु- मुसलमानों को मजहब के नाम पर लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करने के लिए!

कर्तव्यपरायणता

चौराहे पर लॉकडाउन के नियमों को लागू कराने के लिए ड्यूटी पर तैनात पुलिस कॉन्सटेबल ब्रजेश के मोबाइल फोन पर घंटी बजी। फोन करने वाला उनका दोस्त आनंद था, जो सिंचाई विभाग में क्लर्क था।

फोन पर आनंद का संदेश सुनाई देता है-

'यार, ब्रजेश जब देखो तुम ड्यूटी करते रहते हो, बहाना बनाकर छुट्टी ले लो न।'

'नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता, लोगों की सुरक्षा करना मेरा फर्ज है।'

वह इतना कह पाया था कि तभी सामने दो बाइकों में जोरदार टक्कर हुई, और एक लड़का, जिसका नाम गौरव था, बुरी तरह घायल हो गया। उसे ब्रजेश तुरंत अस्पताल लेकर गया। समय पर इलाज मिल जाने से वह बच गया, पर डॉक्टर ने कहा कि यह घायल को समय पर कॉन्स्टेबल द्वारा अस्पताल लाने के कारण ही संभव हो सका है। डॉक्टर, कॉन्स्टेबल ब्रजेश की कर्तव्यपरायणता की तारीफ कर ही रहा था कि तभी गौरव का पिता पहुँचा, उसने भी ब्रजेश की तारीफ सुनी। गौरव का पिता और कोई नहीं, बल्कि ब्रजेश का दोस्त आनंद था, जो कुछ देर पहले मोबाइल पर उसे ड्यूटी से बचने की सलाह दे रहा था। यह सुनकर उसका सिर झुक गया। वह ब्रजेश से नजरें मिलाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। पर वह ब्रजेश की अपने कर्तव्य व रोजी-रोटी से सच्ची मोहब्बत के साथ ही उसकी मानवता को मन ही मन सलाम किए बिना न रह सका। पर उसी क्षण से आनंद के भीतर से बहानेबाजी का त्यागकर कर्तव्यपरायण रहने का संकल्प ले लिया।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

Subscribe

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

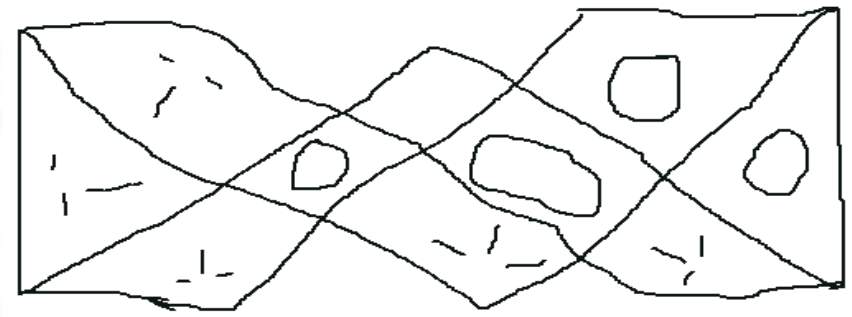

डॉ. जया आनंद
प्रवक्ता, स्वतंत्र लेखन

C-२०४, सेक्टर १६,
ऐरोली इनटॉप हाइट्स नवी मुम्बई-४००७०८
E-mail : maipanchami@gmail.com
Mob. 97696 43984

अपूर्ण कौन?

ठाणे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर वीटी के लिए फास्ट लोकल आगयी थी, रूपाली एक मिनट की देरी किए बिना झट लेडीज कम्पार्टमेंट में बैठ गयी। रोज ही ऑफिस जाना होता है। साढ़े नौ की फास्ट लोकल से ठीक टाईम पर पहुंच जाती है। अभी उसे सीट नहीं मिली थी, हमेशा की तरह उसके कानों में आवाज गूँजी 'ऐ ताई...ऐ वहि द्या न मला'

'उफ कहाँ-कहाँ से चली आती हैं ये सब' रूपाली ने बेरुखी से मुँह फेरा। 'ताई इकड़े बग न!...देखो न ताई' फिर वही आवाज...रूपाली ने उसे सर से पाँव तक एक झटके में देखा। चमकती हुई गुलाबी साड़ी, होठों पर गहरी लाल लिपस्टिक, आँखों के कोरों तक खिंचा हुआ काजल, बड़ी सी लाल बिंदी, हाथों में भर-भर चूडियां, कद काफी लंबा, इतना कि साड़ी पैरों के ऊपर चढ़ गयी थी और कड़क पैरों में घिसी हुई हवाई चप्पल दिख रही थी,चेहरे पर रूखापन।...'कैसे होते हैं ये सब..अजीब से...कहीं शादी-ब्याह हो, बच्चा पैदा हो बस चले आयेंगे ...ट्रैफिक में भी तो कितने घूमते हुए मिल जाते हैं .. रूपाली के विचारों की गति ट्रेन की गति से भी तीव्र मालूम दे रही थी। अचानक उस गुलाबी साड़ी वाले ने रूपाली के सर पर हाथ रखा 'ए ताई ...खूप-खुप आशीर्वाद .. दीदी! तुम्हारा सब काम बने' रूपाली अचकचा गयी .. 'उफ.. एक लंबी साँस उसने खींची.. एक पल रुककर उसने स्वयं को संयत किया और फिर अपने पर्स से दस का नोट निकाला और उसे दे दिया। उसने सुना था कि इन जैसे लोगों की दुआ खूब लगती है और आज रूपाली का पदोन्नति के लिए ऑफिस में इन्टरव्यू था। 'दीदी! तुम्हारा सब काम बनेगा..नक्की' बोलते हुए वह गुलाबी साड़ी वाली ट्रेन से उतर गयी। रूपाली सोच में पड़ गयी कि अपूर्ण वो गुलाबी साड़ी वाली है या वह स्वयं!!

पाती प्रेम की

मेरे प्रिय! 'मेरे' ..., कितना अच्छा लग रहा है मुझे कि किसी को मैं अपना कह कर बुला सकती हूँ। किसी पर मेरा पूर्ण अधिकार ..जिससे मैं खुल कर हर बात कह सकती हूँ, संकोच को परे हटाकर स्वयं को अभिव्यक्त कर सकती हूँ, जिसका हाथ थामे साथ-साथ जीवन की ऊँची -नीची डगर को हंसते-मुस्कुराते पार कर सकती हूँ... हाँ ऐसा कोई मुझे मिल गया...।

तुम्हारी सुनयना

ये पहली प्रेम की पाती लिखी थी सुनयना ने उसको जिसे वो खुलकर अपना कह सकती थी...।

सुनयना बहुत खुश थी ...उसकी सगाई हो गयी थी। घर परिवार के सभी लोग खुश थे। माँ पापा ने शादी तय की थी और उनकी पसंद सुनयना की पसंद बन गयी।

सगाई वाले दिन हर्षित ने सुनयना को अंगूठी पहनाई, गाना-बजाना दावत सब कुछ हुआ। सुनयना और हर्षित की आंखों में एकदूसरे के लिए अनुराग छलकने लगा था। चलते समय हर्षित ने सुनयना को बाय किया और धीरे से कहा- 'मैं कल आपको फोन करूँगा'

सुनयना की पलके झुक गयीं थीं।

दूसरे दिन रात दस बजे हर्षित ने सुनयना को फोन लगाया 'हेलो सुनयना! मैं..'

'हाँ समझ गयी ...कैसे हैं आप'? सुनयना ने औपचारिक बातों से शुरुआत की, कुछ देर बात करने के बाद सुनयना ने अपने मन की बात कही- 'फोन-वोन तो ठीक है पर मैं आपको चिट्ठी लिखना चाहती हूँ, आप भी मुझे चिट्ठी लिखिए। ..कितनी ही फिल्में देखी जहाँ प्रेम की पाती कबूतर ले कर जाता था, अब कबूतर तो नहीं... पर पाती तो डाकिया ले कर जाता ही है। ...इससे पहले कभी किसी को प्रेम की पाती नहीं लिखी ...हिम्मत ही नहीं थी ..' सुनयना हँस पड़ी।

'ओके सुनयना! शादी की तारीख तक हम एक दूसरे को चिट्ठी लिखेंगे ...पर मैं आपकी आवाज भी सुनना चाहता हूँ इसलिए फोन भी करूँगा'...हर्षित भी मुस्कुरा दिए।

अब सुनयना और हर्षित के बीच चिट्ठियों का सिलसिला चल पड़ा जो धीरे-धीरे, हौले-हौले प्रेम की पाती में तब्दील होने लगा...हाँ दोनों के बीच प्रेम का अंकुर फूटने लगा था।...दो महीनों में कितनी ही चिट्ठियां दोनों ने एक दूसरे को लिखी। एक दूसरे का ख्याल, चिंता, भविष्य की योजनाएं, दोनों परिवारों के मध्य सामंजस्य का भाव, मिलने की बेचैनी...कितना कुछ प्रेम से सराबोर था सब।

हर्षित और सुनयना की शादी धूम धाम से हुई । ...शादी के बाद शुरू हो गया गृहस्थी का चक्र, फिर बच्चे, बच्चों का स्कूल, ऑफिस, ...इन्हीं सब मे दिन-रात बीतने लगे। यही जीवन है!...हर्षित को इतनी भी फुरसत नहीं कि कुछ देर बात करें उससे जो पहले उसकी आवाज सुनने को लालायित रहते थे ...बस काम से काम,...क्या है ये सब! क्या अब प्रेम, स्नेह जैसा कुछ नहीं रहा ...सुनयना गहरे सोच में पड़ गयी ।

... दूसरे दिन सुबह जब हर्षित ऑफिस जा रहे थे तो सुनयना ने लंच के साथ एक लिफाफा भी दिया और कहा 'देखो ! ऑफिस जा कर ही खोलना'

हर्षित जल्दी में बाय कर के चले गए। ऑफिस पहुँच कर वहाँ के कामों में व्यस्त हो गए। लंच टाइम आया तो हर्षित को सुनयना के लिफाफे की बात भी याद आयी ।

'अरे! सुनयना ने कहा था ...पता नहीं क्या है इसमें।'

हर्षित ने लिफाफा खोला तो अंदर एक अच्छे से फोल्ड किया हुआ एक कागज था। हर्षित ने जल्दी से खोल कर पढ़ना शुरू किया...

मेरे प्रिय !

तुम मेरे हो ये अनुभूति ही अपने में अद्भुत है । ... कितने दिनों से हमने एक दूसरे को कोई चिट्ठी नहीं लिखी ...वो प्रेम की पाती ...आज मेरा मन किया तुम्हें लिख ही दूँ ...,आज मैं जो तुमसे कह रही हूँ वो तुम भूलना नहीं, ये हमारे जीवन से जुड़ा है, हमारे बच्चे भी इससे जुड़े हैं . ..देखो तुम भूलना नहीं ...

१. आटा - १० किग्रा.
२. चीनी - ५ किग्रा.
३. अरहर दाल- २ किग्रा.
४. चावल -५ किग्रा.
५. चाय पत्ती - २५० सौ ग्राम का पैकेट
६. घी- एक किलो का पैकेट

और हाँ पनीर लाना बिल्कुल मत भूलना बच्चो को बहुत पसंद है न ...देखो भूलना नहीं ...। तुम्हारा न भूलना ही तुम्हारी इस चिट्ठी का जवाब होगा ।

तुम्हारी सुनयना

हर्षित की आँखे छलक आयीं थीं .. इस प्रेम की पाती का जवाब वो नहीं भूल सकते थे। कभी नहीं...

प्रेम तो अब भी था बस उसका स्वरूप बदल गया था ..।

भाव की खबर

राखी जल्दी जल्दी तैयार हो रही थी। आज उसकी फील्ड ड्यूटी थी।, इन्टरव्यू लेना था ... न ...न किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का नहीं बल्कि कुछ छोटे-बड़े व्यापारियों का। नये वर्ष में कोरोना का भय कुछ कम हुआ था, वैक्सीन भी आ गई, अब उनका काम धाम कैसा चल रहा है, मार्केट की क्या स्थिति है उन सब पर उसे एक न्यूज चैनल के लिए प्रोग्राम रिकॉर्ड करना था। बाहर न्यूज चैनल की वैन आ खड़ी हुई। राखी ने अपने खुले हुए बालों को जल्दी समेटा और एक पोनीटेल बनाई और हाथ में सैंडविच लेकर बाहर जाने लगी कि याद आया अरे! मास्क लेना तो भूल ही गई। जल्दी से उसमें अलमारी से मैपिंग मास्क निकाला और मुँह पर लगा लिया ...अब सैंडविच कैसे खाएं!! बहुत बड़ी मुश्किल !! ख़ैर उसने फिर सैंडविच जल्दी से एल्युमिनियम फॉयल में रखा और बैग लेकर वैन में बैठ गई।

'गुड मॉर्निंग राखी!' कैमरामैन ने अभिवादन किया 'गुड़ मॉर्निंग राकेश!' 'अब आज जाना किधर है?' 'राकेश! आज अमीनाबाद चलिए वहां की मार्केट है न !.. बस वहीं।'

ड्राईवर ने अमीनाबाद की ओर वैन मोड़ ली। लगभग बीस मिनट में वैन अमीनाबाद के चौराहे पर पहुंच गयी। कैमरामैन राकेश ने अपना कैमरा सम्भाला और राखी ने माइक लिया और बाजार में इंटरव्यू लेने लगी। 'हां सर ! आपकी कपड़े की शॉप है, लॉकडाउन के बीच तो बड़ा नुकसान हुआ होगा!'

'बहुत नुकसान हुआ, बहुत परेशान हो गए... हम सबका तो धंधा पानी ही बंद हो गया था' दुकान के मालिक ने उत्तर दिया

'अच्छा आपकी तो फर्नीचर की शॉप है, कैसा चल रहा है सब?' राखी ने दूसरे व्यापारी से पड़ताल की।

'क्या बताएं मैडम जी! हमें तो बड़ी मुश्किल हो गई, खर्चे इतने सारे और आय कुछ नहीं ... अब थोड़ा बहुत तो काम हो रहा है वैसे तो हाल बेहाल हो गया' फर्नीचर व्यापारी ने अपना दुखड़ा सुनाया वहीं एक बड़े शोरूम के मालिक से राखी ने साक्षात्कार लेना शुरू किया 'मैडम! बड़ा शोरूम है हमारा, इसका रखरखाव, सारे वर्कर्स का खर्चा बहुत दिक्कत हो जाती है और अभी गाड़ी पटरी पर नहीं आई है, यह कोरोना ने तो जीना मुहाल कर दिया और, सारा बिजनेस ठप ही हुआ समझो मैडम जी!'

वहीं शो रूम के पास जूता बनाने वाला बूढ़ा मोची बैठा था 'क्या हाल है आपका बाबा?' राखी ने उस बूढ़े मोची की ओर माइक बढ़ाया।

'सब ठीक है बिटिया!' बूढा मोची जूते सिलते हुए बोला 'आपके काम पर बड़ा असर हुआ होगा कोरोना के कारण!' 'बिटिया! लॉकडाउन में तो बंद हुई गवा रहै तब तो बहुत परेसानी भयी रहै पर बिटिया! हम और हमारा मेहरिया थोड़ा पैसा बचाए रहै तो काम चलत रहा अउर बाकी परेसानी दुख-सुख तो जिन्नगी के साथ चलत है घबराए का जरूरत नाही।'

'अभी कैसा चल रहा है बाबा!?' 'पहले तो बिटिया! २०-३० रुपिया रोज कमाए ले रहै पर अब दस-पाँच मिलत है पर हम सुखी हन, सब ईश्वर ठीक करिहैं, मनका सांति चाही अउर का!'

राखी अवाक हो कर देखते हुए सोचने लगी एक वो बड़े शोरूम का मालिक जिसके पास सब कुछ होने के बाद भी अभाव है और एक यह गरीब मोची जो अभाव के बाद भी भाव से लबालब है ... लेकिन कौन सी खबर चैनल पर चलेगी इसी उधेड़बुन में थी ...शाम को चैनल पर मध्यम और बड़े शोरूम के मालिक का समाचार चलाया गया और छोटे मोची के समाचार को एडिट कर दिया गया था।

जवाब

काशी विश्वनाथ के बाहर भिखारियों की लंबी लाइन है। मैं भीतर काशी विश्वनाथ पर जल चढ़ा रहा हूं और मेरे होंठ बुदबुदा रहे हैं 'हे ईश्वर!, हे भोला-भंडारी! यह कैसी विडंबना है कि तुम्हारे मंदिर के आगे कटोरा लिए भीख मांगते इतने दीन-हीन चेहरे। तुम बस चुपचाप दूध जल से नहाते रहते हो, फूल, बेलपत्र से सजते रहते हो। कितने दुखी हैं ये सब और तुम बस चुपचाप मूकदर्शक बने रहते हो। सब इसलिए तो कहते हैं हमारे समय का ईश्वर चुप है..। 'मेरी आंख नम हो रहीं थीं, कहीं मेरा भी विश्वास डोल रहा था। गर्भ गृह से निकल कर मैंने काशी विश्वनाथ का घंटा बचाया और फिर बाहर गली में आ गया।

'शंकर तेरी जटा से, भोले तेरी जटा से बहती है गंग धारा ..' गीत गाते गुनगुनाते हुए. एक चालीस-पैंतालीस साल का व्यक्ति गली में झाड़ू लगा रहा है। मंदिर के द्वार के सामने आते ही उसने बड़ी श्रद्धा से सर झुकाया और फिर मगन होकर झाड़ू लगाने लगा। मैं उसे जेब से सौ रुपये का नोट निकाल कर देने लगा।

'नहीं ...नहीं साहब! हमें अपने काम का पैसा मंदिर के ट्रस्ट से मिलता है। हम काम करते हैं, कमाते हैं और फिर खाते हैं। सब भोले शंकर की कृपा है' झाड़ू वाले ने कहकर आपना काम फिर शुरू कर दिया। 'अरे! रखो भैया!' मैंने उसे जबरदस्ती नोट पकड़ाने की कोशिश की।

'नहीं ...नहीं साहब! आपको देना है तो इन भीख मांगने वालों को दे दीजिए हमें नहीं...।'

मैं उस व्यक्ति की खुद्दारी पर मुस्कुराते हुए सौ का नोट एक भिखारी को दे आया। वह भिखारी भी लगभग चालीस-पैंतालीस साल का ही है। उसी पंक्ति में बैठे अधिकांश भिखारी शरीर से हृष्ट- पुष्ट हैं। मैं दस-दस का नोट उनके कटोरे में डालता जा रहा हूँ। पीछे से वही गीत कानों में गूंज रहा है 'शंकर तेरी जटा से बहती है गंग धारा...' झाड़ू वाला मस्त होकर झाड़ू लगाए जा रहा है। मेरी नजर काशी विश्वनाथ के शिखर पर चली गई भोले भंडारी की विजय पताका लहरा रही है। मैंने फिर एक बार उस झाड़ू वाले को देखा और फिर उन भिखारियों पर दृष्टि चली गयी।...मुझे भोले भंडारी का जवाब मिल गया था।

आम्ही सक्सेसफुल आहोत

नीरजा प्रिंसिपल के केबिन से निकलकर बहुत तनावग्रस्त थी प्रिंसिपल की अपेक्षाओं पर खरा उतरना कितना मुश्किल है। कितनी जी-जान से कोशिश करती है वो, चाहे विद्यार्थियों को पढ़ाना हो या कॉलेज का कोई भी सॉंस्कृतिक कार्यक्रम पर फिर भी आलोचना सुननी ही पड़ जाती। घर गृहस्थी के झंझावातों से निकलकर अपनी पहचान बनाने की जद्दोजहद में नीरजा ने नासिक में यह नौकरी की थी। उसकी डिग्री की तुलना में यह नौकरी उसके लिए छोटी थी पर कुछ नहीं से तो कुछ बेहतर यही सोचकर वह अपने मन को समझा लेती थी। कभी-कभी उसे लगता कि वह न तो घर गृहस्थी में पूरी तरह सफल है और न करियर में। उसके साथ की सहेलियां डॉक्टर बन गयीं, इंजीनियर बन गयी और वह एक छोटे से कॉलेज में पढ़ा रही है...और इस छोटे से कॉलेज में भी सुकून नहीं। यह सब सोचते हुए हाथ में फाइल पकड़े उसके कदम स्टाफ रूम की ओर मुड़ गए। पास की कक्षा से दीपा ठाणेकर का स्वर गूंजा। दीपा आईटी की टीचर है, पढ़ाई में बहुत अच्छी, छात्र बड़े ध्यान से सुनते हैं उसे।

'स्टूडेंट्स आप आईटी विषय लेकर क्या करना चाहते हो?' दीपा छात्रों से पूछ रही थी।

किसी ने उत्तर दिया 'आईटी प्रोफेशनल बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करना चाहता हूं', 'फॉरेन जाकर सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहता हूं....' सब के अलग-अलग उत्तर आ रहे थे।

'आप जो भी बनो उस काम को बहुत अच्छे से करने का ...चांगला काम करनार पाहिजेत तभी आप सक्सेसफुल होंगे। मैं चाहती तो बड़ी आईटी कंपनी में नौकरी कर लाखों कमाती पर मेरी सिचुएशन ऐसी नहीं थी। मैं ये नौकरी कर के खुश हूँ, मी मह्णते आम्ही सक्सेसफुल आहोत।'

नीरजा के कानों में दीपा ठाणेकर कर का स्वरूप स्पष्ट सुनाई पड़ रहा था पर नीरजा कुछ अनसुना करते हुए स्टाफ रूम में आकर निढाल हो कर बैठ गयी। टेबुल रखी पानी की बोतल से एक घूंट पानी पिया और मोबाइल देखने लगी। तभी मैसेंजर पर एक संदेश आया।

'हैलो मैम मैं राजीव आपका पुराना विद्यार्थी ..'

'राजीव ... !!' नीरजा ने उसकी फोटो को गौर से देखा '...अच्छा-अच्छा राजीव कश्यप ...कैसे हो?' हाल-चाल लेने के बाद नीरजा ने राजीव से पूछा 'हिन्दी पढ़ते हो या नहीं?'

'हाँ मैम पढ़ता हूँ कभी-कभी और आपको याद भी करता हूँ...सच पूछिये तो मैम! आपने जो पढ़ाया वो कभी भूला ही नहीं और इस कॉलेज से पास होने वाला हर विद्यार्थी आपको याद करता है, आपकी पहचान तो हम विद्यार्थियों के दिलों में है।'

नीरजा की आँखों से दो बूंद मोबाइल पर ही टपक गयीं और कानो में दीपा ठाणेकर की आवाज गुंजित होने लगी 'आप जो भी बनो उस काम को अच्छे से करने का...मैं ये नौकरी कर के खुश हूँ आम्ही सक्सेसफुल आहोत ...'

नीरजा की आंखे राजीव के संदेश पर टिकी थीं और उसके मन की तरंगो पर तरंगायित हो रहा था आम्ही सक्सेसफुल आहोत... हाँ मैं सफल हूँ

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
₹ 200
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

दिसंबर 2022-फरवरी 2023
प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

दिसंबर २०२२-फरवरी २०२३
प्रो. ऋषभदेव शर्मा विशेषांक के लिए आपके लेख आमंत्रित हैं।

लेख भेजें-
shodhadarsh2018@gmail.com

मोतीलाल दास

डोंगाकाटा, नंदपुर
मनोहरपुर - ८३३१०४, झारखंड
मो.९६३१३४६२७१, ७६७८५३७१७६

भरोसा

मैं आज ज्यों ही उस पार्क में पहुंचा जहां मैं रोजाना शाम को कई वर्षों से जाता रहा हूं, अब तो मेरी यह दिनचर्या में शामिल हो गया है और अक्सर मैं उसी चिर परिचित बेंच पर बैठता हूं, जहां कोई नहीं बैठता पर आज कोई बैठी दिख रही है, मेन गेट से ही वह दिख रही है। मुझे लगा कहीं वह, वही तो नहीं जिसका इंतजार मैं ३२ वर्षों से कर रहा हूं। शायद वही हो, शायद न भी हो. हो सकता है मेरी आंखो का भ्रम हो, मैं गेट पर ही अटक गया। इतने वर्षों के बाद, उसका इस तरह यहां आ जाना मुझे मुमकिन नहीं लगता। मुमकिन इसलिए भी नहीं कि इतने वर्ष बीत गए हमारे बीच कोई संवाद नहीं हुआ, न ही फोन पर और न ही सोशल मीडिया पर ही। वह तो अमेरिका चली गई थी और बिना बताए इस छोटे से शहर में कैसे, क्यों वापस आएगी। मैं बड़े पशोपेश में था। इस गेट से देखने पर मुझे तो वही लगती है. किन्तु .....

आखिर मैं वहां पहुंच ही गया, हां वह नीतू ही थी, मैं उसे बहुत चाहता था कालेज के समय से ही। मुझे अच्छी तरह पता है कि वो मुझे नहीं चाहती थी। मुझे यह भी पता है कि उसे यह नहीं मालूम कि मैं उसे चाहता रहा हूं। उसकी नजरों में मैं सिर्फ एक दोस्त था, इससे ज्यादा कुछ नहीं. मैं ज्योंहि उसके पास पहुंचा, वह खड़ी हो गई और कहने लगी 'मैं जानती थी तुम यहीं मिलोगे, इसी जगह पर। तुम आज भी यहां आते हो। पता है न तुम्हें आज से ३२ वर्ष पहले, इसी पार्क और इसी बेंच पर हमारी आखिरी मुलाकात हुई थी' बहुत सहज थी नीतू ऐसा नहीं लग रहा था कि हम इतने वर्षों बाद मिल रहे हैं। यह दिखने में थोड़ी पतली हो गई है, गालों में हल्की झुर्री आ गई है, कुछ बाल सफेद हो गए पर उसकी मुस्कान अब भी वही मोनालिसा सी है। यह मुस्कान की बात मुझे पता है, उसे नहीं।

वह लगातार मुझे घूर रही थी और मैं उससे आंखें चुरा रहा था। उसने कहा 'दरअसल मैं एक सेमिनार में दिल्ली आई थी, सोचा तुमसे मिल लूं, कुछ बातें कर लूं।' हम दोनों उस बैंच पर बैठ गए और हमारे बीच कालेज के दिनों की बात होने लगी। मैं उसे सुन रहा था बस और सुकून महसूस कर रहा था। वह लगातार बोले जा रही थी, हटात उसने घड़ी देखी और कहने लगी, 'अब देखो न समय हो गया आज फिर तुमसे बिछड़ने का' और वह खड़ी हो गई, 'आज का फ्लाईट है, अमेरिका जाने के लिए, अब समय नहीं बचा है, चलती हूं।'

मैंने कहा, 'तुम्हें और भी कुछ कहना है शायद, कह सकती हो।'

'नहीं, नहीं मुझे और क्या कहना है, बस तुमसे मिलना था, मिल ली। पता नहीं फिर कभी मुलाकात हो ना हो।' वह गेट की ओर बढ़ चली। मैं भी साथ चल पड़ा। गेट के बाहर उसकी टैक्सी खड़ी थी। गेट पहुंचने पर मैंने कहा, 'सचमुच में तुझे कुछ भी नहीं कहना है। इतनी दूर अमेरिका से तुम मुझसे सिर्फ मिलने आई हो यकीन नहीं होता।'

'यकीन करना सीखो', वह चलते चलते बोलने लगी और टैक्सी के पास पहुंच गई। दरवाजे खोल टैक्सी में बैठ गई और अब भी मुझे घुरे जा रही थी।

मैंने कहा 'कैसे यकीन कर लूं, तुम्हारी आंखें तो कुछ और ही कह रही है।'

'वाह, तुम तो आंखों को कब से पढ़ने लगे' कहते हुए अपने बैग से एक लिफाफा निकाली और मुझे थमाती हुई कहने लगी, 'चलो यकीन दिलाती हूं कि मुझे तुमसे कुछ भी नहीं कहना है। बस तुम पर मुझे भरोसा है। यह लिफाफा मेरे जाने के बाद खोलना, जो तुमसे नहीं कह सकती, वो इस लिफाफे में बंद है। बस मेरी विनती है कि मेरे अमेरिका पहुंचने के बाद ही तुम इसे पढ़ना। बस यही भरोसा कायम रखना' कहती हुई वह मुझे लिफाफा थमा गई और टैक्सी चल पड़ी।

मैं दूर तक टैक्सी को जाता हुआ देखता रहा और वह एक धूल के गुब्बारे के पीछे कहीं गुम हो गई।

दूसरे दिन जब मुझे यकीन हो गया कि वह अमेरिका पहुंच गई होगी, मैंने लिफाफा खोला, एक पत्र बाहर निकला आया, मैंने पढ़ना शुरू किया जिसमें कुछ शब्द लिखा मिला कि 'मुझे तुम पर पहले भी भरोसा था अब भी है, मुझे कैंसर है, चंद दिनों की मेहमान हूं, बस मेरे अस्थि कलश को उसी गंगा में बहा देना, जिस गंगा किनारे हम पहले घूमते थे।'

तभी बहुत जोर से हवा चली जो उस कागज को उड़ा ले गया और साथ में जोरों की बरसात होने लगी। सबकुछ धूल गया।

डरपोक

ठक... ठक... ठक....

वह दरवाजा पिटती है। जब दरवाजा नहीं खुलता तो फिर वह दरवाजा पिटती है।

ठक... ठक... ठक... अब भी दरवाजा नहीं खुलता, वह घबरा जाती है, वह और जोर से दरवाजा पिटती है।

ठक... ठक... ठाक... ठक... ठक... ठाक... फिरभी दरवाजा नहीं खुलता, वह परेशान हो जाती है, माथे पे सिकन और पसीने आ जाते है, बहुत ही घबरा जाती है वह। उसके समझ में नहीं आता कि आज ही मां दरवाजा क्यों नहीं खोल रही है। इसके पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ, बल्कि मां को तो पता रहता है कब किस समय उनकी प्यारी नन्ही सी बेटी स्कूल से घर वापस आने वाली है और मां इसकी प्रतीक्षा करती रहती है। जैसे ही स्कूल बस का हॉर्न बजता है, वह दरवाजे खोल कर खड़ी हो जाती है। लेकिन आज ऐसा क्या हो गया कि मम्मी न दरवाजे पर है और न दरवाजा पीटने पर खोल ही रही है। पिंकी बहुत घबरा जा रही है। दरवाजा बंद और घर की खामोशी पर पिंकी की आशंका बढ़ती चली जा रही है। वह अब खिड़की की ओर बढ़ गई, पर वह भी बंद मिली, वह कोशिश की खोलने की पर खिड़की नहीं खुली। वह अंदर देखने की हर कोशिश की पर कुछ भी नहीं देख सकी। वह पूरी तरह से निराश हो गई, कई तरह की भय की आशंका घर कर गई। किसी अनहोनी से वह आशंकित हो गई, बहुत उदास हो गई वह। इतना कुछ होने के बाद भी इस सात वर्षीय पिंकी न रोई न हिम्मत हारी। वह चल पड़ी सामने पुलिस स्टेशन की ओर।

'सर... सर..., सर जरा देखिए न सर, मम्मी मेरे घर का दरवाजा नहीं खोल रही है, दरवाजा अंदर से बंद है और खिड़की भी बंद है', इंस्पेक्टर की ओर पिंकी एक आश से देखती है। 'सर, कुछ मदद करिए, मुझे घर जाना है।' बच्ची की बात सुन इंस्पेक्टर अपने जवानों को लेकर पिंकी के घर पहुंचा। पुलिस ने भी कोशिश की, दरवाजा पिटा गया पर वह नहीं खुला, खिड़की भी बंद पाई गई। अंत में दरवाजा तोड़ा गया, ज्यों ही दरवाजा टूटा, पुलिस पिंकी के साथ अंदर गई, पहला ड्राइंग रूम खाली मिला तो वे अंदर बेडरूम गए तो यहां का दृश्य भयानक था, पिंकी की मम्मी पंखे से लटकती पाई गई। पिंकी सहित पुलिस हैरान हो गई। पिंकी को तो मानो सांप सूंघ गया। वह बेहोश हो गई। पुलिस छानबीन करने लगी, कमरे की तलाशी ली गई तो उन्हें टेबल पर एक खत मिला, वह सुसाइड नोट था। पुलिस समझ गई यह आत्महत्या का मामला है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया और पिंकी को अस्पताल पहुंचाया गया, वह अब भी बेहोश थी। पुलिस ने पिंकी के पिता को खबर कर दी।

पिंकी के पिता के घर आते ही पुलिस उसे थाने ले जाती है। पूछताछ करती है। सुसाइड नोट उसे देती है और पूछती है कि 'आपको क्या कहना है।' हतप्रभ पति अपनी पत्नी की सुसाइड नोट पढ़कर भरभरा कर रो उठता है। खुद पर भी झल्लाहट होती है कि यह सब पुलिस को क्यों नहीं पहले ही कह दिया, कम से कम आज पत्नी जीवित होती और उसके साथ विगत दिनों में हुए रेप कांड का खुलासा भी हो जाता। सचमुच में समाज के डर ने मुझे चुप करा दिया। अब सुसाइड नोट मुझे पल पल जीने नहीं देगा कि मैं कितना डरपोक था।

मां के पास

बच्चा बोल उठा 'पापा' .....'पापा'

पिता ने कहा 'हां...बेटे, कुछ चाहिए क्या?'

बेटा- 'हां पापा... मां चाहिए'

पिता- 'तो क्या मैं दूसरी शादी कर लूं?'

बेटा- 'नहीं पापा.. मैं यह नहीं कह सकता'

पिता- 'तो बेटे मैं क्या करूं....तुम्हें तो पता है...'

बेटा- 'आप एक काम कीजिए'

पिता- 'क्या'

बेटा- 'आप मेरे लिए भी कोरोना ला दीजिए, मुझे मां के पास जाना है'

इतना सुनते ही पिता अपने बेटे को बाहों में भरकर फफक फफक कर रो पड़ा।

औकात

'अरी सुनती भी हो मेरे मोजे मिल नहीं रहे हैं और तुम हो कि रसोई में घुसी पड़ी हो' रमेश झल्ला पड़ा घ्यहां आओ और खोज कर दो, ऑफिस जाने में देरी हो रही है।'

'वहीं कहीं रखे होगें, ढूंढ लो प्लीज, मैं आपकी टिफिन तैयार कर रहीं हूं' प्रिया ने रसोई से ही उत्तर दी।

'तुम भी न, कोई सामान ठीक से रखती नहीं हो और मुझे ही ढूंढना पड़ता है' कहते हुए रमेश मोजे ढूंढने लगा। इतने में प्रिया टिफिन तैयार कर सामने आई और मोजे ढूंढ कर 'यह रहा आपके मोजे, यहीं तो थी और जनाब, घर को सर पे उठा रहे हैं' कहती हुई, रमेश के गालों को संवार दी।

'सच में प्रिया, तुम हो तो यह घर, घर जैसा लगता है। तुम कितना ध्यान रखती हो मेरा और इस घर का, ठीक मेरी मां की तरह, है ना' रमेश ने प्रिया को बांहों में भर

लिया।
'अब छोड़ो भी, इतना दुलार ठीक नहीं।' प्रिया बांहों से मुक्त होते हुए बोली 'आप भी न कभी कभी बच्चे बन जाते हो, आप कब सयाना होगे और कबतक मुझ पर निर्भर रहोगे. कुछ काम खुद भी कर लिया करो।'
'मैं तो ऐसा ही हूं, ऐसा ही रहूंगा, तुम हो ना मुझे देखभाल करने वाली' रमेश मुस्कुराते हुए कहने लगा 'जानती हो, मैं बचपन से ही ऐसा ही हूं और मेरी मां थी न, वो मेरा पूरा ख्याल रखती थी। सबकुछ वही करती थी, मुझे कुछ भी नहीं करना पड़ता था। अब तुम आ गई हो तो मैं कैसे सुधर जाऊं, तुम तो सबकुछ देख ही रही हो।'
'अच्छा तो आपको मां ने बिगाड़ दिया है और अब आप मुझसे वही उम्मीद पाल रखे हैं' प्रिया को लगा यही सही वक्त है कुछ बातें कर ली जाए अपने बारे में और वह कह उठी 'यही तो दिक्कत है तुम लड़कों के साथ, तुमलोगों को बचपन से बड़े दुलार के साथ पाला जाता है, जबकि हम लड़कियों को...'
रमेश एकटक प्रिया को देखने लगा, 'नहीं....नहीं.... तुम क्या कहना चाहती हो?'
'अरे आप गुस्सा मत हो जाइए, मैं कुछ भी तो नहीं कह रही। मैं तो बस इतना कह रही हूं कि आपको मांजी ने, अपना काम भी नहीं करने देती थी जबकि आपको पता है... मैं जब भी अपनी मां से अपने लिए कुछ करने को कहती थी न तब मेरी मां कभी भी खुद नहीं कि बल्कि मुझसे करवाई ऐसा कहती हुई कि लड़की को हर काम में पारंगत होना चाहिए, यही स्त्री धर्म है, जबकि मेरे भाई का सारा काम वह कर देती थी।' रमेश हतप्रभ अपनी पत्नी को देखने लगा, माथे कई शिकन उभर आए 'मतलब... क्या है तुम्हारा मतलब. ..अब स्त्री विमर्श लेकर मत बैठ जाना। यह तो सदियों से होता रहा है, स्त्री धर्म तो यही है ना?'
'हां...हां... स्त्री धर्म! और पुरुष धर्म, स्त्रियों को पैर की जूती समझना' प्रिया अब झल्ला उठी, 'जब हम स्त्रियां इस मानसिकता के विरूद्ध कुछ बोलने लगो तो, तुम पुरुष स्त्री धर्म के हवाले कर देते हो और चाहते हो कि पुरुष की मनमानी चलता रहे, यही है ना तुम्हारी...'
प्रिया आवेश में कह उठी 'जब हम उन सदियों की परंपरा से निजात पाना चाहते हैं तो तुमलोग ना... हमारे पंख काट देते हो। हम तो ज्यादा कुछ नहीं सिर्फ हक चाहते बराबरी का, औरत और मर्दों के बीच....'
रमेश तिलमिला उठा और एक जोरदार झापड़ मार दिया प्रिया के गालों पर 'तुम अपनी औकात में रहो समझी' कहते हुए दन से दरवाजा बंद कर दिया और निकल पड़ा अपने ऑफिस को।
प्रिया सुबक सुबक कर रोने लगी।

आम आदमी

बात एक रोज की है। उस रोज मौसम खुशगवार था पर गर्मी भी हावी थी। इसी रोज की शाम को इस महानगर के पांच सितारा होटल के लाउंज में लेखकों का जमावड़ा था। कोई खरबपति साहित्य के आशिक ने यह आयोजन किया था। जब मुझे यह खबर मिली तो मेरे मन में आया कि इन महान लेखकों को सुना जाए और सीखा जाए कुछ गुर महान लेखक बनने की। मैं भी वहां पहुंच गया। पहुंच कर देखा कि सारे लेखक लेखिका आपस में जाम टकराते हुए अपनी अपनी उपलब्धियों का बखान करते फिर रहे थे। मैं अदना सा लेखक, करीब करीब सभी को पहचानता था। उनमें से कोई नोबल पुरुस्कृत थे, कोई बुकर, कोई ज्ञानपीठ तो कोई साहित्य अकादमी से सम्मानित। इन सबके बावजूद सभी अपने काम की तारीफ किए जा रहे थे। मुझे कोफ्त हो रही थी कि मैं यहां क्यों आ गया, यहां कोई गंभीर विचार विमर्श देखने को नहीं मिल रहा था। यही सब सोचते हुए कि मेरा यहां आना बेकार है, दरवाजे की ओर बढ़ा। तभी मेरे कानों में एक आवाज गूंजी। कोई एक लेखक कह रहा था 'मेरे लेखन के सारे साहित्य में बस आम आदमी के संघर्ष और उनके चित्रण होते हैं' मैंने मुड़कर देखा वह बुकर पुरस्कृत लेखक था।
'मेरे लेखन में तो किसानों के दर्द से साहित्य पटे पड़े हैं' नोबल पुरस्कार लेखक कह उठा।
ज्ञानपीठ प्राप्त लेखिका ने कहा 'स्त्रियों की दुर्दशा और विमर्श पर मेरी कलम चलती है।'
मैं हैरान होकर उन्हें देखने लगा और सोचने लगा कि इनकी लिखी किताबों को कितने मजदूर, किसान, घरेलू स्त्रियों ने पढ़ी है? मैंने तो किसी आम आदमी को इनकी पुस्तकें पढ़ते कभी नहीं सुना। जब ये लेखक आम आदमी के लिए लिखते हैं तो इनकी पुस्तकें उन आम आदमियों के पास न पहुंच कर पुस्तकालय व अकादमी के पास क्योंकर है। इसका उत्तर न उनके पास था न मेरे पास और हम सबका आम आदमी को इनकी जरूरत ही नहीं थी।

डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा

विद्योचित लाइब्रेरियन
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, नवा रायपुर (छत्तीसगढ़)
मोबा. ९८२७९१४८८८

वर्ल्ड रिकॉर्ड

'सर, हमने एक जबरदस्त प्रस्ताव तैयार किया है जिसमें आपकी अगुवाई मे पूरे राज्य में एक ही दिन में एक करोड़ पौधों का रोपण कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में राज्य का नाम दर्ज किया जा सकता है।' वन विभाग के प्रमुख सचिव ने मुख्यमंत्री जी से कहा।
'पी.एस. साहब, पिछले साल भी पूर्व मुख्यमंत्री की अगुवाई में आप लोगों के द्वारा कुछ रिकॉर्ड बनाया गया था न ?' मुख्यमंत्री जी ने पूछा।
'यस सर, पिछले साल पचास लाख पौधों का रोपण कर लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में राज्य का नाम दर्ज कराया गया था।' प्रमुख सचिव अपने बगल में खड़े सचिव की ओर देखने लगे, तो उन्होंने बताया।
'अच्छा, आपको कुछ पता है कि उनमें से कितने पौधे आज तक बचे होंगे?' मुख्यमंत्री जी ने प्रश्न किया।
अब किसी को कुछ भी कहते न सूझा। उन्हें चुप देख मुख्यमंत्री जी बोले, 'वैसे पी.एस. साहब, हम आपको बताना चाहते हैं इन सबमें हमारी कोई रूचि नहीं। रही बात वृक्षारोपण की, तो मैं समझता हूँ कि वृक्षारोपण से ज्यादा महत्वपूर्ण उनका संरक्षण है। जाइए, पहले गणना करवाइये कि पिछले सालों में लगाए गए पौधों में से अब तक कितने बचे हैं? यदि २५ प्रतिशत पौधे भी बचे होते, तो आज हमारा राज्य देश का सर्वाधिक वनाच्छादित वाला राज्य होता।'
'जी सर। आप सही कह रहे हैं।' किसी तरह प्रमुख सचिव ने कहा।
लौटते समय सबके चेहरे लटके हुए थे।

अपनापन

'आज सुबह जब मैं आज मार्केट के लिए निकल रहा था, तब तो हमारे दोनों भानजों में घमासान लड़ाई हो रही थी और अभी एक साथ बड़े मजे से खाना खा रहे हैं। आखिर ये चमत्कार हुआ कैसे?' आश्चर्यचकित रमेश ने पूछा।
'साले साहब, हमने अपने घर में एक नियम बना रखा है, जब भी कोई वाद-विवाद हो, तो भोजन के समय तक सुलह भी हो जाए, वरना खाना नहीं मिलेगा।' जीजाजी ने मुस्कुराते हुए बताया।
'अरे वाह, ये तो बहुत ही अच्छी बात है जीजाजी। यदि कभी आपके और दीदी के बीच कुछ अनबन हो, तो भी क्या यही नियम लागू होता है।' रमेश ने मजाकिया अंदाज में पूछा।
'बिल्कुल, वैसे तो मैं तुम्हारी दीदी से कभी पंगा लेने की जुर्रत नहीं करता, फिर भी कभी कुछ अनबन हो जाती है, तो बहुधा मैं ही भोजन से पहले माफी मांग कर लफड़ा खत्म कर देता हूँ।' जीजा जी ने हँसते हुए कहा।
दीदी कनखियों से देखकर मुसकरा रही थीं।

माँ

'प्रभु, मेरी पंजी के मुताबिक इस आत्मा ने अपने पूरे जीवनकाल में एक बार भी भगवान का नाम नहीं लिया है।' चित्रगुप्त ने यमराज को बताया।
'क्या, चित्रगुप्त की इस बात से तुम सहमत हो?' यमराज ने उससे पूछा।
'हे देव, पिताजी की मृत्यु मेरे जन्म के सालभर बाद ही एक दुर्घटना में हो गई थी। जब मैंने आँखें खोली, तो सामने मुझे माँ ही दिखी। सोते-जागते, उठते-बैठते वही दिखने लगी। माँ के आगे मुझे कोई दूसरा भगवान दिखा ही नहीं। जब भी मैं माँ कहता, लगता कि भगवान का नाम ले रहा हूँ।' उसने कहा।
नम आँखों से चित्रगुप्त और यमराज उस दिव्यात्मा के सामने नतमस्तक थे।

क्वालिटी टाइम

'दादा जी, आज जबकि संयुक्त परिवार लगातार कम होते जा रहे हैं, वैसे परिवेश में एक ही छत के नीचे चार पीढ़ी के ४५ लोगों का आपका परिवार एक मिशाल ही है। आपके परिवार के सभी सदस्यों के मध्य निहित इस प्रेमभाव का राज क्या है?' पत्रकार ने पूछा।
'बेटा, इसमें राज की कोई बात ही नहीं है। हमारे परिवार के सभी सदस्य ब्रेकफास्ट सुबह सात और डिनर रात को ठीक नौ बजे एक साथ बैठकर करते हैं। डिनर के पहले सभी अपना स्मार्टफोन मेरे पास छोड़ जाते हैं, जो उन्हें अगले दिन सुबह ब्रेकफास्ट के बाद मिल जाता है। इससे हम सभी आपस में एक दूसरे को क्वालिटी टाइम दे सकते हैं।' घर के मुखिया ने बताया।

राशिफल

'राम-राम पंडित जी।'
'राम-राम एडिटर साहेब।'
'पंडित जी, आज मैंने आपको इसलिए फोन लगाया है क्योंकि आपने कल के अंक के लिए अभी तक राशिफल नहीं भेजा है।'
'एडिटर महोदय, हमारे पिताजी की तबीयत बहुत खराब होने के कारण मैं अपने गाँव आ गया हूँ। जल्दबाजी में अपना लैपटॉप लाना भूल गया। इसलिए मैं आपको ईमेल नहीं कर पाऊँगा। कृपया आप एक हफ्ते पहले के किसी भी दिन का राशिफल उठाकर कल के अंक में छाप दीजिएगा।'
'परंतु पंडित जी, ये तो गलत होगा न हमारे लाखों पाठकों के साथ...'
'देखिए एडिटर साहेब, धरती की आबादी छह अरब से भी ज्यादा हो गई है। राशि हैं कुल बारह। मतलब ये हुआ कि एक-एक राशि पचास करोड़ से ज्यादा लोगों को कव्हर करती है। सौ बात की एक बात कहूँ, तो राशिफल किसी न किसी पर तो फिट बैठेगा ही न। और फिर मैं लैपटॉप लाया होता, तो खुद ही आपको कुछ भी कहपी-पेस्ट करके भेज देता। पहले भी मैंने कई बार ऐसा किया है। अब आप ज्यादा मत सोचिए। जल्दी से कॉपी-पेस्ट कर डालिए। रखता हूँ फोन। गुड नाईट।'
संपादक महोदय सोच में पड़ गए, 'जब कॉपी-पेस्ट ही करनी है तो फिर इस पंडित की जरूरत ही क्या है?'

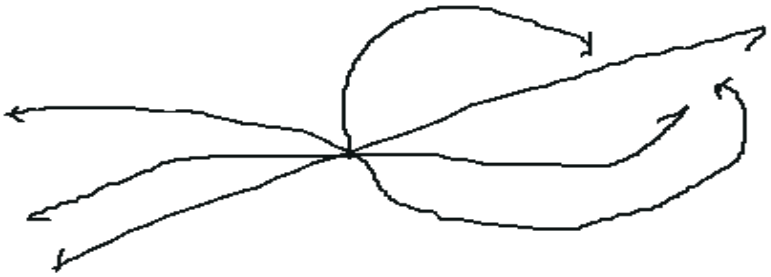

विनोद कुमार विक्की
(स्वतंत्र लेखक सह व्यंग्यकार)
द्वारा स्व. ओमप्रकाश गुप्ता
(सुमित किराना स्टोर), ग्रा पो.-महेशखूंट बाजार,
जिला- खगड़िया ८५१२१३(बिहार) ९११३४७३१६७
E-mail : vinodvicky5382@gmail.com

साहेब को सब पता है!

जिला शिक्षा पदाधिकारी के औचक निरीक्षण से विद्यालय के शिक्षक समुदाय में खलबली मच गई। निरीक्षण के दौरान कक्षा पाँच में उपस्थित छात्रों से जाँच टीम ने योजनाओं से संबंधित कई प्रश्न पूछा।

-बच्चों आपलोगों को पोशाक राशि मिली?

'जी मिल गई है सर...'छात्रों की ओर से सामुहिक उत्तर मिला।

'साईकिल मिला..... मध्याह्न भोजन सही से मिलता है या नहीं.....अंडा, राजमा, खीर आदि कब कब दिए जाते है...।'

छात्रों की ओर से मिली जुली प्रतिक्रियाओं के साथ जवाब मिलता रहा। थोड़ी देर तक निरीक्षण करने के बाद खानापूर्ति के पश्चात पदाधिकारी विद्यालय से जाने लगे।

पदाधिकारियों के बाहर निकलते ही मन्नू अपने सहपाठी दीपु से बोला 'ये क्या दीपू... साहब ने हम से सभी चीज के बारे में पूछा लेकिन मूल चीज तो पूछना भूल ही गए?'

दीपू (आश्चर्य से) -वह क्या?

मन्नू- अरे पढाई लिखाई के बारे में पूछा ही नहीं... चलो हम उन्हें जाकर बता देते हैं कि स्कूल में पढ़ाई तो सही से होती ही नहीं!

'अरे बेवकूफ वो साहेब हैं उन्हें सब पता है...!' दीपू ने मन्नू को समझाते हुए कहा।

थोड़ी देर शांत रहने के बाद मन्नू बोला- सही कह रहे हो दीपू, वो साहब हैं उन्हें सब पता होगा...नहीं तो क्या उनके बच्चे भी सरकारी स्कूल में हमारे साथ पढाई नहीं करते! फिर दीपू और मन्नू 'कौवा उड़ मैना उड़' खेलने में लग गए।

खुशी

वृद्धाश्रम में एक माँ आज काफी खुश थी। खुशी इस बात की नहीं कि उसके बेटे ने नई साड़ी या टूटा हुआ चश्मा बनवाकर दिया था बल्कि खुशी तो इस बात की थी कि महीनो बाद उसका बेटा उससे मिलने आया था। पूरे दस मिनट उसके पास बैठकर उसकी खैरियत के बारे में पूछा था। मोबाइल पर उसके साथ दर्जनो सेल्फी ली थी। वह बेटे के आगमन की सूचना वृद्धाश्रम की अन्य साथियों से खुशी खुशी जाहिर कर रही थी।

'सच ताई काफी महीनों बाद आज तेरा लड़का तुझसे मिलने आया था। क्या आज तुम्हारा या तुम्हारे बेटे का बर्थ डे है!' स्वीपर मनोरमा मुसकुराते हुए पूछ बैठी।

अरे नहीं रे आज वो... क्या कहते हैं... हाँ... मदर डे है न! माँ ने गंभीर होकर कहा।

महादेव की कृपा

'माँ मुझे सुबह के चार बजे जगा देना कल शिवरात्रि है' जमीन पर दरी बिछाते हुए छोटू बोला।

छोटू की दमा पीड़ित माँ खांसते हुए बोली- तुझे क्या व्रत करना है शिवरात्रि का... वैसे भी हम दुखियारों पर महादेवजी कौन सा मेहरबान होने वाले... सात दिनों से बुखार और दमा की वजह से काम पर भी नहीं जा पा रही हूँ..., (खौं खौं)... दवा तो दूर अब तो राशन के लिए भी पैसे नहीं बचे हैं घर में !

माँ तुम ना बहस मत करो सुबह जल्दी उठना है ... और हाँ एक खाली गैलन भी रख देना सुबह गंगा जी भी जाना है। कहकर छोटू दूसरी तरफ मुँह करके सो गया।

अगली सुबह माँ के जगने से पहले ही छोटू उठा और खाली गैलन एवं एक थैला लेकर नदी की ओर चल पड़ा। गंगा स्नान कर गैलन में गंगा जल भर लिया। रास्ते में बाग-बगीचे तथा सड़कों के किनारे स्थित झाड़ियों से धतूरा कनेर बेल पत्र आदि को झोले में भरकर उजाला होते होते शिव मंदिर पहुँच गया। बरगद के पत्तों से बने छोटे छोटे दोनों में फूल-पत्र एवं गंगाजल को दुकान की तरह सजा कर छोटू मंदिर की सीढ़ी के पास पालथी मारकर बैठ गया ।

'पाँच रुपए में फूल पत्ती गंगाजल ले लो' वह जोर जोर से आवाज लगाने लगा। शाम तक उसके सारे फूल-पत्र बिक गए। शाम में जैसे ही घर में उसने कदम रखा कि माँ की गुस्से से भरी ध्वनि सुनाई दी- अरे कहाँ रह गया था सारा दिन...। मैं तो तंग आ चुकी हूँ तुझसे।...अच्छा हो कि महादेव मुझे उठा ही ले, तुझसे और बिमारी दोनो से मुक्ति मिल जाएगी।

इतना सुन छोटू दौड़कर माँ के पास पहुँचा और उनकी हाथों को पकड़ते हुए बोला- माँ मुझसे तो नही लेकिन तुझे बिमारी से मुक्ति जरूर मिलेगी। ये ले तेरे लिए दवाई लेकर आया हूँ और साथ में सात दिनों का राशन भी। और ये कुछ पैसे बचे हैं तू रख इसे। कहकर थैला और सत्तर-अस्सी रूपए का सिक्का माँ को थमा दिया।

माँ आश्चर्य से पूछ बैठी-अरे यह सब कैसे और कहाँ से?

सब महादेव की कृपा है माँ कहते हुए छोटू ने शिवरात्रि में सुबह जगने और शाम तक घर से बाहर रहने का सारा माजरा बताया।

छोटू की बात सुनकर माँ फफक पड़ी। छोटू को सीने से लगाते हुए बोली- सच में महादेव की कृपा है रे...!

लॉकडाउन

'तुम लोगों को जरा सा भी बात समझ में नहीं आता है का जी, कि लॉकडाउन चल रहा है' बोलते हुए चौराहा पर खड़े सिपाही ने दीनू की पीठ पर दनादन लाठियाँ बरसा दी। दीनू दोनों हाथों से पीठ और लाठी के मेल को रोकने का असफल प्रयास कर रहा था।

चलो फूटो यहाँ से...घर से बाहर निकले तो सोट देंगे। दूसरे सिपाही ने दीनू को हड़काया।

पुलिस की सख्ती देख दीनू को ना चाहते हुए भी घर की ओर वापस लौटना पड़ा।

सरकार ने इन लोगों की जान बचाने के लिए लॉकडाउन लगाया है, हमलोग अपनी जान को खतरे में डालकर ड्यूटी कर रहे हैं और ये साहब लोग घरों में सुरक्षित रहने की बजाय सड़कों पर मटरगश्ती करने में लगे रहते हैं।

मौजूद सिपाही आपस में बड़बड़ाने लगे।

उनकी बात सुनकर दीनू पलट कर धीरे से बोला-साहेब घर में रहना और सुरक्षित रहना तब तक ही अच्छा लगता है जब तक बच्चों का पेट और रसोई में राशन भरा हुआ हो...हम तो दिहाड़ी मजदूर हैं सर! रोज कुआँ खोदकर पानी पीने के लिए मशक्कत करना पड़ता है।

'तो क्या हम सब अंबानी और बिल गेट्स है! लॉकडाउन के कारण सरकार का अरबों रुपए का नुकसान हो रहा है। देश दुनिया की तनिक भी खबर है तुम्हें! कोरोना का नया भेरिएंट पूरे विश्व में फैल चुका है। और तुम गलथेथरी कर रहे हो, जरा सा भी अंदाज है तुम्हें कि कितना खतरनाक है ये महामारी!' बैरिकेडिंग के पास खड़ा एक जवान उबलते हुए फूट पड़ा।

'साहेब, कोरोना का तो पता नहीं... किंतु इतना जरूर जानते है कि भूख और गरीबी से बढ़कर कोई महामारी नहीं है' इतना बोल पीठ सहलाता दीनू धीमे कदमों से घर की ओर चल दिया।

शुभ-अशुभ

रमेश के पड़ोसी तिवारी जी का देहांत हो गया। ५५ वर्षीय तिवारी जी का अचानक हृदय गति रुक जाने से पूरा मुहल्ला आहत और स्तब्ध था। रमेश के परिवार का तिवारी जी के परिवार से काफी प्रगाढ़ संबंध था।

रमेश को आज ही पीसीएस का इंटरव्यू देने दिल्ली जाना था फलतः समयाभाव के कारण तिवारी जी का अंतिम दर्शन एवं शव यात्रा में शामिल होने की दिली इच्छा होने के बावजूद उसे अपना फाइल व कागजात तैयार करना पड़ रहा था। थोड़ी ही देर में रमेश का छोटा भाई राजेश दौड़ता हुआ आया और बाहर दरवाजे से चिल्लाया 'माँ जल्दी चलो अब अर्थी उठने वाली है...सभी लोग आ..।'

अभी वो अपनी बात पुरी करता कि अंदर से माँ की तेज आवाज आई 'ठीक है ठीक है अब घर के अंदर मत घुस जाना ...छूतका वाले घर से बगैर शुद्ध हुए अपने घर में प्रवेश करना अशुभ होता है...आ रही हूँ बाहर ही रुक।'

बैग पैक कर रहे रमेश को माँ का यह व्यवहार थोड़ा अटपटा सा लगा।

'ठीक है माँ चलता हूँ ट्रेन का समय हो रहा है ...' बोलकर रमेश अपना बैग उठाने लगा।

माँ तेजी से बाहर आई और रमेश से बोली 'थोड़ी देर रुक जा बेटा...अर्थी तो उठने दो।'

'माँ मुझे देर हो रही है... वैसे भी तुम और राजेश तो जा ही रहे ना तिवारी जी के घर पर...प्रभु उनकी आत्मा को शांति दे...।' रमेश ने माँ को अपनी विवशता जताई।

'अरे पागल तुम्हें कौन सा शव यात्रा में शामिल होने को कह रही हूँ...बस अर्थी व शव के दर्शनकर 'शिव-शिव' का उच्चारण करते हुए स्टेशन की ओर निकल जाना। मुर्दा दर्शन कर बाहर निकलने से यात्रा शुभ होती है और हर कार्य सफल होता है...।' माँ ने रमेश को समझाते हुए कहा।

माँ की बात सुन कर रमेश अवाक रह गया कि जो माँ थोड़ी देर पहले शव वाले घर से बुलाने आए छोटे भाई राजेश का बगैर स्नान किए घर में प्रवेश को अशुभ मान रही थी वही माँ शव दर्शन के पश्चात यात्रा करने को शुभ मानने का दावा कर रही है।

महेश कुमार केशरी

मेघदूत मार्केट फुसरो, बोकारो (झारखंड)
पिन-८२६१४४, मो-६०३१६६१८७५
E-mail:keshrimahesh322@gmail.com

छोटे लोग

सुदर्शन बाबू बहुत ही जातीय शुद्धता का दँभ भरने वाले और धार्मिक किस्म के आदमी थें। उनको उनका ही धर्म सर्वोत्ष्ट लगता था। लेकिन आज पासा पलट गया था स नदीम उनका पड़ौसी था, और उसको वो विधर्मी ही मानते थें और वो ठीक ही तो मानते थे शुरू से ही उनको ये सीख मिली थी कि ये लोग आक्राँता हैं हिंदुस्तान को लूटने वाले। हिंदूओं से नफरत करने वाले लेकिन आज उनका ये भ्रम जाता रहा था, कि नदीम एक विधर्मी है। उनको याद है वो रात कयामत की रात थी वो। शहर में इतनी बारिश और तूफान था कि हाईवे और सारे रास्ते बँद थे। फोन कहीं लग नहीं रहा था। शहर में बिजली का नामों-निशाँ नहीं था और उनकी पत्नी की तबीयत अचानक से बिगड़ने लगी थी। तब नदीम ही था, जो मदद करने को आगे आया था। सात-आठ बजे तक मौसम बिल्कुल ही साफ था और साढ़े आठ बजे के आसपास ही राजेश्वरी देवी की तबीयत अचानक से बिगड़ने लगी थी। तब सुदर्शन बाबू ने जाति सेना के अजेय सिपाहियों को मदद के लिये बुलाया था, लेकिन एक तो खराब मौसम और दूसरे रात का वक्त होने के कारण लोगों ने हाथ खड़े कर लिये थें। रिश्तेदारों तक ने आने से मना कर दिया था, तब नदीम ने ही पहल करते हुए कहा था- 'भैया, आपके घर से भौजी की कराहने की आवाजें लगातार आ रहीं थीं। सुनकर रहा नहीं गया तो देखने चला आया। भौजी की तबीयत ठीक तो है ना, ना हो तो भौजी को लेकर अस्पताल चला जाये।'

'इस तूफानी और बरसाती रात में!' सुदर्शन बाबू को जैसे कोई फरिश्ता आवाज लगा रहा था। सुदर्शन बाबू अपलक नदीम को लैंप की रौशनी में निहारते रह गये थें। उनका कौतूक बढ़ता ही जा रहा था।

'अरे, हाँ भाई। हमारा शरीर खेतों में खटा हुआ है। पक्का किसान रहा हूँ। घर में दसियों बीघे खेत थें। भाईयों ने जब बँटवारे की बात की तो सबकुछ उनको ही सौंपकर इधर शहर में आ गया। और ऑटो चलाने लगा। गाँव में गिरधारी चौधरी का मैं चेला था। कुछ दँगल-वँगल मारने का ऐसा शौक चर्राया की फिर, गिरधारी चौधरी का चेला होकर रह गया। गिरधारी चौधरी हमारे पड़ौसी थें। लँगोट और कौल के बड़े पक्के आदमी थें। उनका ही शार्गिद हूँ। गिरधारी चौधरी जब तक जिंदा रहे। एक ही बात कहते रहे। अपने से हमेशा कमजोर लोगों की मदद करना। कभी किसी सताये हुए को मत सताना। बजरंग बली हमेशा तुम्हारी रक्षा करेंगें। अब बताईये की आप हमारे पड़ौसी हैं कि नहीं। माना कि आज कयामत की रात है। बाबजूद इसके भौजी का कराहना हमें बहुत दुःख पहुँचा रहा है। चलिये देरी मत कीजिये। कहीं कोई अनिष्ट ना हो जाये।'

और, उस मूसलाधार बारिश और तूफानी रात में नदीम राजेश्वरी देवी को अस्पताल पहुँचा आया था। और सुदर्शन बाबू किसी अनिष्ट की आशंका से घिरे कॉरीडार में चहलकदमी कर रहे थें।

तभी रोहित दौड़ता हुआ, सुदर्शन बाबू के पास आया और बोला -'अस्पताल में माँ के बल्ड ग्रुप का खून ही नहीं है। डॉक्टर ने कहा है कि शहर के किसी अस्पताल में माँ के ग्रुप का खून नहीं मिल रहा है। अगर खून ना मिला तो माँ बचेगी नहीं। लेकिन एक डॉक्टर ने और कही है। नदीम चाचा का ब्लड ग्रुप माँ के बल्ड ग्रुप से मैच करता है। राजीव भैया पूछ रहें है कि क्या माँ को नदीम चाचा का खून दिया जा सकता है या नहीं ? नदीम चाचा भी बहुत डरे हुए हैं। कह रहें थे कि कहाँ आप पंड़ित और कहाँ हम मलेच्छ। पंड़ित जी मानेंगें नहीं मैं जानता हूँ।'

'कहाँ है नदीम?' सुदर्शन बाबू कॉरीडोर से अस्पताल के भीतर भागे।

देखा डॉक्टर ने नदीम का खून स्लाइन से लेना शुरू कर दिया था। धीरे-धीरे खून की बूँदें राजेश्वरी देवी में जिंदगी भर रहीं थीं। दूसरी बेड़ पर नदीम लेटे हुए थे। और अस्पताल की छत को घूरे जा रहे थे, सुदर्शन बाबू को देखा तो जैसे सफाई देते हुए बोले -'सुदर्शन बाबू, आज मैं आज बहुत शर्मिंदा हूँ। कि हमारे इस शहर में किसी ऊँची जाति का ब्लड ग्रुप का खून मुहैया नहीं था। नहीं तो ये मलेच्छ भौजी को अशुद्ध ना करता।

सुदर्शन बाबू आप कहाँ उच्च-कुलीन ब्राह्मण। और मैं कहाँ मलेच्छ। आप मुझे माफ कर देना भाई। इस गलती के लिये।' और नदीम मियाँ ने अपने दोनों हाथ जोड़ दिये थें।

सुदर्शन बाबू का बहुत देर से जब्त किया हुआ बाँध जैसे टूट कर भरभराकर बहने लगा -'बोले, आज एक मलेच्छ ने मुझे खरीद लिया। सौ जन्म भी मैं अगर ले लूँ तब भी तुम्हारा उपकार कभी नहीं चुका सकता। तुम आदमी नहीं आदमी के रूप में फरिश्ते हो फरिश्ते। अगर मेरी देह की खाल तुम्हारे जूते बनाने के काम भी आ जाये तो मैं अपने आप को धन्य समझूँगा।'

'भैया काहे शर्मिंदा करते हो।' नदीम मियाँ झेंपते हुए बोले।

तूफानी रात खत्म हो चुकी थी। सुबह का सूरज आकाश में लालिमा बिखरे रहा था। धीरे-धीरे राजेश्वरी देवी सूरज की तरफ देखकर मुस्कुरा रही थीं। और सुदर्शन बाबू और नदीम मियाँ किसी बात पर हँस-हँसकर आपस में बातें कर रहे थें।

साँसें

रामप्रसाद को खुद भी आश्चर्य हो रहा था। कि इतने जल्दी उसके हाथ कैसे थकने लगे हैं? अभी तो साठ का ही हुआ है। लेकिन दो साल पहले तक वो गाड़ी भरने में जवानों के कान भी काट देता था, सीताराम पुर में किसी को भी गाड़ी खाली करवानी हो या भरवानी हो वो रामप्रसाद को ही पहले बुलाता था, आखिर कोलवरी में मलकट्टा के पोस्ट से रिटायर होकर जो आया था, रामप्रसाद! यही हाथ हैं जो दो ढाई दिनों में कोयले का बड़ा से बड़ा ट्रक लोड़ कर देते थें, वही हाथ इतनी जल्दी जबाब देने लगे हैं, अभी तो बहुत काम करना है, बिटीया बड़ी हो रही है। उसके लग्न के लिए भी पैसे जोड़ने हैं। मुन्ना को स्कूल की फीस भी देनी है और घर की सारी जिम्मेदारियाँ भी उसकी ही हैं, आखिर क्या खायेंगे वो ? अगर इतनी जल्दी वो थकने लग जायेगा'

उसने तम्बाकू निकाला और हाथ पर मलने लगा। पिछले, कोरोना में वो भी पाजिटिव हो गया था। मरते-मरते बचा है। इधर साल भर से बीमार रहा है। हो सकता है, बीमारी और कोरोना ने मिलकर उसकी शक्ति छीन ली हो, वो बोरों पर पिल पड़ा। और आनन-फानन में बोरे उठाकर गाड़ी में भरने लगा स लेकिन बात बन नहीं रही थी तभी मालिक सुरेमन बाबू की आवाज उसके कानों में गूँजी -'ए अबे, रामप्रसाद हाथ जरा जल्दी-जल्दी चलाओ। इतना धीरे-धीरे काम करेगा तो शाम तक माल पार्टी के पास कैसे पहुँचेगा?' सुरेमन आँखें तरेरते हुए बोला।

'हाँ, मालिक गाड़ी लोड़ कर रहा हूँ, अभी आधे घंटे में हो जायेगा।'

वो, दुबारा उठा, और बोरों को कँधों पर लादकर गाड़ी में भरने लगा। लेकिन इतने में ही उसका दम फूलने लगा। एक तो चिलचिलाती हुई धूप और गर्मी। आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा। पाँव भी लड़खड़ाने लगे स उसका दम उखडने लगा। और, अचानक से कटे पेंड़ की तरह वो गिरा। पल भर में मजदूरों ने उसे घेर लिया, नब्ज टटोली गई, नब्ज थम गई थी।'

जिम्मेदारियाँ पीछे खड़ी रामप्रसाद का बाट जोह रहीं थीं। जैसे कह रहीं हों-'उठो, रामप्रसाद, अभी, तो बहुत काम करना बाकी है।'

चोट

बहुत देर बाद नीरव बाबू को होश आया था। शायद वो चूक गये थे। आस पास के सभी लोग भी जाने पहचाने थे। विवेक, मंटू, पुष्कर, उनके तीनों बेटे और उनके जान पहचान और जाति सेना वाली संस्था से जुड़े उनके तमाम जाने-पहचाने चेहरे भी आसपास ही थे। रामानुज बाबू, शांतु कुमार ये जाति सेना के अजेय सिपाही थें।

धुंधलाती नजरें जब कुछ सीधी हुईं तो सामने की बेड पर मतीन मियाँ को देखा स्लाइन वाले ग्लूकोज की बूंदें जैसे मतीन मियाँ के वजूद में जिंदगी भर रही थीं।

नीरव बाबू की भृकुटि तन गई, तमतमाते हुए बोले -'ये मनहूस यहाँ क्या कर रहा है? इसकी शक्ल देख लो तो दिनभर खाना नसीब नहीं होता है। विधर्मी कहीं का! नीच!'

'बाबा आप, आराम कीजिए। डॉक्टर ने आपको ज्यादा बोलने के लिए मना किया है।' विवेक, उनका बड़ा बेटा उनको तकिये पर लिटाते हुए बोला।

'वैसे भी, आपकी जान मतीन चाचा के कारण ही बच पाई है। जब आपको गाड़ी ने चौराहे पर धक्का मारा था। तो यही मतीन चाचा आपको अपनी बेकरी वाले टेंपो पर लादकर अस्पताल लाये थे। और अस्पताल में आपकी ब्लड ग्रुप का खून भी नहीं था। तब मतीन चाचा ने ही आपको खून देकर आपकी जान बचाई थी।'

नीरव बाबू को जैसे सोते से किसी ने जगाया था, वो ताउम्र छोटे- बड़े, ऊँच-नीच, धर्म-मजहब की कुंठाओं के बीच जीते आ रहे थे, उन्हें आज एक अदना सा विधर्मी मतीन ने बचा लिया था।

हे भगवान! ये कितना बड़ा पाप वो लगातार करते आ रहे थे, उन्हें उनकी आत्मा ने धिक्कारना शुरू कर दिया। झूठे आडंबरों-कुँठाओं में कितना लताड़ते रहे उस भले आदमी को। पता नहीं उन्हें क्या सूझा वो उठकर बिस्तर से नीचे उतरे और मतीन मियां को अपनी बांहों में अंकवार लिया स कमजोरी की वजह से वो लडखड़ाये लेकिन तभी मतीन मियां ने उन्हें थाम लिया।

फिर, मतीन मियां बोले -'अमां यार बेहोश होकर गिर जाओगे, अभी तुम्हारे चलने के दिन नहीं हैं।'

नीरव बाबू अपने आपको संभालते हुए बोले -'बेहोश तो अबतक था। अब होश में आया हूँ। मतीन मिंयाँ।' और दोनों बूढ़े हो-हो कर हँसने लगे।

रावण..

दस साल का विशाल, दशहरे का मेला देखने रामलीला मैदान अपने पिताजी के साथ गया था। राष्ट्राध्यक्ष ने रावण के ऊपर तीर चलाया और, कुछ ही देर में रावण का पूतला धू-धू करके जलने लगा। जिसे देखकर लोग आपस में हर्ष और उल्लास मनाते हुए एक-दूसरे को अबीर और गुलाल लगाने लगे थे। आज दशहरे का पर्व संपन्न हुआ था, और लोग बुराई पर अच्छाई की जीत की खुशी धीरे-धीरे मनाने लगे।

विशाल अपने घर आकर अपने पिता अंकित से बोला-'पिताजी, रावण की हत्या क्यों हुई थी...?'

अंकित अपने बेटे विशाल को सदियों पहले का किस्सा बताने लगा -'उन्होंने विशाल को बताया, बेटा सालों पहले, रावण, ने सीता जी का अपहरण कर लिया था। श्रीराम जी ने, रावण को बहुत समझाया कि वो सीता को ज्यों- का- त्यों लौटा दे, लेकिन, रावण बहुत ही जिद्दी और अहँकारी व्यक्ति था। वो नहीं माना और, परिणाम स्वरूप राम ने, रावण का वध कर दिया।'

विशाल अपनी जिज्ञासा को ज्यादा देर तक नहीं रोक सका। एक बार फिर, उसी लहजे में, अपने पिता अंकित से बोला -'पिताजी मैनें किताबों में पढ़ा है कि हम मनुष्य हैं। हमारे अंदर करुणा, क्षमा, दया, संवेदनशीलता हमेशा मौजूद होनी चाहिए। यदि ये चीजें हमारे अंदर नहीं है तो हम मनुष्य नहीं हैं स हमारे धर्म में तो यही सिखाया जाता है, कि सभी जीवों पर दया करनी चाहिए। अहिंसा परमो धर्मः। गलती से भी हम एक चींटी को भी ना मारें। क्या भगवान श्री राम के अंदर ऐसी, दया, करुणा, क्षमा और संवेदनशीलता नहीं थी...?'

तभी, उसने एक सवाल और पूछ लिया -'क्या हम मनुष्य भी इतने असंवेदनशील हैं, कि हर साल एक रावण को जलाते हैं। हमारे अंदर भी दया, करूणा, खत्म हो गई है, शायद।'

विशाल के इस प्रश्न पर अंकित उजबकों की तरह खाली दीवार को ताकने लगा। एकाएक उसे कोई जबाब नहीं सूझ रहा था।

मुल्क

'माँ तुम रो क्यों रही हो?' -सादिक ने अमीना बीबी के कँधे पर धीरे से हाथ रखकर पूछा।

'नहीं, मैं रो कहाँ रही हूँ?'

'नहीं, तुम रो नहीं रही हो तो तुम्हारी आँखों से आँसू कैसे. निकल रहे हैं?' सादिक, वैसे ही बोल रहा था। जैसे वो, अमीना बीबी की बात को ताड़ गया हो।

'कुछ नहीं होगा... हमलोग... कहीं... नहीं जा रहें हैं। सादिक ने अमीना बीबी को जैसे विश्वास दिलाते हुए कहा।'

बहुत मुश्किल से अमीना बीबी का जब्त किया हुआ बाँध जैसे भरभराकर टूट गया, और वो रुआँसे गले से बोलीं -'इस तरह से जड़ें... बार-बार नहीं खोदी जातीं। ऐसा ही एक गुलमोहर का पेंड़ हमारे यहाँ भी हुआ करता था स तुम्हारे अब्बा ने उसे लगाया था। इस गुलमोहर के पेंड़ को देखकर तुम्हारे अब्बा की याद आती है। सोचा, इस गुलमोहर के पेंड़ को ही देखकर मैं बाकी की बची-खुची जिंदगी भी जी लूँगी। मैंने यहाँ बहुत समय निकाल दिया। अब, सोचती हूँ की बाकी का समय भी इसी जमीन पर इसी गुलमोहर के नीचे काट दूँ। यहाँ की तरह ही वहाँ भी धूप के कतरे, पानी की प्यास और आदमी को लगने वाली भूख में मैंने कोई अंतर नहीं पाया। बार-बार जड़ें नहीं खोदी जाती ...सादिक मियाँ! ...ऐसे गुलमोहर एक दिन में नहीं बनते। 'और अचानक से अमीना बीबी जोर जोर से रोने लगीं।

सादिक ने अमीना बीबी को अपनी बाहों में भर लिया और चुप कराने की कोशिश करने लगा। अमीना बीबी को चुप कराते-कराते सादिक भी पता नहीं कब खुद भी रोने लगा।

भारत दोसी

५८/५, मोहन कॉलोनी,
बांसवाडा राजस्थान मो ९७६९४६७००७
E-mail: dosi-bharat@gmail.com

झगड़ालू

बुढिया लड़े जा रही थी २०-२५ मिनट हो गए थे मान ही नही रही थी लोग तंग आ गए थे। लोग पांच रूप, दे रहे थे और सार्वजनिक मूत्रालय का उपयोग कर रहे थे लेकिन बुढिया कहे जो रही थी 'निःशुल्क सुविधा है लिखा भी है तो क्यों ले-दे रहे हो?'

एक सभ्य आदमी ने कहा 'रे, दादी मैं दे देता हूँ तुम्हारे पांच रुपए जा उपयोग कर' दूसरे ने कहा की 'और क्या बीपी, शुगर मत बढ़वा।'

बुढियां अड़ गई बोली 'तू क्यों देगा निःशुल्क है ये तो।' वो सभ्य आदमी झगड़ालू कहकर चल दिया और बुढिया ताकती रही, लड़ती रही।

घाटे का सौदा !!!

नेत्र चिकित्सालय के जनरल वार्ड मे बैठा था। मोबाईल चलाते-चलाते बोर हो गया था। पास के बेड पर पुरुष लेटा था महिलाएं बैठी थीं। उनसे बातें प्रारम्भ हुई कितने का पैकेज है? आपरेशन के बाद क्या खाना है? क्या-क्या नहीं करना है? आदि बातें हो ही रही थी कि एक वृद्ध महिला को लेकर नर्स आई, बेड पर लीटा दिया और दवाई डाल दी। कुछ देर बात नर्स वृद्ध महिला को पोररिसिंग के लिए बाहर ले गई तो मैंने पास के बेड की महिला से कहा 'इस वृद्धा की बहू और बेटा बाहर बातें कर रहे थे बहू ने कहा इसके आपरेशन पर खर्च पैसा बिगाड़ना है ...'

महिला बोली 'पागल है बहुए बुढिया को दिखना बंद हो जाएगा तो इसका सब काम उसको करना पड़ेगा और फिर बुढिया घर के काम करती ही होगी वह भी बंद हो जाएगा, घाटे का सौदा होगा यह तो ।'

मैं अवाक होकर सोचने लगा यह व्यावहारिकता है कि असंवेदनशीलता ।

गर्व

पोते की शरारत देखकर दादी बोली 'यह तो डाकू है डाकू।' सब हंस रहे थे उनकी बात सुनकर पोता भी । सभी की आंखों मे चमक थी ।

चमक

बहुत देर हो गई थी किसी ने भी झूठा, आधा खाया फेंका नहीं था अचानक एक छोटे बच्चे ने पूडी सड़क कि तरफ उछाल दी। उसकी आंखों में चमक आ गई तेजी से लपका दूसरी तरफ से एक कुत्ता भी भौ-भौ कर लपका बच्चे की आंखों से चमक गायब थी रोटी फैंकने वाला बच्चा ताली बजा रहा था कुत्ते की जीत से उसकी आँखें चमक रही थी।

उसे फर्क नहीं पड़ता

'नहीं बेटे, नीचे गिरा हुआ उठा कर नहीं खाते हैं, मिट्टी लग जाती है। बीमार हो जाते हैं।' निजी स्कूल में छुट्टी होने से अध्यापिका मम्मी के साथ टाइमपास करने सरकारी स्कूल में गए रोहित के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए मम्मी ने कहा। रोहित ने बिस्किट फेंक दिया।

उसी समय उसका हमउम्र मगन वहां आया और उस बिस्किट को उठा कर खाने लगा। रोहित ने इशारा करते हुए मम्मी को बताया। वह बोली, 'खाने दो, उसे फर्क नहीं पड़ता।' रोहित अवाक् देखता रह गया।

डॉ. रंजना जायसवाल

लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही,
मिर्जापुर, उ.प्र. पिन कोड २३१००१
मोबाइल नंबर- ६४१५४७६७६६
E-mail : ranjana1mzp@gmail.com

शादी

काव्या और मोहित की दो दिन पहले ही शादी हुई थी। दोनों एक ही कम्पनी में काम करते थे। प्यार हुआ इकरार हुआ और दुनिया के सामने इजहार भी हुआ।परिवार की रजामंदी से धूमधाम से विवाह भी हो गया। रिश्तेदार लगभग जा ही चुके थे, बस बुआ जी रह गई थी।दोनों ने शादी के लिए दस दिन की छुट्टी ली थी। सोमवार से दोनों को कम्पनी जॉइन करना था। चाय की चुस्कियों के बीच बुआ जी ने एक प्रश्न काव्या की तरफ उछाला- 'और नौकरी कब से जॉइन कर रही हो।'

'सोऽऽऽ...!'

काव्या कुछ कह पाती तब तक उस की सास बोल पड़ी।

'नौकरी?' अरे अभी-अभी शादी हुई है। पति और परिवार को वक्त दे, नौकरी होती रहेगी।'

मोहित चुपचाप सर झुकाए चाय पीता रहा। काव्या कसमसा कर रह गई, वह सोच रही थी, ये बात तो मोहित के लिए भी लागू होती है। शादी तो उसकी भी हुई थी, उसे भी पत्नी और परिवार को वक्त देना चाहिए। नौकरी-वोकरी तो होऽऽऽ...

चुनाव

'उफ्फ! इस लाइट ने नाक में दम कर रखा। एक तो उमस भरी गर्मी ऊपर से हर दस मिनट पर लाइट चली जा रही है।' विनोद पसीने से तर-बतर थे, सचमुच इस साल बहुत गर्मी थी। स्वाति कमरों के लाइट और पंखे बन्द कर आई।

'भगवान जाने लाइट कब आएगी। इन्वर्टर अगर खत्म हो गया तो और आफत हो जाएगी।'

'पहले के दिन कितने अच्छे थे कम से कम तीज, त्यौहार और किसी नेता के आने पर दिन भर लाईट तो आती थी। हम जब छोटे-छोटे थे और जब किसी दिन लाइट नहीं कटती थी तो अम्मा कहती थी, 'लगता है कोई नेता आया है।'

विनोद की बात सुनकर स्वाति मुस्कुराने लगी, 'अभी छःमहीने से बिजली के हालात कितने अच्छे थे।

पर चुनाव खत्म हुए तो फिर वही हाल हो गया और दो वोट कहा था ना सरकार बनते ही फिर वही हाल हो जाएगा।'

विनोद ने चिढ़ कर कहा, 'ऐसी कोई बात नहीं है, थोड़ा इंतजार कर लो।'

'मतलब।'

'बस दो साल की बात है, हालात फिर से सुधर जाएंगे और लाइट फिर से आने लगी।'

'वह क्यों?'

'फिर चुनाव भी तो आ जाएंगे।'

सोच

'साहब! ये चौराहा लक्ष्मी बाई के चौराहे के नाम से प्रसिद्ध है।'

ऑटो में बैठी सवारी के साथ बैठे बच्चे ने बड़ी कौतूहलता से पूछा-'पापा! ये लक्ष्मी बाई कौन थी।'

'अरे बेटा! तुमने लक्ष्मीबाई का नाम नहीं सुना, हमारे शहर के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने अंग्रेजों से लोहा लिया था और लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुई थी। अंग्रेजों को अपनी वीरता से लोहे के चने चबवा दिए थे।'

ऑटो ड्राइवर के चेहरे पर चमक आ गई, तभी एक ऑटो ने हॉर्न दिया और उस ऑटो को ओवरटेक किया। ड्राइवर सीट पर एक लड़की बैठी थी और पीछे दो महिला सवारी बैठी थी। ऑटो वाले ने एक भद्दी सी गाली दी। बच्चे ने उंगली दिखाते हुए कहा- 'पापा! देखो लड़की ऑटो चल रही है।'

'चल दी ऑटो लेकर बड़ी आई लक्ष्मी बाई बनने।'

बुलडोजर

'भैया नक्शा पास करवाया है, आप पेपर देख सकते हैं।

अजीत ने बुलडोजर वाले के हाथ जोड़ते हुए कहा, 'साहब हमसे कोई मतलब नहीं, हमें तो तोड़ने का आदेश दिया गया है। हम तो ड्यूटी कर रहे हैं।'

ड्राइवर ने बुलडोजर में चाभी लगाते हुए कहा, गाड़ी घुर्र-घुर्र की आवाज के साथ चालू हो गई। अजीत के माथे पर पसीना छलछला आया। जीवन भर की पूँजी इस घर में लगा दी। अगर इस घर को तोड़ दिया तो वो और उनका परिवार कहाँ जाएगा। विकास प्राधिकरण के अधिकारी पेड़ के नीचे खड़े यथास्थिति का जायजा ले रहे थे।

'भैया! एक मिनट बस आपके साहब से बात कर लूँ।'

अजीत ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा, तभी सामने से अधिकारियों को आता देखकर अजीत उनकी तरफ लपका।

'साहब! ऐसा मत करिए, हम सड़क पर आ जाएँगे। आप कागज देख लीजिए।'

'कागज! कितना खिलाया था बाबू को...'

'जीऽऽ...वो!'

'सबको शॉर्टकट चाहिए तो भुगतो।'

अजित सोच रहा था बसे हुए घोसले को तोड़ने का आदेश देते समय कभी इस बात पर चर्चा क्यो नहीं की जाती कि किस की मिली भगत, किस की शह पर अवैध निर्माण, अवैध कॉलोनियाँ बन जाती हैं। एक मेज से दूसरे मेज तक फाइल को पहुँचने में एक आम इन्सान किस-किस दौर और समझौते से गुजरता है। पैसे लेकर नाजायज काम होने देने वाले को कोई पहले क्यों नहीं रोकता। एक बुलडोजर तो सरकारी बाबुओं की संपत्ति पर भी चलना ही चाहिए।अजित असहाय अपने आशियाने को उजड़ता देखता रहा।

निकासी

'पापा! मैं रोज-रोज के झगड़ों से तंग आ गया हूँ।'

'प्रकाश पर मेरी गलती ही क्या थी, रोटी थोड़ी कच्ची रह गई थी ...बहू से इतना ही तो कहा था थोड़ा देखकर सेंका करो।'

'आप भी न... अरे हो जाता है कभी-कभी, ऑफिस से थका-हारा आता हुआ पर घर में भी शांति नहीं। थक गया हूँ रोज की किचकिच से...'

शुक्ला जी चुपचाप बेटे के आरोपों को सुनते रहे।

'पापा! एक बात कहूँ... देखिये अन्यथा मत लीजियेगा ये रोज-रोज के झगड़ों से किसी का भला नहीं होने वाला... मैं सिन्हा अंकल वाले वृद्धाश्रम में आपके लिए बात कर आया हूँ। आप रविवार को वही शिफ्ट हो जाइए,हम छुट्टियों में मिलने आते रहेंगे। आप भी खुश और हम भी. ..सिन्हा अंकल भी वही है आपका मन लगा रहेगा।'

शुक्ला जी के पैर तले जमीन खिसक गई, पिछले महीने जब वो सिन्हा साहब से मिलने वृद्धाश्रम गये थे, तब वो बेचारे कितने दुखी होकर कह रहे थे। जीवन संघर्षों में बीत गया, रिटायरमेंट के बाद जब बहू-बेटे के साथ सुख से रहने का समय आया तो उन्होंने यहाँ पहुँचा दिया। क्या इसी दिन के लिए इंसान सन्तान पैदा करता है। शुक्ला जी को पूरी रात नींद नहीं आई। मेज पर प्रकाश के नाम की चिट्ठी लिख वो मुँह अंधेरे ही वृद्धाश्रम की ओर निकल पड़े।

नवरात्रि के पावन दिन चल रहे, शुक्ला जी चलते-चलते थक गए थे, थकावट तन से ज्यादा मन की थी। वो मंदिर के बाहर लगे पीपल के पेड़ के नीचे बैठ गए। पेड़ के नीचे टूटी हुई मूर्तियाँ रखी हुई थी। भगवान की टूटी मूर्ति को देख कर शुक्ला जी सोच रहे थे ये दुनिया जब टूटने पर भगवान को घर से निकाल सकती है तो फिर हमारी तो औकात ही क्या है।

प्रकाशन
आपकी किताब आपके द्वार...
ओपन डोर
नजीबाबाद
पुस्तक प्रकाशित कराएं

डॉ. तबस्सुम जहां

F 18/14 शाहीनबाग अबुल फजल एंक्लेव २,
जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली ११००२५
मोबाइल- ९८७३१०४११०
E-mail : tabijahan03@gmail.com

देवी माँ

बैसाख की तेज धूप, सिर पर भारी-सा गट्ठर उठाए वह मुश्किल से चल पा रहीं थीं। पसीने से तरबतर। मुँह पर ढाटा होने से सिर्फ माथा ही पोंछ पा रही थी। जैसे ही गाँव के बाजार वाली सड़क पर पहुंची तो सामने का दृश्य देख ठिठक गईं। लॉकडाउन होने पर भी कुछ लोग झुंड बनाकर एक सब्जी वाले को बुरी तरह पीट रहे थे। आलू टमाटर पालक पैरों से रौंद रहे थें। उन्होंने ध्यान से देखा कुछ चेहरे पहचाने कुछ अंजाने से लगे। लगता है पास के गाँव से थे।' हे भगवान! ये लोग सुधरेंगे नही। लगभग दो कोस चलने पर एक मकान के पास रुककर उन्होंने कुंडी खटकाई। दरवाजा दर्जी हनीफ मियां ने खोला। 'अरे पंडिताइन आप।' वो बहुत हैरान थे लॉकडाउन में भी इतना वजन उठाए, कढ़ी धूप में हांफती एक अधेड़ स्त्री उनके दरवाजे पर। उन्होंने तुरंत गट्ठर उनके सिर से उतारा। सिर का भार कम हुआ तो पंडिताइन लंबी सांस ले कर बोली। 'मास्टर जी ये राशन है आपके परिवार के लिए। पूरे कुनबे को बीस दिन चल जाएगा। एक बकरी भी बांध जाऊंगी साँझ मे, बच्चों की दूध खातिर। पंडित जी ने कहलाया है चिंता न करें। कुछ लोग गाम में विस फैला रहे हैं। उसका असर धीरे धीरे ही जाएगा। लोकडौन खुलते ही वो मुखिया के साथ गामवालन को समझाएंगे। सब विस घुल जाएगा। सब प्रेम से रहेंगे जैसे सदियों से रहते आएं हैं। तनिक आप लोग धीरज धरें। देवी माँ सब ठीक कर देगी। पंडित जी ने कहा है इस बार भी देवी माँ की चुनरी मास्टर जी ही बनाएंगे।... अच्छा अब चलूँ। रास्ते मे देखा कुछ सिरफिरे छुट्टन की रेहड़ी औंधाए दिए हैं। जाकर पंडित जी को बताना है। देवी माँ सबका भला करेंगी। पंडित जी कहते हैं देवी माँ सबको पालती है उसके लिए सब उसके बच्चे हैं। वो बस प्रेम देखती है जिनमे प्रेम नही वो उनके भक्त नही।' पंडिताइन चली गईं। हनीफ मियां उन्हें देर तक जाता देखते रहे। उनकी आंखों में आंसू थे। वह दो दिन से भूख से बेहाल उनके परिवार के लिए फरिश्ता बन कर आईं थीं। एक माँ बनकर। देवी मां के रूप में।

लकीर बनाम लकीर

छोटी लकीर की मुलाकात एक दिन बड़ी लकीर से होती है। मुलाकात दोस्ती फिर प्रेम में बदलती है। छोटी लकीर खुश है बड़ी लकीर को पाकर। छोटी लकीर के लिए बड़ी लकीर हर तरह से योग्य है। अतःछोटी लकीर उसे अपने जीवन का अंग बना लेती है। छोटी लकीर के लिए अब बड़ी लकीर उसके जीवन की मान प्रतिष्ठा बन जाती है। बडी लकीर का उसके जीवन मे आना छोटी लकीर के लिए गर्व का विषय होता है। समाज मे उसकी वाहवाही होती है। समय गुजरता जाता है। समय के साथ बड़ी लकीर अपने बडे होने के अनुरूप आचरण शुरू कर देती है जिसकी वह आदि होती है। छोटी लकीर को उसका बड़ा होना धीरे-धीरे खलने लगता है। बड़ी लकीर बड़ी क्यों है। छोटी आखिर छोटी क्यों रह गयी है इस विषय पर वादविवाद और फिर झगड़े होने लगते हैं। छोटी लकीर अब बड़ी लकीर पर हर तरीके से हावी होने लगती है। फलस्वरूप बड़ी लकीर को नोचा खरोंचा जाता है। उसके अस्तित्व को मिटाने का प्रयास होता है। छोटी लकीर अब खुश है। वह स्वयं बड़ी लकीर बनने में सफल रहती है। बड़ी लकीर अपमानित, प्रताड़ित हो अब मूक बन चुकी है। उससे मनवाया जा चुका है कि वह कभी बड़ी लकीर थी ही नही। छोटा होना ही उसकी नियती है।

रामफल

'कहाँ जाता है बे मंगतुआ। देखता नहीं लॉकडाउन है सब बंद है। चल भाग यहाँ से। मार खाएगा वरना।' हवलदार रामफल ने बस्ती के धोबी मंगतू को देख लाठी ठोकते चिल्ला कर कहा।

'साब पत्नी को सवेरे से ताप चढ़ा हुआ है दवा नहीं मिली तो मर जाएगी बेचारी। गोली लेने निकला हूँ। बच्चा भी भूखा है रो रहा है।' मंगतू ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए रुंधे स्वर में विनती की।

'नहीं नहीं सब बंद है चल भाग सीधे घर वरना अंदर कर दूंगा।' कह कर रामफल ने एक लाठी उसके कमर पर जड़ दी।

मंगतू रोता चला गया। रामफल बूढ़े हो चले थे। जल्दी हाँफने लगते सो सुस्ताने के लिऐ बंद दुकान के चबूतरे पर बैठ गए। दिल पर कुछ दबाव सा लग रहा था। रह रह कर माँ की याद आने लगी। ऐसे ही तो सर्द रात थी जब उन्हें पिछले बरस दमे का अटैक हुआ। कर्फ्यू में वह कैसा भागता फिरा था बीमार माँ को लेकर। साहब लोगों ने मदद भी की पर तब तक देर हो चुकी थी। बंद न होता तो माँ को समय पर अस्पताल पहुंचा सकता था। ओह माँ। सहसा लगा जैसे कंधे पर मां ने स्पर्श किया और कह रही हों 'बेटा रामफल तू तो ऐसा न था।' पीछे घूम कर देखा तो रात के सन्नाटे के सिवा कुछ न था। दिवंगत माँ का खयाल आते ही रामफल बिलख-बिलख कर रोने लगे। रो चुके तो दिल हल्का सा लगा। आगे एक किराने की दुकान खुलवा कर दूध के पैकेट और बिस्किट खरीदे। मुहल्ले के एक परिचित डॉक्टर के घर जाकर उनको बाइक पर बैठाया और मंगतू की झुग्गी की ओर निकल पड़े।

कैंसर

भोला आज अकेला रह गया था। रह-रह कर बिशनु की याद आ रही थी। एक ही तो दोस्त था उसका। देवी मैया ने उसे भी छीन लिया। सुबह तड़के ही तो भोला ने उसकी मिट्टी पार लगाई है। बेचारा काफी दिनों से बीमार था। गला तो फूल के बरसाती मेंढक-सा हो गया था उसका। पड़ा रहा था कितने ही दिन सरकारी हस्पताल के एक कोने में। बड़े डॉक्टर ने बताया कि उसे मुँह और गले का कैंसर था। कैंसर! नाम से भोला के झुरझुरी-सी दौड़ गयी। कैंसर होता भी क्यों न वाके। ससुर तमाखू बहुत खाता था। चबेने कि तरह चाबता ही रहता पूरे दिन। सहसा उसकी तन्द्रा भंग हुई। भक्क। तमाखू से भी कोई मरता है। उसने खीसे से गुटखे का पैकेट निकाला। हाथ मे लेकर उसे देर तक देखता रहा। उसने आज पहली बार रैपर की फोटो ध्यान से देखी। एक कैंसर ग्रस्त व्यक्ति का सड़ा गला मुंह अब उसे बेचैन करने लगा। नहीं यह तो बिशनु है। हां, वही तो है। उसे फोटो में बिशनु का अक्स नजर आने लगा। उसका एक मात्र दोस्त जिसे तमाखू से हुए कैंसर ने लील लिया था। अब भोला के हाथ कांपने लगे। ऐसा लगा कि वह अभी गुटखे को झटककर दूर फेंक देगा। उसने पैकेट को एक नजर देखा। रैपर फाड़ा और चबेने की तरह मुंह मे भर कर खुद से बोला- भक्क! तमाखू से भी कोई मरता है।

धर्म की रक्षा

भोला चौराहे पर खड़ा था एकाएक जोर का रेला आया और भोला को अपने साथ ठेलता हुआ ले गया। रेले में लोग कूद रहे थे, नाच रहे थे। जोर शोर से गाना बज रहा था। धर्म की रक्षा करनी है। धर्म बचाना है। देश बचाना है। भोला कुछ समझ पाता उससे पहले ही उसके हाथों में तलवार थमा दी गयी। जोर शोर से जयघोष गूंजने लगे। किसी के हाथ मे फरसा तो किसी के तमंचा लहराने लगे। रेला मस्जिद वाली गली के सामने रुक गया। सामने मस्जिद थी। यहीं से तो शुरुआत होनी है धर्म बचाने की। अब भोला मस्जिद के सामने खड़ा था। भीड़ अपने उन्माद में थी। नाच गाने के स्वर और तेज हो गए। सब लहरा लहरा के अपने हथियार चमकाने लगे। कमर हिलाने लगे। भोला को आगे लाया गया। धर्म व देश बचाने का बीड़ा उसको थमाया गया। चारों ओर जय घोष होने लगे। हर जय घोष पर भोला की नसें तनने लगीं। एक और जोर का जय घोष, उसकी बाजुए फड़कने लगीं। बस कुछ ही क्षण और वह बस धर्म बचाने ही वाला था सहसा एक जोर का हवा का झोंका आया उसके घर मे टँगे निषाद को गले लगाते और निर्धन सुदामा के पग धुलाते उसके आराध्य फड़फड़ा उठे। उनकी फड़फड़ाहट भोला के कानो और दिल तक पहुंची। कुछ भूला सा याद आया उसे.. बचपन मे उसे गोद मे खिलाते पड़ोसी रहीम चाचा। उसकी कलाई पर राखी बांधती उनकी बेटी नजमा। लॉकडाउन में उसके घर राशन पहुंचाते उसके मुस्लिम दोस्त। भोला की जैसे तंद्रा भंग हुई। देह पसीने से तरबतर। हाथ कांपने लगे। तलवार गिर पड़ी। भोला सन्न था। वह झट भीड़ से अलग हुआ। दिल हल्का सा लगा। मुँह आकाश की ओर कर दोनों हाथ जोड़े। घर मे लटकते प्रेम से सरोबार करुणानिधियों को याद किया। आज उसने सचमुच धर्म बचा लिया था।

हरदीप सबरवाल

मोबा. ८४३७२७८२८६
E-mail : sabharwalhardeep@yahoo.com

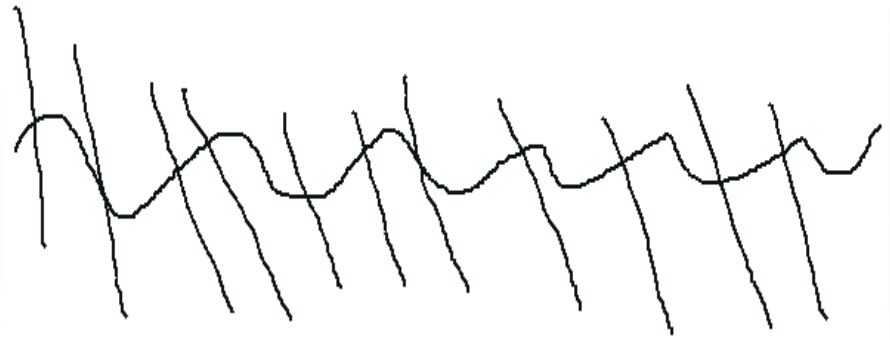

पाँव

'पापा, आपने ये पढ़ा?' ए बी ऐस सी में पढ़ती शिखा जो हर बात अपने पापा से शेयर करती थी एक किताब की तरफ इशारा करके बोली,' देखिए यहाँ लिखा है कि चाईना में एक समय लड़कियों के पैरों को लोहे के जूतों में रखा जाता था जिस से उनके पाँव छोटे-छोटे ही रह जाते थे और उन्हें चलने में भी बहुत मुश्किल होती थी।'

'हां, बेटी ये मध्ययुगीन मानसिकता थी ही इतनी भयावह कि इस तरह के जुल्म दुनियाँ भर में होते थे, वे ऐसा इसलिए करते थे कि कहीं लड़कियाँ भाग ना जाए, मध्य-युग औरतों के लिए बर्बर था।'

'थैंक गॉड मैं मध्य-युग में पैदा नहीं हुई, और मुझे आप जैसे पापा मिले जिन्होंने मुझमें और भाई में कभी कुछ फर्क नहीं किया', पापा के गले में झूलते हुए वो बोली।

'तुम दोनों ही तो मेरी आँखों के तारे हो, भला कोई अपनी आँखों में भी फर्क कर सकता है,' गर्वित होकर वह बोल उठे।

'अच्छा पापा, नेहा ने सनडे नाईट को अपनी बर्थडे पार्टी होटल में रखी है, मैं उसे हां बोल दू आने के लिए?'

एक पल में ही उनके मन में निर्भया केस की याद आ गई और ना जाने ऐसे कितने ही किस्से अखबारों मे रोज सुर्खियां बनते है और खो जाते हैं, अनजानी आशंका के भय से वो बोल उठे,' नहीं बेटा, लेट नाईट पार्टी के लिए मैं इजाजत नहीं दे सकता, तुम डे टाईम ही उसके घर जाकर गिफ्ट दे के विश कर आना।'

'पर क्यों पापा, भाई भी तो पिछले हफ्ते लेट नाईट पार्टी में गया था?'

'क्योंकि वो लड़का है,' ये शब्द उनके गले में ही कहीं अटक कर रह गए, थूक के साथ अपने अनकहे शब्दों को निगलते हुए उनकी नजर बेटी के पैरों की तरफ चली गई, लगा कि जैसे उसके पाँव लोहे के जूतों में कैद हों।

जाल

वो अब उसे बिलकुल पंसद नहीं करती थी, ना उसे उसका छूना पसंद था ना ही उसकी बातें, कभी-कभी वो हैरान होकर सोचती कि कैसे वो उस के प्यार में पड़ गई। पर वो उसे जैसे खोना ही नहीं चाहता था, वो हमेशा कहता,' तुम कितनी खूबसूरत हो, तुम में जो आकर्षण है वो कहीं नहीं' वो अक्सर उसे मिलने के लिए बुलाता, जब भी कभी वो इन्कार करती तब वो उसकी चिट्ठियां और तस्वीरे सबको दिखाने की धमकी देता।

वो खुद को किसी जाल में फसा महसूस करती, दिन ब दिन उसके लिऐ ये सब सहना मुश्किल हो रहा था, 'नहीं, मैं कोई उपभोग की वस्तु नहीं,' उसने फैसला किया,' अब मैं ये सब और बरदाश्त नहीं करूंगी।'

मुझे आज ही इस खेल को खत्म करना होगा।

वो उसके कमरे में तेजी से दाखिल हुई, उसकी आँखों में आँखें डाल कर दृढ़-निश्चय से बोल उठी, 'कोई व्यक्ति अपनी एक गलती की सजा कब तक भुगतेगा, आखिर कब तक।' उसकी आवाज जैसे फैसलाकुन्न थी।

वो खामोशी से उसे देखता रहा, कुछ पल के लिऐ रूका, और फिर यकायक अलमारी की दराज खोली, उसके पत्र और तस्वीरें उसकी तरफ फेंक कर बोला, 'कोई भी व्यक्ति अपनी एक गलती की सजा अब और नहीं सहेगा।'

स्तब्ध, बुरी तरह से चकनाचूर, उसकी प्रतिक्रिया पर हैरान सी, वो वापस आते ही कमरे में लगे अपने दर्पण के सामने जाकर खुद को देखते हुऐ खुद से बोल उठी, 'क्या मैं अब उतनी खूबसूरत, उतनी आकर्षक नहीं रही, जितनी कि पहले थी।'

और वो फूट-फूट कर रो पड़ी।

जिंदा

'उस मजदूर को देख रहे हो?' पहले ने दूसरे से कहा।

'कौन?, वो जो चुपचाप सर झुकाए अपने काम में जुटा है', दूसरे ने पूछा।

'पहले कविता-वविता लिखता था।'

'अच्छा!, कवि था, फिर मजदूर कैसे बना?', दूसरे के मन में सवाल उठा।

'पेट की आग क्या क्या ना करवाए, बच्चे भी तो पालने होते सब ने, अब उसके अंदर का कवि मर गया', पहले ने उसांस भरी।

'चलो कोई बात नहीं, कम से कम उसके अंदर का मजदूर तो जिंदा है', दूसरे ने हौसला बढ़ाने के लिए कहा।

'धत्त, मजदूर भी कभी जिंदा होते है क्या!', पहला बुदबुदा उठा, फिर अपने काम में जुट गया।

डर

'और फिर चिड़िया खुले आसमान में उड़ गई...' मां ने कहानी खत्म करते हुए कहा,

'बहुत ऊपर?' भोली आंखों में जानने की उत्सुकता थी

'हां बहुत ही ऊपर, बादलों के पास तक....'

'उसे डर नहीं लगा?'

'डर!' एकदम से मां का दिल कांप उठा, फिर खुद की भावनाओं को काबू कर बोली, 'जहां आजादी हो वहां डर कैसा?'

'बाज का, चील का और बड़े बड़े पक्षियों का।'

'नहीं री, असली डर तो चिड़े से था', मां जैसे मुंह में ही बुदबुदाई।

'चिड़े से कैसा डर मां?' भोली आंखों में हैरानी के भाव आए,

'एक दिन तू भी समझ जाएगी', मां ने उसे अपने अंक में भरते हुए कहा...

संवाद

'सुन', पहली भाषा ने दूसरी से कहा, 'तू कहां से उपजी?'

'मैं तो उस पुरातन भाषा से ही निकल कर आई हूं जो यहां की मूल भाषा थी, और तू?'

'अरे मैं भी तो, फिर तो तू मेरी बहन हुई!' उल्लास से भर के पहली ने कहा।

'अरे हां, दूसरी भी एक पल को खुशी से झूम उठी, फिर एकदम गंभीर होकर बोली, 'पर कितनी क्रूर है तू और तेरे बोलने वाले, वो सब पर तुझे थोपना चाहते हैं, बाकी सब का वजूद मिटाना चाहते हैं या महत्वहीन बनाना चाहते हैं।'

'नहीं ऐसा तो तुम्हारे बोलने वाले चाहते हैं, यहां तक कि मेरे खिलाफ वो विदेशी भाषा तक का साथ देने को तैयार हैं' पहली ने भी प्रत्यारोप जड़ा।

तभी वहां दोनों के ही पैरोकार चले आए, और बुलंद नारों के साथ वो दूसरी भाषा पर कालिख पोतने लगे, चंद मिनटों बाद दोनों अपने अपने कालिख लगे चेहरे को नीचे झुकाए अपने अपने रास्ते चल दी।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

Subscribe

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

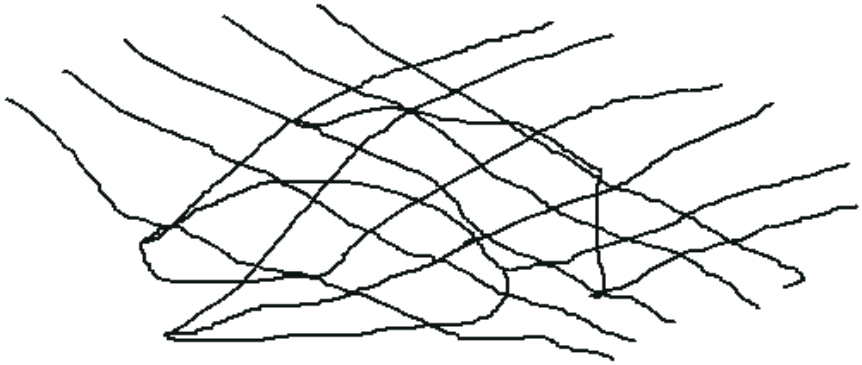

सीताराम गुप्ता

ए.डी. १०६-सी., पीतम पुरा,
दिल्ली - ११००३४
मोबा० नं० ६५५५६२२३२३
E-mail : srgupta54@yahoo.co.in

औचित्य

राजीव और उसकी पत्नी सुनीता ने बैठते ही सबसे पहले एक थैला खोलकर उसमें से एक लिफाफा निकाला और उसे गोपालचंद्र को पकड़ाते हुए राजीव ने कहा, ''ताऊ जी पापा ने ये खास आपके लिए भेजा है।'' गोपालचंद्र ने पूछा, ''इसमें ऐसा क्या है भई जो जगदीप ने खास तौर से मेरे लिए भिजवाया है?'' ''आप ही खोलकर देख लीजिए न ताऊ जी,'' राजीव ने कहा। तभी राजीव का फोन बजने लगा। राजीव ने फोन उठाया। ''हाँ पापा हम पहुँच गए हैं। अभी-अभी पहुँचे हैं ताऊ जी के घर। आपका गिफ्ट भी ताऊ जी को दे दिए हूँ। लो ताऊ जी से भी बात करो,'' ये कहकर राजीव ने फोन गोपालचंद्र को थमा दिया। आवाज आई, ''प्रणाम गोपाल भैया।'' गोपालचंद्र ने कहा, ''प्रणाम भाई। कैसे हो जगदीप?'' जगदीप गोपालचंद्र का कजन है। जगदीप ने कहा, ''भाई साहब आपको मुरमुरे के गुड़ के लड्डू पसंद हैं न इसलिए मैंने अपने हाथों से बनाकर आपके लिए भेजे हैं।'' ''भाई धन्यवाद! आपको मेरी पसंद याद है बहुत-बहुत धन्यवाद!'' गोपालचंद्र ने जगदीप के प्रेम और आत्मीयता के लिए उसका आभार व्यक्त किया। राजीव और सुनीता खाना खाने के बाद विदा हो गए। उनके जाने के फौरन बाद गोपालचंद्र ने जगदीप द्वारा भेजा गया मुरमुरे के लड्डुओं का लिफाफा उठाया। उसमें पॉलिथीन की चार थैलियों में मुरमुरे के लड्डू थे। उन्होंने एक थैली फाड़ी और उसमें से एक लड्डू निकालकर उसका एक टुकड़ा दाँत से तोड़कर चबाया। स्वाद में कुछ कड़वापन महसूस हुआ। चश्मा लगाकर लड्डुओं की थैलियों को ध्यानपूर्वक देखा। थैलियाँ काफी पुरानी थीं। लगता था वर्षों से धूल में पड़ी रही होंगी जिससे मौसम व नमी के प्रभाव से धूल की परत मैल में परिवर्तित होकर स्थायी रूप से उन पर जम चुकी थी। बहुत ध्यान से देखने पर पता चला कि उन पर पैकिंग की तारीख की रबर स्टैप्स भी लगी हुई थीं जो मिटाने के प्रयास के कारण काफी धुँधली हो चुकी थीं लेकिन पूरी तरह से मिट नहीं पाई थीं। गोपालचंद्र के लिए खास उपहार भिजवाने के लिए जगदीप ने मुरमुरे के लड्डू बेशक अपने हाथों से न बनाए हों लेकिन सवा दो साल पुरानी रबर स्टैंप्स को मिटाकर फेंकने के लायक लड्डुओं को नया बनाने के लिए उसके हाथों ने जरूर काफी मेहनत की होगी इसमें संदेह नहीं। रिश्तों में आत्मीयता व गरमाहट बनाए रखने के लिए थोड़ी बहुत मेहनत तो करनी ही चाहिए लेकिन उम्र के इस पड़ाव पर इतनी अधिक मेहनत करने का क्या औचित्य है?

परवाह

विनीता राखी वाले दिन अपने भाई राजेश को राखी बाँधने गई तो राजेश ने कहा, ''दीदी आपके यहाँ प्रेस करने के लि, कोई मेज नहीं है इसलिए आपको प्रेस करने में बड़ी दिक्कत होती है।'' बालकनी के, क कोने में रखी, क मेज़ की तरफ़ इशारा करते हुए राजेश ने पुनः कहा, ''दीदी मैंने आपके लिए एक मेज निकाल रखी है जिसमें नीचे की तरफ़ पूरी मेज में खाने भी बने हुए हैं जिनमें बहुत सारा सामान भी आ जाएगा। या तो आप इसे आज अपने साथ ले जाओ नहीं तो एक दो दिन में मैं स्वयं भिजवा दूँगा।'' ''अरे नहीं राजेश रहने दे हमारा काम चल रहा है,'' विनीता ने कहा। इस पर राजेश ने कहा, ''नहीं बहन आपको इसकी जरूरत है। बहन इसे मेरी तरफ से राखी का उपहार समझकर स्वीकार कर लो।'' अब विनीता क्या बोलती? विनीता को ध्यान आया कि ये मेज़ तो काफी दिनों से बालकनी में ही रखी है। विनीता ने मन ही मन सोचा, ''राजेश मेरी कितनी चिंता करता है! लगता है राजेश ने बहुत पहले से ही ये मेज़ मुझे देने के लिए अलग से निकाल रखी है लेकिन संकोचवश कह नहीं पाया और आज मौका देखकर कह दिया।'' राजेश ने अगले ही दिन मेज विनीता दीदी के घर भिजवा दी। किराया भी उसने पहले ही खुद दे दिया था रिक्शेवाले को। विनीता ने इधर-उधर बिखरा अपना फालतू सामान मेज में बने खानों में रख दिया और प्रेस करने के लिए एक अच्छा सा कपड़ा कई तह करके मेज के ऊपर बिछा दिया। कुछ दिनों के बाद विनीता को मेज के खानों में रखे सामान में से कुछ सामान निकालने की ज़रूरत पड़ी। उसने मेज़ के नीचे बने खानों के पल्ले खोले तो देखा कि सारे सामान पर हल्के भूरे संदली-से रंग के पाउडर की परत बिछी हुई थी।

अविश्वास

बेंक्वेट हाल के सामने पहुँचकर सुनील गाड़ी को पार्क करने के लिए जगह तलाशने लगा। अंदर की लेन फुल थी। बाद में आने वाले लोग बाहर मेन रोड पर ही गाड़ियाँ पार्क कर रहे थे। बाहर मेन रोड पर गाड़ी पार्क करने के बाद बेंक्वेट हाल तक पहुँचने के लिए काफी दूर से चक्कर लगाकर आना पड़ता था क्योंकि बेंक्वेट हाल के सामने मेन रोड व अंदर की लेन के बीच की सतह में कई फुट का अंतर था और दोनों के बीच एक दीवार सी भी बनी हुई थी। सुनील गाड़ी पार्क करने के बाद गाड़ी लहक करके गाड़ी से बाहर निकल कर कुछ कदम ही चला था कि वहाँ कुछ दूरी पर खड़े एक गार्ड ने इशारा करते हुए उससे कुछ कहा।

सुनील आगबबूला होकर गार्ड की तरफ बढ़ा और उसके कुछ बोलने से पहले ही उससे कहा, ''साले तुम पहले नहीं बोल सकते थे कि गाड़ी यहाँ नहीं खड़ी करनी है। पहले तो खड़े-खड़े देखते रहेंगे और जब बंदा गाड़ी लॉक करके गाड़ी से बाहर निकल आएगा तब कहेंगे कि गाड़ी यहाँ मत खड़ी करो।'' ''सर मुझे क्यों बिना वजह गालियाँ दे रहे हो? मैं तो बस इतना ही कह रहा था कि आपको आगे से घूम कर आने की जरूरत नहीं है। जहाँ आपकी गाड़ी खड़ी है वहीं पर अंदर की लेन तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। वहीं से आप आराम से नीचे उतर जाइए,'' गार्ड ने रोष मिश्रित विनम्रता से कहा। सुनील ने किंचित अविश्वास से गार्ड की ओर देखा और फिर चुपचाप वहाँ बनी हुई सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा।

बदला

''एक्सक्यूज मी सर! ये दोसी सर कहाँ मिलेंगे?'' किसी लड़की ने पीछे से आवाज दी तो शर्मा सर ने पीछे घूमकर देखा। पीछे जो लड़की दिखलाई पड़ी वो कुछ साल पहले यहीं इसी कॉलेज में पढ़ती थी और लगातार तीन साल तक शर्मा जी की स्टूडेंट भी रही थी। शर्माजी ने किंचित स्नेहपूर्वक लड़की की ओर देखा। लड़की ने इतराते हुए अत्यंत उपेक्षा एवं लापरवाही से फिर अपना प्रश्न दोहराया, ''ये दोसी सर कहाँ मिलेंगे?'' शर्मा जी को पूरा यकीन था कि डिम्पल नजदीक आकर उन्हें नमस्ते करेगी लेकिन लड़की के इस प्रकार के बर्ताव से उनका चेहरा उतर गया। शर्मा जी डिम्पल का हाल-चाल पूछना चाहते थे, ''डिम्पल कैसी हो?'' लेकिन उन्होंने किसी तरह अपने मनोभावों को रोककर अत्यंत संक्षिप्त सा उत्तर दिया, ''पता नहीं।''

आगे बढ़ने से पहले शर्मा जी ने लड़की की ओर ध्यान से देखते हुए उससे पूछा, ''क्या तुम इसी कॉलेज की स्टूडेंट हो?'' ''हूँ नहीं थी'', लड़की ने पुनः धृष्टता का प्रदर्शन करते हुए प्रतिप्रश्न दाग दिया, ''क्या आप मुझे नहीं पहचानते?'' लगता था शर्मा जी भी जैसे कुछ करने के मूड में आ गए थे। उन्होंने कहा, ''हर साल न जाने कितने स्टूडेंट्स निकलते हैं सब कहाँ याद रहते हैं? हाँ कुछ अच्छे स्टूडेंट्स जरूर याद रहते हैं हमेशा।'' ''कहीं तुम्हारा नाम रीमा तो नहीं?'' शर्मा जी ने लड़की की ओर इशारा करते हुए पूछा और फिर बिना उसका उत्तर सुने अथवा उसकी प्रतिक्रिया जाने विजयी मुद्रा में अपनी क्लास की ओर बढ़ गए।

परवाह

विनीता राखी वाले दिन अपने भाई राजेश को राखी बाँधने गई तो राजेश ने कहा, ''दीदी आपके यहाँ प्रेस करने के लिए कोई मेज नहीं है इसलिए आपको प्रेस करने में बड़ी दिक्कत होती है।'' बालकनी के एक कोने में रखी एक मेज की तरफ इशारा करते हुए राजेश ने पुनः कहा, ''दीदी मैंने आपके लिए एक मेज निकाल रखी है जिसमें नीचे की तरफ पूरी मेज में खाने भी बने हुए हैं जिनमें बहुत सारा सामान भी आ जाएगा। या तो आप इसे आज अपने साथ ले जाओ नहीं तो एक दो दिन में मैं स्वयं भिजवा दूँगा।'' ''अरे नहीं राजेश रहने दे हमारा काम चल रहा है,'' विनीता ने कहा। इस पर राजेश ने कहा, ''नहीं बहन आपको इसकी जरूरत है। बहन इसे मेरी तरफ से राखी का उपहार समझकर स्वीकार कर लो।'' अब विनीता क्या बोलती? विनीता को ध्यान आया कि ये मेज तो काफी दिनों से बालकनी में ही रखी है। विनीता ने मन ही मन सोचा, ''राजेश मेरी कितनी चिंता करता है! लगता है राजेश ने बहुत पहले से ही ये मेज मुझे देने के लिए अलग से निकाल रखी है लेकिन संकोचवश कह नहीं पाया और आज मौका देखकर कह दिया।'' राजेश ने अगले ही दिन मेज विनीता दीदी के घर भिजवा दी। किराया भी उसने पहले ही खुद दे दिया था रिक्शेवाले

को। विनीता ने इधर-उधर बिखरा अपना फालतू सामान मेज में बने खानों में रख दिया और प्रेस करने के लिए एक अच्छा सा कपड़ा कई तह करके मेज के ऊपर बिछा दिया। कुछ दिनों के बाद विनीता को मेज के खानों में रखे सामान में से कुछ सामान निकालने की जरूरत पड़ी। उसने मेज के नीचे बने खानों के पल्ले खोले तो देखा कि सारे सामान पर हल्के भूरे संदली-से रंग के पाउडर की परत बिछी हुई थी।

संतुष्टि

पूरा परिवार और कुछ रिश्तेदार बैठे हुए थे। बहुत ही खुशनुमा माहौल में बातचीत चल रही थी। बातचीत का रुख अचानक इस बात पर केंद्रित हो गया कि कौन-सी रिश्तेदारियाँ अच्छी हैं और कौन-सी रिश्तेदारियाँ अच्छी नहीं हैं। वहाँ उपस्थित लोगों को छोड़कर अन्य सभी के परिवारों के कच्चे चिट्ठे खुलने शुरू हो गए। अचानक बड़े भाई साहब का दर्द छलक उठा। अपने छोटे भाई से कहने लगे, ''सुरेश मैंने दो बेटियों और एक बेटे की शादी की है लेकिन तीनों रिश्तेदारियों में से मैं एक रिश्तेदारी से भी संतुष्ट नहीं हूँ।'' ''नहीं भाई साहब मुझे तो ऐसा नहीं लगता। हमारी बहू और दोनों दामाद तो बहुत अच्छे हैं,'' सुरेश ने अपनी राय प्रकट करते हुए कहा। इस पर बड़े साहब बोले, ''सुरेश मैं रिश्तेदारियों की बात कर रहा हूँ व्यक्तिगत लोगों की नहीं। अच्छी रिश्तेदारियों में जो बातें होनी चाहिएं वे तुम नहीं समझोगे।'' तभी पास बैठे बड़े भाई साहब के साले साहब ने अत्यंत धीमे स्वर में अपनी जिज्ञासा प्रकट कर दी, ''और आपसे और आपके खानदान से आपके कौन-कौन से रिश्तेदार संतुष्ट हैं और कौन-कौन से नहीं इस पर भी थोड़ा-सा प्रकाश डालने का कष्ट कीजिएगा।'' ये सुनते ही बड़े भाई साहब की मुखमुद्रा अत्यंत कठोर हो उठी और नेत्र आग्नेय। लगता था अपने नेत्रों की ज्वाला से ही उन्हें भस्म कर डालेंगे। भाई साहब जलते-भुनते हुए से बस इतना ही कह पाए, ''इस बात का जवाब मैं कैसे दे सकता हूँ? इस बात का जवाब तो तुम दोगे।'' इसके बाद भाई साहब के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला लेकिन भाई साहब के साले साहब का परिवार उनकी रिश्तेदारी से कितना संतुष्ट था इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट हो चुका था।

डॉ. अर्चनाप्रकाश

फ्लैट नं.- ००२, रॉयल ब्लॉक, एल्डिको ग्रीन अपार्टमेंट्स, गोमती नगर, लखनऊ, उ.प्र.
फोन नंबर - ९४५०२६४६३८
E-mail : drdayarchana@gmail-com

जिंदादिली

जब भी किसी के साथ कोई बीमारी या दुर्घटना होती, और माहौल गमगीन होता वे तुरंत आ जाती और पूरे माहौल को हँसी से सराबोर कर देतीं। सकारात्मक टिप्स का अकूत खजाना उनके पास था जिसे वे सभी मे मुक्त हस्त बाटा करतीं। शायद इसीलिए सबने उनका नाम मिस हरी-भरी रख दिया था। वैसे उनका असली नाम सुहानी कपूर था, खूब सज संवर कर रहना व मस्ती से खिलखिलाना उनकी विशेषता थी।

हमें पता चला कि सुहानी के पेट में अचानक तेज दर्द उठा एवं उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कालोनी की छह सात महिलाएं मिस हरी भरी से मिलने गईं। सभी को लग रहा था कि आज सुहानी जरूर उदास होगी। मगर जब वे सुहानी का हाथ अपने हाथों में लेकर बेहद आत्मीयता से बोली-'आप जरा भी परेशान न हो, ये अस्पताल व यहाँ के डॉक्टर बहुत अच्छे हैं, आप जल्दी ठीक हो जाएंगी।' उनके आश्चर्य का ठिकाना न था, सुहानी उनकी बातें सुनते ही चिर परिचित अंदाज में हँस पड़ी और बोली -'मेरी बच्चेदानी पूरी सड़ चुकी है, कल ही मेजर ऑपरेशन से डॉक्टर इसे निकाल देंगे। मगर इसमें मैं चिंता क्यों करूँ? अभी तो लीवर है, दिल है, गुर्दे हैं सब ठीक-ठाक है, तो एक बच्चेदानी निकल जाने से इतने बड़े शरीर पर क्या फर्क पड़ेगा? डियर मैं फिर से हट्टी-कट्टी हो जाऊंगी।' वे खिलखिला पड़ी तो सभी हैरान थे। पास खड़ी नर्स ने कहा 'ये मरीज बिल्कुल भी नहीं लग रहीं।'

तब वे और भी जोर से हंसते हुए बोलीं- 'तुम लोग कल ऑपरेशन के बाद आना तब शायद ज्यादा दर्द के कारण हँस न पाऊँ।'

दो तीन महीने में वे फिर से हरी भरी हो गई और पहले की तरह ही पॉजिटिव सोच के टिप्स बाँटने लगीं। तीन चार माह ही बीते थे कि सुहानी के नौकर ने बताया कि सुहानी मैम को हार्ट की बीमारी हुई है, और वे पी.जी.आई. में भर्ती हैं। सबके मन में उदासी छा गई, शायद अब सुहानी नहीं बचेंगी। सारे मिल कर उन्हें देखने गए। फिर वही मोहक सुरीली हँसी...! हमारे उदास चेहरे देखते ही बोलीं -'ए! ऐसी रोनी सूरत लेकर हमसे मिल कर जाओगी, तो मैं तो ठीक हो जाऊंगी! पर तुम लोगों को जरूर कुछ हो जायेगा! मेरी मानो तो दिल पर इतना बोझ मत डालो। फिर एक आँख दबा कर बोली- 'क्योंकि दिल तो दिल है!' उनकी इस अदा पर हम सब तो क्या नर्स व अटेंडेंट भी मुस्करा उठे।

लगभग एक माह अस्पताल में रह कर सुहानी घर आ गई। पेसमेकर लग चुका था लेकिन वही हँसी व मस्ती बरकरार थी। किसी ने कहा कि आप नहीं थी तो कॉलोनी में सन्नाटा हो गया था, अब फिर से बहार आ गई है। सुहानी भी कम न थी बोली -'हम तो दिल से मजबूर थे, एक पल को लगा कि अब ये मुझे छोड़ देगा, लेकिन फिर पेसमेकर से इसे काबू में कर के आ गई हूँ। अभी कुछ दिन तो हम आपके साथ मस्ती कर ही लेंगे।' अब हम सब भी सुहानी की जिंदादिली के सम्मुख नतमस्तक थे।

धन के रंग

अबकी बार मोदी सरकार! और मोदी। सरकार यानी जुमलों की सरकार। अनेक जुमलों जैसे स्वच्छ भारत, भाजपा का साथ सबका विकास, वैसे ही एक जुमला काला धन ईमानदारी का धन भी है। धन के कई रंग होते हैं काला धन सफेद धन गुलाबी धन प्लास्टिक

धन। धन मालिकों के भी कई नाम होते हैं। मसलन काले धन के कुबेर ईमानदार सफेदपोश, जिनके पास धन अभाव रहता है, उन्हें हम गरीब की संज्ञा दे देते हैं। धन की यह विशेषता उसके मालिक से तय होती है। यदि किसी नेता या व्यापारी के पास करोड़ों रुपए पाए जाते हैं तो मीडिया तुरंत उसे काला धन की संज्ञा दे देता है। लेकिन अगर किसी भिखारी की कोठरी में नोटों से भरा बोरा मिलता है तो तत्काल जनमानस हैरान, और मीडिया लिखता है भिखारी की कोठरी में नोटों की बोरी बरामद। जहां तक बात सिर्फ काले धन की है,तो वह आय के स्रोतों के नाम बताने पर टिकी है। अगर आप धन की आमद का स्रोत नहीं बता पाते हैं, तो पल भर में आपकी गाढ़ी मेहनत की कमाई काला धन हो जाएगी। अब यह अलग बात है कि वह रुपए आपने जीवन की शुरुआत में बेटी की सगाई शादी के लिए जोड़ कर रखी हो। बैंकों से ब्याज मिलते मिलते राशि बड़ी हो गई हो। एक और धन भारत में होता है जिसकी कोई सरकार कभी चर्चा नहीं करती। वह है स्त्री धन, जो किसी भी स्त्री को मायके या ससुराल से विभिन्न शुभ अवसरों पर तोहफे के रूप में मिलता है, और स्त्रियां उसे जोड़ कर रखती जाती हैं तथा उसी में अपनी गृहस्थी की छोटी-छोटी बचत भी जोड़ती जाती हैं।। जो कालांतर में बहुत बड़ी धनराशि का रूप ले लेता है। अब राशि बड़ी होने से इसे कानूनी भाषा में काला धन ही कहां जाएगा। धन के रंगों में सिर्फ काला या सफेद ही नहीं होते। धन के कई कारोबारियों ने उसे पिंक रोज, रेड रोज, लीफ ग्रीन के विशेषणों से भी नवाजा है। पाठक समझ ही गये होंगे कि दो हजार के नए नोट का नेम पिंक रोज और एक एक सौ के नोट को ग्रीन लीफ का विशेषण दिया गया है।

धन की देवी लक्ष्मी जी हैरान हैं, धन की इतनी विशेषताएं और इतनी प्रजातियां उन्होंने कभी बनाई ही न थी।

खोटा सिक्का

वे रिटायर्ड आई.ए.एस. हैं, उम्र के सत्तरवें पड़ाव पर है। दो बच्चे, वो भी अमेरिका से उच्च शिक्षत। हमारी कालोनी में नए नए आये हैं और इसी लखनऊ में ही बसना चाहते हैं। सुनकर बहुत अच्छा लगा कि दिल्ली मुम्बई बंगलोर, शहरों में रहने के बाद अब इन्हें लखनऊ की आबोहवा रास आ रही है। वरना एक बार दिल्ली बॉम्बे की तरफ रुख करने वालों को लखनऊ तो गाँव जैसा ही लगता है। किसी ने बताया कि बॉम्बे में इनका काफी बड़ा बंगला है और फार्म हाउस भी है। फिर भी लखनऊ में एक फ्लैट बुक करा दिया, और दूसरा किराए पर ले कर रहने लगे। साथ ही कार रिपेरिंग व डेकोरेशन का बिजनेस भी शुरू कर दिया।

बस फिर क्या था नफे नुकसान की बातें होने लगीं। वे बोले -यू पी के लोगो में चार सौ बीसी और काइयांपन कूट कूट कर भरा है। एक बार दस प्रतिशत की छूट देने के बाद भी मोल भाव करते रहते हैं। लेकिन बॉम्बे में ऐसा नहीं है, बन्दा दाम पूछता है,काम कराता है, और भुगतान कर देता है।'

मित्र मंडली में एक बोला -'आखिर रिटायरमेंट के बाद तो आपने बिजनेस वहीं लगाया होगा। फिर वहाँ से उखाड़ कर यहाँ क्यों आ गए?' तभी किसी ने चुटकी ली-'भई वहाँ पर तो इनका आई.ए.एस. वाला ठसका रिटायरमेंट के बाद भी चल ही जाता होगा। लेकिन अब भूतपूर्व का ठसका वहाँ काम नही करता होगा तभी यू पी के लोगों की बधिया बैठा रहे हैं।' बेचारे आई.ए.एस. कुछ कहते

उससे पहले ही एक मसखरे से सज्जन खुद को रोक न सके और बोले -छूटा नौकरी का ठसका, खोटा सिक्का भसका।' उनके साथ सभी ठहाके के साथ हंस पड़े।

चोर का ईमान

कॅरोना की दूसरी लहर के कारण लगभग छह माह बाद शातिर चोर मुख्तार व उसके साथी सुभाष ने दवा कम्पनी के मालिक के घर लम्बा हाथ मारा। सेफ व लाकर तोड़ते ही उसे चार बड़े बड़े बैग भरे हुए मिले।

वह सारे ही बैग अपने साथी के साथ लेकर भाग निकला। कुछ दूर निर्जन में पहुंच कर उसने बैग खोले। पहले दो नोटों के बंडल व सोने के सिक्कों से भरे हुए थे। लेकिन तीसरे में दवाएं व चौथे बैग में इंजेक्शन भरे हुए थे।

सुभाष बोला-'यार ये सब तो कॅरोना की दवाएं व इजेक्शन है। इस समय दवा की दुकान वाले इसके चार से छह गुना दाम हमें दे देंगे।'

मुख्तार बोला -'दो बैगों की कमाई ही अपने लिए बहुत है। फिर से कहीं लम्बा हाथ मार लेंगे, लेकिन जो कॅरोना से तड़प तड़प कर मर रहे हैं। उनकी दवाएं इंजेक्शन बेचने को मन नहीं मानता।'

सुभाष -'तब इन बैगों का क्या करना है?'

मुख्तार-'इतनी रात में कौन देखता है? चल किसी बड़े असपताल के सामने दोनों बैग फेंक कर भाग लेते हैं।

रात के तीन बजे शहर के बड़े अस्पताल के कैम्पस में दवा व इंजेक्शन से भरे दो बैग पड़े थे।

ढाई आखर

सुबह की सुहानी नींद में सो रही थी, सिरहाने रखा मोबाइल -हर घड़ी बदल रही है रूप जिंदगी ...! गाने लगा। करवट बदल कर भी चैन न मिला तो उसे उठा लिया। कौन हो सकता है इतनी सुबह? उधर से आवाज आई -कुछ सुना तुमने! कॉलोनी में डेथ हो गयी है।' मैंने पूछा किस घर में?' उधर से मेरी दोस्त चित्रा बोली -अरे यार! अपनी सुरेखा जी की सईमा नहीं रही। हम सब लोग उन्हीं के यहाँ जा रहें हैं अभी।' अभी तो सिर्फ छः बजे हैं मैंने कहा। जल्दी जाना चाहिए वे बोली - एक महीने से बीमार थी बेचारी, चार बोतल ग्लूकोज चढ़ा, रोज इंजेक्शन लगे पर फायदा नहीं हुआ। एक हफ्ते से खाना भी नहीं खा रही थी। फिर श्रीमती मनोचा जी का फोन आया-'पूछने लगीं कितनी देर में चलेंगी?' मैंने कहा एक घण्टा तो लग ही जायगा। हम सभी सुरेखा जी के घर पहुंचे तब तक कमरा गणमान्य लोगों से भर चुका था। सभी आँसुओं से सुबक रहे थे। कमरे के बीचोंबीच सफेद मोटी चादर पर सईमा का शव रखा था, भैसा कुंड जाने की तैयारी थी। इसी समय दोनों बेटे जो दुबई में नौकरी करते थे वे भी आ गए और सईमा से चिपट कर फूटफूट कर रो पड़े। बड़ा बेटा समीर बुरी तरह बिलख रहा था -हाय! सईमा तुम मेरे बिना कितनी लोनली हो गई थीं मैं समझता हूँ। ये देख तेरी राखी मैं हर समय जेब में रखता हूँ।' कहते हुए उसने राखियों का गुच्छा जेब से निकाला, माथे से लगाया फिर श्रद्धा सहित सईमा के आगे के पैर जिन्हें वह सम्भवतः हाथ मानता था वहीं रख दिया। छोटे बेटे बंटी ने भी वही प्रक्रिया दोहराई और सईमा से लिपट कर बिलखने लगा। विदेशी कैमरे से अनेको फोटो लिए गए। सुरेखा दम्पत्ति व दोनों बेटों का करुण क्रंदन दिल दहलाने वाला था।

डेड बॉडी वैन पर उसे रखा गया तो हाहाकार ही मच गया-सईमा-माई लव, मुझे छोड़ कर मत जाओ! सईमा आई मिस यू! माई लिटल हार्ट! और भी बहुत सी प्रेमोक्तियां दोनों बेटे और सुरेखा बोल रहे थे। सईमा को लेकर गाड़ी चली गयी तब सुरेखा का बेटा तीन चार बड़ी अलबम ले आया जिसमें सईमा को घर लाने पर पहले दिन से लेकर दो महीने पहले तक की ढेरों तस्वीरें थीं। सईमा से मिठाई खाते हुए, राखी बंधवाते हुए, उसके साथ नोजी लड़ाते हुए, डांस करते हुए। मुझसे रहा न गया तो मैंने पूछ ही लिया - 'बेटा! सईमा आपको कहां मिली थी?' इस पर समीर और भी जोरों से रो पड़ा।

समीर जोर से रोते हुए बोला आंटी मैं कॉलेज से लौट रहा था तो यह सड़क पर घूम रही थी मेरी साइकिल से टकरा गई, पहले तो ची ची कर चीखी, फिर मेरी तरफ टुकुर-टुकुर ताकने लगी। बस मुझे इस से प्यार हो गया और मैं इसे अपने घर ले आया। इसके सफेद रेशमी रोए और मुंह पर गिरते हुए लंबे कान मुझे बहुत अच्छे लगे, मेरे साथ मम्मी पापा और भैया भी इसे प्यार करने लगी तभी बंटी बोला- मोहल्ले में कई लोगों से मेरी हाथापाई सिर्फ इसलिए हुई कि उन्होंने इसे पिलिया कह दिया था।

चार दिन बाद साइमा की आत्मा शांति के लिए शान्ति हवन हुआ। उसमें गई तो देखा ड्राइंग रूम की चारों दीवारों पर साइमा की अनेक तस्वीरें लगी थी और एक बड़ी सी तस्वीर साइमा की अकेले की थी जिस पर चंदन का हार पहनाकर नीचे रंगीन वर्णों में लिखा था मेरी प्यारी -साइमा!'

अनिल कुमार ''राणा''

ग्राम-ठाट जट, पत्रालय-राजा का ताजपुर
जिला-बिजनौर (उ.प्र.) २४६७३५
मोबा. ९३६८१७६०८५

दीप

एक दीप जो धीरे-धीरे स्वयं को जलाकर भी, हवा के थपेड़े खाकर भी, परोपकार में अन्धकार को मिटाने में लगा है; जब तक जान है तब तक जगा है। यह सब शान्त भाव से बैठा, एकाकीपन में खोया दयाराम सोच रहा है। दयाराम उठा फूँक मारी दीप बुझा दिया, फिर तीली लगाई दीप जला दिया।

वाह रे दीप। मूक होकर भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिमार्जन कर दिया। खुशियों से जीवन को भर दिया।

भ्रातृ-प्रेम

एक गांव में दो भाई बड़े ही प्रेम-भाव से रहते थे। एक-दूसरे के प्रति दोनों का समर्पण-भाव देखते ही बनता था। अधिकांश लोग अपने बच्चों को, दोनों भाइयों का उदाहरण देकर आपस में प्रेम से रहने की प्रेरणा देते। यहां तक कि लोगों ने उन्हें राम-लक्ष्मण की संज्ञा दे डाली। गांव के कुछ कूटनीतिक लोगों ने ईर्ष्यावश दोनों भाइयों फूट डालने के लिए तरह-तरह की नीतियों का प्रयोग कर लिया, किन्तु दोनों के प्रेमभाव में तनिक भी ह्रास न हुआ, बल्कि कूटनीतिकों की धृष्टता को समझकर वे और अधिक सतर्क हो गए।

परिणामतः कूटनीति के कुत्ते सिर धुन-धुन कर सो गए।

कूप-मण्डूक

एक तालाब में व उसके आस-पास अनेक जीव-जन्तु रहते थे। वहां टिग्रीना नाम का एक जिज्ञासु प्रवृत्ति का मेंढक भी रहता था। उसके मन में हर समय नई खोज करने की धुन सवार रहती। उसने अनेक जीव-जन्तुओं की जन्म से मृत्यु तक की जानकारी भी प्राप्त कर ली थी। टिग्रीना ने अब यह भी जान लिया कि धरती गोल हैं, किन्तु उसे उसका छोर कहीं नहीं मिला।

एक दिन टिग्रीना कुएं में जा गिरा चोट तो लगी ही, साथ ही साथ उसके सारे प्रयासों पर पानी फिर गया। टिग्रीना के आंसू बह रहे थे। उस कुएं में पहले से ही एक दूसरा मेंढक मौजूद था। कुएं का मेंढक, टिग्रीना को देखकर खुश हुआ और बोला, ''भाई तुम क्यों रो रहे हो?'' टिग्रीना ने कहा, ''भाई मैं अब तक दुनिया की खोज पूर्ण नहीं कर पाया।'' कुएं के मेंढक ने मुस्कराते हुए कहा, ''दुनिया गोल है, मैं तो रोजाना दुनिया के कई-कई चक्कर लगाता हूँ।''

काँटा

एक दिन की बात है, हरिया व कोमल नाम के दो किसान मित्र नंगे पांव खेत पर जा रहे थे। रास्ते में हरिया के पांव में एक कांटा चुभा, जिससे हरिया की चीख निकल गई, जिसके दर्द की अनुभूति कोमल को भी हुई। अब हरिया से चला ही नहीं जा रहा था। हरिया बोला अब क्या करूँ? घर होता तो कांटा निकलवा लेता। उधर हरिया की पीड़ा दूर करने हेतु कोमल के मन में मित्र-भाव की तरंगे उठने लगी। तभी कोमल उछला और पास की झाड़ी से एक लम्बा-सा मजबूत कांटा तोकर ले आया। कोमल बोला, ''चिन्ता की कोई बात नही।'' तब कोमल ने पैर को पकड़ा तथा कांटे से चुभा कांटा निकाल कर उसी झाड़ी पर फेंक दिया।

चोट पर चोट

दोपहर का समय था, अधेड़ उम्र का एक किसान-नरपाल खेत में कार्य कर रहा था। कार्य करते-करते किसान का पैर एक गढ्ढे में जा पड़ा। नरपाल ने जब पैर ऊपर किया तो पैर लटक गया। वह समझ गया कि पैर की हड्डी टूट गई अथवा जोड़ हट गया है। वह दर्द से करहाने लगा किन्तु दूर-दूर तक कोई भी दिखाई नहीं पड़ रहा था। कुछ देर बाद सूरज नाम का एक आदमी साइकिल लिए पास के रास्ते से गुजर रहा था, तभी सूरज की दृष्टि नरपाल पर पड़ गई। सारा हाल जान सूरज ने किसान को साइकिल पर बैठाया तथा सीधा मुरैना गांव में विक्रम के पास ले गया।

नरपाल पता नहीं, क्या-क्या सोच रहा था, क्योंकि वह उन दोनों से ही अपरिचित था। विक्रम ने सूरज से कहा, ''भाई साहब इसके दोनों हाथ कस कर पकड़ लो, हिल न पाए।'' सूरज ने वैसा ही किया। तब विक्रम ने पैर पर दृष्टि इधर-उधर डाली व चोट लगे सीान पर दृष्टि गड़ाकर जोरदार मुक्का जड़ दिया।

नरपाल समझ गया कि वह बुरे लोगों के चंगुल में फंस गया, नरपाल चिल्लाया, ''चोट पर चोटा'' इस पर विक्रम बोला, ''दूर हुए खोट।'' विक्रम ने कहा पैर चलाओ-चलने लगा।

अंगुलिया हिलाओ-हिलने लगी दर्द भी छू हो गया। अब परिचय की क्या आवश्यकता थी? किसान ने सूरज व विक्रम वैद्य को एक साथ गले लगा लिया, तथा पूर्ण रूप से अपनत्व का भाव जगा लिया।

निरुपमा मेहरोत्रा

MMB 1/174 Sector B, Sitapur road
yogna, Jankipuram, Lucknow 226021
Mob - 9559513756
E-mail : Nirupma.mehrotra@gmail.com

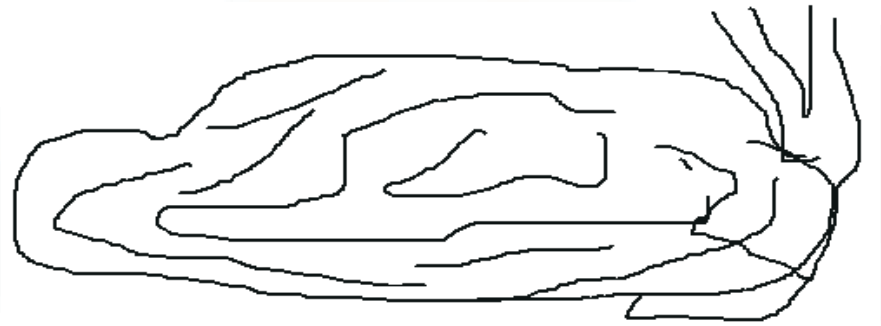

घुले मिले रंग

होली के दिन की सुबह होते ही सब घरों के दरवाजे खिड़कियां खुलने लगीं। एक रंग दरवाजे की चौखट से झांककर अपने मित्र को बुलाने लगा जिसपर मित्र रंग बोला, 'अरे दोस्त, मैं तो बाहर आना चाहता हूं पर डरता हूं कि मालिक तुम्हारे साथ मुझे देखकर नाराज न हो जाए।'

'बात तो तुम सही कह रहे हो, इसी बात से मुझको भी भय लग रहा है,' पहले ने सहमे स्वर में कहा।

तीसरा पड़ोसी रंग खिड़की से दोनों की बात सुनता हुआ वहीं से बोला, 'आज होली है, किसी का मालिक कुछ नहीं कहेगा पर फिर भी मुझे बाहर आने में संकोच हो रहा है।'

उसी समय सड़क पर खड़ा एक गहरा रंग तीनों मित्रों को समझाते हुए बोला, 'मेरे प्यारे दोस्तों, सभी रंग प्रेम के प्रतीक होते हैं, बाहर से कोई कुछ भी कहे पर वास्तव में सब एक दूसरे से प्यार करते हैं और सम्मान भी करते हैं। आओ मेरे यारों, संकोच छोड़कर बाहर आ जाओ।'

उसकी बात सुनकर तीनों रंग उछलते-कूदते बाहर आ गए और फिर उनको देखकर दूसरे रंग भी बाहर निकल आए। होली के उल्लास में गुलाल के सभी रंग आपस में झूम-झूम कर उड़ते लहराते हुए घुल मिल कर एक हो।

कन्या

दुर्गा नवमी की पूजा कर सलिला अपने बंगले के गेट पर खड़ी होकर कन्या पूजन के लिए लड़कियों की प्रतीक्षा करने लगी। पास पड़ोस में सभी ने अपनी बच्चियों को भेजने के लिए हामी भरी थी, पर अब जाने क्या हो गया सबको, फोन पर भी कोई न कोई बहाना बना दिया। परेशान सलिला पूजा की ज्योत में घी भरकर फिर बाहर गेट पर आकर खड़ी हो गई।

उसकी तेरह साल की बेटी नीली अपनी मां की उलझन को देख रही थी, उसी समय करीब सात साल की गन्दी सी लड़की, बेतुके कपड़े पहने गेट पर बाहर से आवाज देकर बोली, 'आंटी, कन्या खिलाएंगी?'

सलिला बुरा मुंह बनाकर नीली से बोली, 'देखो, सुबह सुबह कैसी गरीब भिखारन भीख मांगने आ गई है!'

लड़की फिर से बोली, 'आंटी कुछ खिला दो।'

नीली मां के चेहरे की परेशानी देखकर बोली, 'मम्मी, अभी तक कोई कन्या नहीं आयी है, तुम इसी को पूज लो।'

सलिला बेटी को डांटकर बोली, 'कैसी बात कर रही हो नीली, ये कितनी गन्दी है और इसके कपड़े तो देखो।'

नीली ने फिर सुझाव दिया, 'मम्मी सुनो, कल ही तुमने मेरे छोटे कपड़े अलग किए हैं, उनमें से एक इसको पहनाकर पूज दो।'

बेटी की सलाह से सलिला के चेहरे का भाव बदल गया, जैसे उसका वशीकरण हो गया हो। वह बिना किसी प्रतिवाद के राजी हो गई, फिर तो नीली ने गन्दी लड़की को गेट खोलकर अंदर बुला लिया। उसने दौड़कर अंदर से साबुन लाकर लड़की से नल के नीचे हाथ, पैर और मुंह धोने को कहा। मुंह धोकर लड़की का सांवरा चेहरा चमकने लगा। नीली ने उसको कंघा देकर बाल झाड़ने को कहा।

सलिला को छोटे कपड़ों में एक लहंगा और चुन्नी मिल गई जिसे बाहर लाकर लड़की को देकर उसके कपड़े बदलवाए। गरीब लड़की का रूप एकदम बदल गया था। सलिला ने उसके माथे पर बिंदी लगाकर हलुआ, पूरी और चना उसके आगे रख दिया। लड़की दो पूरी खाकर तृप्त हो गई और सलिला कन्या पूजन संपन्न कर भाव विभोर हो गई। वह कन्या को प्रसाद और रुपए देकर गेट के बाहर तक छोड़ने आई।

कन्या लहंगा पहने धीरे-धीरे जा रही थी, पर जाते जाते अमीर-गरीब का भेद मिटा गई थी।

वो मान गई

आज चेतना फिर रजत से नाराज होकर बोली, 'मैं अब तुम्हारी मां के साथ इस घर में नहीं रह सकती, देखो कैसे नंगे पैर सुबह से रसोई में खटर-पटर मचाए हुए हैं। अगर तुम अपनी मां से अलग नहीं रह सकते हो तो बताओ, मैं ही अलग हो जाऊंगी।'

रजत अपनी हठीली आधुनिक पत्नी के आगे हाथ जोड़कर बोला, 'चेतना, अपनी जिद को छोड़ दो, मैं पापा के जाने के बाद अपनी मां को अकेला नहीं छोड़ सकता, देखो कैसे वह सुबह से उठकर रसोई का काम अकेले ही करती हैं और फिर तुम भी मेरे लिए उतनी ही महत्वपूर्ण हो जितनी मां, मुझे दोनों का साथ चाहिए।'

फिर सहसा रजत खड़ा होकर बोला, 'अच्छा चलो, आज तुमको डॉक्टर को दिखाते हैं, इधर कई दिनों से ढीली लग रही हो।'

डॉ. स्वाति ने चेतना का चेकअप कर रजत को भी अंदर बुला लिया। दोनों डॉक्टर के सामने कुर्सी पर बैठे थे। वह बोलीं,' चेतना बधाई हो, तुम मां बनने वाली हो, अपने को खुश रखना तभी तुम्हारा आने वाला शिशु स्वस्थ होगा।'

डाक्टर ने पर्चा लिखकर रजत को पकड़ा दिया।

मां बनने के विचार से चेतना खुशी से खिल गई, अपने अजन्मे बच्चे के लिए मातृत्व भाव हिलोरे मारने लगा। सासु मां यह खुशी का समाचार सुनकर प्रसन्न हो गईं, वह हर पल चेतना का ध्यान रखतीं और भरपूर प्यार बरसाती थीं। इन सब घटनाक्रम में चेतना का घर छोड़ने का विचार कब उसे छोड़ गया, पता ही नहीं चला।

इधर रजत सोच रहा था कि उसके हाथ जोड़कर मनाने के कारण ये बहुत अच्छा हुआ कि वो मान गई।

पतंग की डोर

मनीष की छोटी छोटी बातों पर आंखें लालकर चिल्लाने की आदत से प्रज्ञा परेशान हो जाती थी। वो किसी भी समय क्रोध में अपनी नई नवेली पत्नी प्रज्ञा पर अपनी भड़ास निकालकर अपने अहं की पूर्ति कर लेता था। रोज-रोज के अपमान से आहत होकर प्रज्ञा ने अपनी मां से सब बातें बताकर मनीष को छोड़ने का निर्णय कर लिया।

मकर संक्रांति का दिन था। मनीष लाल बिंदी वाली पतंग लेकर छत पर चला गया, वहीं से उसने प्रज्ञा को आवाज देकर ऊपर बुलाकर चरखी उसके हाथ में पकड़ा दी। प्रज्ञा बेमन से चरखी पकड़े खड़ी, आसमान में रंग बिरंगी पतंगों का मेला देख रही थी। मनीष की पतंग आकाश में सबसे अलग, बिना किसी स्पर्धा के, लहराती हुई अपने में मगन उड़ रही थी। प्रज्ञा बुत सी बनी मन ही मन अपने विचारों की उलझन को सुलझाने का प्रयास कर रही थी। अंततः उसने महसूस किया कि वो पतंग की डोर के समान मनीष के साथ उड़ रही है जहां वो पूर्णतः सुरक्षित है और मर्यादित भी। प्रज्ञा ने विशाल आकाश में अपनी लाल बिंदी वाली पतंग ढूंढ़कर मनीष के कंधे पर अपना सिर रख दिया।

अनचाहे विचार

पत्नी के भाई के घर जाने के बाद ही सुभाष की तबियत खराब हो गई। टेस्ट करवाने पर कोरोना पॉजिटिव निकला। बीमारी से अकेले जूझते सुभाष को अपने प्रिय मित्र अजय की याद सताने लगी जिसका पिछले तीन दिनों से कोई समाचार नहीं मिला था। अचानक गेट पर बाइक रुकने पर उन्होंने खिड़की से झांककर देखा, गेट से अंदर घुसते अजय को देखकर वो खुश हो गए।

'कैसे हो सुभाष? मैं तीन दिनों से बाहर होने के कारण आ नहीं पाया।'

'अरे क्या बताऊं यार, कोरोना ने परेशान कर दिया है।'

'क्या!' अजय जोर से चिल्लाकर बाइक पर किक मारकर तुरंत लौट गया। सुभाष का दिल मित्र की ओर से खट्टा हो गया। इतना पुराना दोस्त कोरोना के भय से उसे कैसे अकेला छोड़ गया। लानत है ऐसी दोस्ती पर जो बुरे समय में साथ न दे! सुभाष के दिल में चोट लगी तो दवा खाने का मन भी नहीं हुआ।

करीब घंटे भर बाद दो गाड़ियां सुभाष के गेट पर रुकीं। पीपीई किट पहने अजय ने पूरे घर को सेनेटाइज करवाकर सुभाष के कपड़े बदलवाए, फिर खाना उसके सामने रखकर बोला,' मैं बाहर बैठा हूं, तुम खाना खा लो तब जाऊंगा, और परेशान बिल्कुल मत होना। शाम को मैं आऊंगा। कोई दिक्कत हो तो फोन कर देना।'

पहला कौर मुंह में डालते समय सुभाष अपने मन को कोस रहा था जहां जाने कैसे अपने प्रिय मित्र के प्रति अनचाहे विचार घुस गए थे।

अनन्त आलोक

साहित्यालोक बायरी डाकघर
ददाहू जिला सिरमौर
हिमाचल प्रदेश १७३०२२
मोबा. : 9418740772
E-mail : anantalok1@gmail.com

अमरीका की गाय

अमरीकी राष्ट्रपति भारत के दौरे पर आये, साथ में एक बेशकीमती उपहार लेकर आये। उपहार क्या था एक अमरीकी नस्ल की गाय। इस उपहार की दूर दूर तक चर्चा थी। हमारे देश में आई तो इसे देखने के लिए दूर दूर से लोग आने लगे। कई कई किलोमीटर लम्बी पंक्तियों में खड़े हो कर लोग इसके दर्शन कर रहे थे और स्वयं को धन्य मान रहे थे। गाय की खासियत है कि वह दूध तो देती है अपने वजन के बराबर लेकिन चारा खाती है मात्र अपनी पूँछ के भार के बराबर। गाय के दर्शन के लिए हरियाणा के एक अनुभवी किसान भी आये। किसान ने गाय को ऊपर से नीचे तक, आगे से पीछे तक देखा, उसके थनों से दूध की धार निकाल कर देखी और फिर उसे अपना हाथ चटवाया, लेकिन ये क्या! किसान ने झटके के साथ हाथ पीछे खींचा और दूर जाकर सहम कर खड़ा हो गया। उसके माथे से पसीना टप टप टपकने लगा। मीडिया वाले उसके चारों ओर एकत्र हो गए और माइक उसके आगे कर प्रश्नों की बौछार होने लगी। उसने कहा ''कोई शक नी गाय दूध भोत जादा देवेगी। चारा बी कम खावेगी पर!'' ''... पर क्या जी? कहिये कहिये!'' भई देखो गाय आदमी नू चाटेगी चाट दी जावेगी और धीरे धीरे इसकी जीब मा कंडे उगण लगजांगे! यो चाट दी जावेगी एक दो तीन फिर गाँव, प्रदेश और देश सबनू चाटेगी'' इतना कह कर किसान तेज तेज कदमों से अपने घर की ओर निकल गया। उधर किसी ने वन विभाग को फोन मिलाया और वे गाय को शेर के पिंजरे में बंद कर ले गए।

आपको गोली मारूंगा

'आया रे ...आया रे खिलोने वाला खेल खिलोने ले के आया रे ...खिलोने ले लो भाई खिलोने ले लो, बढ़िया सस्ते खिलोने।' खिलोने वाला गाता हुआ गली-गली में खिलोने बेच रहा था। राधा के बच्चे भी खिलोने लेने की जिद करने लगे। राधा ने खिलोने वाले को बुलाया और दो खिलोने मांगे। रेखा ने तो खिलौना फोन ले लिया लेकिन रोहित गिटार लेने की जिद करने लगा लेकिन राधा ने उसे बन्दूक दिलवा दी क्योंकि गिटार थोड़ा महंगा था। बन्दूक माँ की ओर तान कर रोहित बोला ''माँ मैं जानता हूँ ये झुटी-मुटी की बन्दूक है, इससे तो कोई मरता बी नइ! मैं बड़ा हो कर सची की बन्दूक लूँगा और सबसे पहले आपको गोली मरूँगा।' राधा ने चट! से उसके गाल पर तमाचा जड़ते हुए कहा 'बदतमीज! ये सब किसने सिखाया तुझे।' 'आप ही ने तो सिखाया बन्दूक दिलवा कर।' रोते हुए रोहित बोला।

नपुंसक

एक मित्रनूमा प्राणी ने मेरी फेसबुक वाल पर एक फोटो शेयर किया जिसमें एक सोई हुई अर्धनग्न लड़की का एक उभार अग्रभाग तक हल्का सा प्रदर्शित हो रहा था या किया गया था। मेरे लॉग इन करने से पहले उस पर असंख्य भद्र, अभद्र कमेंट्स आ चुके थे। मैंने भी अपना स्वभाविक कमेंट छोड़ा 'इस में क्या नई बात है? इट्स नेचर।' तुरंत प्रतिक्रिया हुई और एक कमेंट मेरे ही कमेंट पर आ गया 'नपुंसक' मैंने उस पर जवाब पोस्ट किया 'नपुंसक तो ये सारा समाज है और मैं भी इसका हिस्सा हूँ लेकिन तुम मर्द लोग कहाँ होते हो जब इन लड़कियों के साथ छेड़खानी होती है? सरेआम अत्याचार होते हैं, बलात्कार होते हैं क्या मर्द होने का मतलब सिर्फ यही है कि लड़की को सेक्स ऑब्जेक्ट के रूप में ही देखें? यदि ऐसा हो थू है तुम्हारी ऐसी मर्दानगी पर' इस पोस्ट का प्रकाशित होना था कि सौन्दर्यपान करने वाले इन सभी प्राणियों के कमेंट्स धीरे -धीरे रिमूव होने लगे।

एस सी ग्रेड फोर

एस सी ग्रेड टू, एस सी ग्रेड फोर के घर अपनी बेटी के विवाह का निमंत्रण देने आया। एस सी ग्रेड फोर उसका बचपन का सहपाठी रहा था, तो खुद ही निमंत्रण देने आ गया। बचपन की यादें ताजा हो गईं, हालाँकि दोनों निकट के ही गाँव के थे और अक्सर मिलते रहते लेकिन दुआ सलाम से ज्यादा कभी कोई बात नहीं हुई। अपनी-अपनी घर गृहस्थी में दोनों व्यस्त रहते। स्कूल टाइम के तीस साल बाद आज दोनों बैठे तो यादों के केलेंडर, दोनों को अच्छा लग रहा था। कुछ बचपन की बातें भी ताजा हुईं कि कैसे एक-दूसरे के घर जाया करते थे। ग्रेड टू ने हाथ जोड़ते हुए पूरे परिवार से निवेदन किया कि विवाह में अवश्य आयें, परिवार सहित।

ग्रेड फोर ने भी हाथ जोड़ कर निमंत्रण स्वीकार किया और पत्नी से कहा 'चाय बना, आज तीस साल के बाद मित्र घर पर आया है। हम बचपन में इकठ्ठे खेला करते थे, खूब मस्ती करते थे।' पत्नी चाय बनाने चली, हालाँकि उसे मालूम था कि नहीं पीने वाले, फिर भी उसने कहा 'अभी लाती हूँ' और किचन की ओर बढ़ी ही थी कि ग्रेड टू बोलते हुए उठ खड़ा हुआ 'नहीं जी, चाय बहुत पी ली है अब नहीं पी सकता, जहाँ भी जाते हैं चाय ही तो पिलाते हैं लोग, मीठा मुँह करवा दो, थोड़ी सी चीनी ले आओ बस।'

ग्रेड फोर के दिमाग में बिजली सी कोंधी और उसे एकदम याद आया, जब पिता जी घर पर सत्यनारायण की कथा करवाया करते थे तो पंडित उसके घर का बना प्रसाद न खा कर चीनी मांगते थे।

पत्नी चीनी ले आई, उसने चार दाने उठा कर मुँह में डाले और हाथ जोड़ते हुए बाहर निकल गया। पत्नी ने कहा ''मुझे मालूम था नहीं पिएगा चाय, ग्रेड टू है न! हम भी नहीं जायेंगे विवाह में।' 'नहीं मैं जाऊँगा, है तो साला एस सी ही न।' ग्रेड फोर ने निश्चय किया और चार दिन बाद शगन ले कर पहुँच गया। मित्र को बेटी के विवाह की बधाई दी, शगुन दिया और वधु को आशीष। ग्रेड टू बहुत खुश हुआ 'आप आए बहुत अच्छा लगा मित्र, कितने साल बीत गए देखो अम्मा बाबा भी कितने खुश हैं आपसे मिलकर। बेटा राजेश ये तुम्हारे अंकल हैं, इन्हें ले जाओ और बड़े सम्मान के साथ भोजन करवाओ, देखो किसी तरह की कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए।' 'नहीं मित्र, भोजन तो कर के आया हूँ बस बेटी को आशीर्वाद देने चला आया। भोजन तो बिलकुल भी नहीं ले सकता, हाँ मुँह मीठा करवा दीजिये थोड़ी सी चीनी ले आओ।' ग्रेड टू के चेहरे पर बेटी की विदाई से पहले ही रोनी फूट पड़ी। ग्रेड फोर ने हाथ जोड़े और घर का रास्ता लिया।

झल्ली

''ए बोबो, क्या कहूँ इब! कौण-कौण सी बात बताऊँ तेनू ... उसके जैसी बहू तो किसी दुस्मन के घर मा ना आवा!

ए म्यारा तो घर खोइदिया उन्ने! सारी रात फोन मा गुंठे देंदी रहा, सबेर दस बजे ते पेलां बिस्तर नि छोड़दी. बिस्तर पे चा देवा छोकरा. रसोई न बणावा, बर्तण न मांजा. ए उसके कपड़े बी म्हान्नु ... मर जा सौउरी के लगजा आग!

ए, म्हारा तो छोकरा बी बस मा कर लिया उन्ने. म्हारी तो सुणदा इ नि वा बी'' समेरो जब से आई थी तब से अपनी बहू की बुराइयाँ की होली जला रही थी। एक सांस में बोलती ही जा रही थी। बरामदे में बैठी गाँव की औरतें उसके सामने तो उसकी बातें बड़े ध्यान से सुनती रहीं। बीच-बीच में उसकी हाँ में हाँ मिलाकर जलती आग में घी भी डालती रही। जैसे ही वह उठ कर गई दीपो बोल पड़ी ''ए, वही ए न यो जोणसी इसी बहू के कसीदे पड़दे नि आरां थी? जद इन्ने छोकरा ब्याया ता! इब वही बहू बुरी होइगी! इब हम क्या नशाफ करॉ भई इसका?'' जमेरो ने भी अपना सहारा लगाया ''और क्या नि! बहू मां कमी ए तो उन्नू बोल न! उन्नू समझा घर मा अपणे। उरे म्हार पा केरी अपणे घर की बातां! झल्ली कहीं की !''

प्रकाशन
आपकी किताब आपके द्वार...
ओपन डोर
नजीबाबाद
पुस्तक प्रकाशित कराएं

सतीश 'बब्बा'

पता : सतीश चन्द्र मिश्र,
ग्राम व पोस्ट : कोबरा,
जिला - चित्रकूट, उप्र पिनकोड-२१०२०८.
मोबाइल - 9451048508, 9369255051
E-mail : babbasateesh@gmail.com

'बचपन'

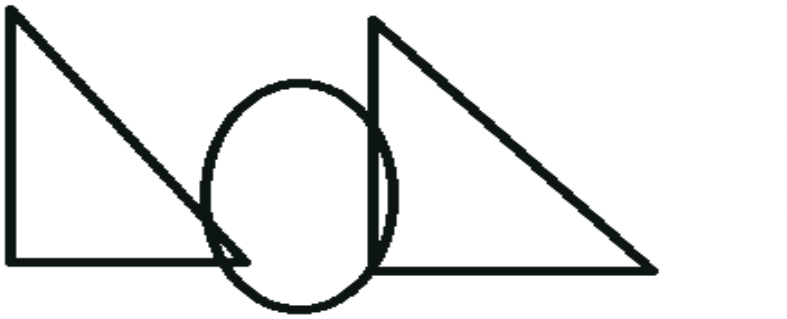

वह पूरी तन्मयता से कोल्ड ड्रिंक के वाटल का मजबूत लेबल फाड़ने में जुटा था और फाड़ने में कामयाबी पाकर बहुत खुश हो रहा था।

वहीं पास में अपने-अपने अस्तित्व के लिए, अपनी जायदाद वृद्धि के लिए दो पूर्ण विकसित मानव ऐसे लड़ रहे थे जैसे, यह धरती अब उनकी ही रहने वाली है।

फिर भी वह डेढ़ साल का बचपन, उनकी लड़ाई से, बिल्कुल ही प्रतिक्रिया विहीन था।

मुझे वह छोटा बालक प्रेरणा दे रहा था। और मैं ईश्वर से फिर से बचपन लौटाने की प्रार्थना करने लगा। यह जानते हुए कि अब इस तन में ऐसा संभव नहीं है।

एकता का जादू

कुछ दिन, कुछ बातें और कुछ रातें जीवन की अमिट छाप हो जाती हैं। वह भुलाने से भी नहीं भूलती हैं।

भला मैं उस रात को कैसे भूल सकता हूँ। जीवन साथी का आई.सी.यू. में जीवन और मौत से संघर्ष करना, कितना कष्टदायक था, मेरे लिए, मैं लिख नहीं पाऊँगा।

कुछ लोग तो इस दुखद घड़ी में मेरे साथ खड़े थे, बिना स्वार्थ हर मदद के लिए तैयार खड़े थे। और कुछ लोगों को मेरी जायदाद दिखाई दे रही थी। वे चंद रुपए देकर, हर हाल में मुझसे सौदा तय कर लेना चाहते थे।

मैं बड़ा होने के कारण, अपनी परेशानी, अपने परिवार पर जाहिर नहीं होने देना चाहता था।

तभी मेरे बेटे और बहू ने मेरे सिर पर हाथ फेरे और एक स्वर से कहा, 'पापा, घबड़ाना नहीं! आप जो भी निर्णय लेंगे, हम सभी आपके साथ हैं। मम्मी को हर हालत में बचाना है!'

यह देख, सुनकर मेरी परेशानी आधी हो गई। और एक दृढ़ संकल्प लेकर मैं, डाक्टर के केबिन की ओर चला गया।

परिवार के एकता का जादू चला और पत्नी की हालत में सुधार होने लगा।

'कलूटी'

उस दिन मुँह दिखाई में औरतें श्याम बिहारी की खूब निंदा करती नजर आ रही थीं। घर में भी उस काली - कलूटी की कदर नहीं थी। उस कलूटी ने बेटा भी जन्मा था, फिर भी उसकी बेइज्जती ही होती थी।

सालों बीत गए। कलूटी की सास बीमार होकर अस्पताल में भर्ती थी। कलूटी ही सेवा में थी। वार्ड के अन्य मरीजों के परिजनों ने श्याम बिहारी से पूछ ही लिया, 'भाई साहब, यह तुम्हारी बेटी है या बहू?'

श्याम के आँसू छलक आते और संक्षिप्त सा उत्तर होता, 'दोनों!'

घर आकर भी सास उठ बैठ नहीं सकती थी। तब कलूटी ने तनिक भी मन मलिन नहीं किया था और कहा, 'यहीं बैठना मम्मी मैं सफाई करूँगी!'

कलूटी ने रात को रात और दिन को दिन नहीं समझा और एक छोटे बच्चे की तरह सास की गंदगी साफ करती थी। सास की बातें भी सुनती और हंसती, हँसाती रहती थी।

आखिर उसकी सेवा के बल पर सास चलने-फिरने लगी।

आज पूरे गांव के लोग और नाते-रिश्तेदार कलूटी की प्रशंसा करके नहीं थकते हैं!

सुख

इतना बड़ा मैडिकल कालेज, अस्पताल में कही कोई खिलखिलाहट नहीं कि, कोई हंसता नजर आ जाए। हर किसी का मुँह लटका हुआ, चेहरा उतरा हुआ था। चारों ओर करूण क्रंदन अलग!

मरीज के साथ रहने वाला आदमी और मरीज से बढ़कर होता। मैं तो वहाँ का माहौल देखकर ही आधा हुआ जा रहा था।

आज छठा दिन था। डाक्टर राउण्ड में आए और मुझे बुलवाकर कुछ हिदायत दी और दवा लिखा पर्चा लेकर मैं दवा ले आया। एक नर्स मैडम ने कहा, ष्दस दिन की दवा है समय से दवा देना फिर दस दिन बाद ले आना। जाओ आज तुम्हें डाक्टर साहब ने डिस्चार्ज कर दिया है!'

सच मानो मुझे उससे बड़ा सुख कोई नहीं लगा। शायद इसे ही सुख कहते हैं।

और रोगी के परिजन पूछ रहे थे, 'ठीक हो गया है आपका मरीज? छुट्टी मिल गई क्या?'

मैं उनकी मनोदशा को समझ रहा था जो अपने सुख के लिए दिन गिन रहे थे।

'देह और प्रेम'

धनीराम चौबे सिर्फ नाम के धनी नहीं थे। उनके पास खेती-बारी, ठेकेदारी, पैसों के भी धनी थे।

शादी-शुदा होने के बावजूद वे, पैसों के बल पर ऐयाशी भी करते थे। अचानक उनकी पत्नी बीमार होकर कौमा में पहुँच गई।

चौबे जी इतना कभी दुखी और परेशान नहीं देखे गए थे। धनीराम चौबे ने अन्न-जल त्याग कर फकीरों की सी हालत बना ली थी।

चौबाइन को देखने एक सुंदर महिला आई थी। कभी उसने भी चौबे के पैसे खाए थे। और उसने अकेले आँसू बहाते धनीराम चौबे से कहा, 'चौबे जी, क्यों अपनी हालत खराब कर रहे हैं, हम हैं न, आपके साथ!'

धनीराम चौबे ने कहा, 'तुम! तुम सिर्फ देह दे सकती हो, प्रेम नहीं, प्रेम मुझे वही दे सकती है। जो वहाँ जिंदगी और मौत से लड़ रही है! तुम देह और प्रेम के फर्क को नहीं समझ सकती हो!'

तभी कराहते शब्द चौबाइन के निकले, 'चौऽऽ चौबे जी!'

चौबे को मानो नया जीवन मिल गया हो और वह बेतहाशा दौड़ पड़ा और डाक्टर के रोकने पर डाक्टर के पैरों में गिर पड़ा!

डाक्टर ने, धनीराम को पत्नी से मिलने की इजाजत दे दी!

महत्वपूर्ण है शोधादर्श का यह विशेषांक

पीड़ा सहते-सहते जो पीड़ा का गायक बन गया। ग़रीबी में दिन गुज़ारे मगर कभी हाथ न फैलाया। जिसने फिल्म जगत को एक अमर गीत देने के बाद फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया। जिसने राजीव गांधी और संजय गांधी को हिंदी बोलना सिखाया। जिसने अपराध जगत की पत्रकारिता की और कितने ही मामले उजागर किए मगर न कभी बिका और न कभी हटा। हार मानना तो इस महान व्यक्ति ने सीखा ही नहीं था। वह यारों का यार था और कष्टों के बावजूद मस्त था। वो किसी के लिए कुछ भी रहा हो मगर एक बेमिसाल था।

अगर आप भी इस महान व्यक्ति के बारे में जानना चाहते हैं तो पढ़ें शोधादर्श का यह विशेषांक

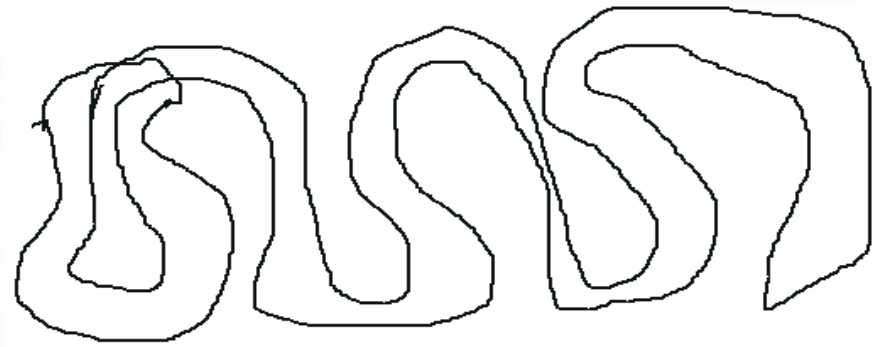

विजयानंद विजय

आनंद निकेत, बाजार समिति रोड
पो. : गजाधरगंज, बक्सर (बिहार) - ८०२१०३
मो. : 9934267166
E-mail : vijayanandsingh62@gmail.com

संवेदनशीलता

'हे भगवान..! ये क्या हो गया..! कोई तो बचाओ..।' सड़क पर पड़ा एक व्यक्ति जोर-जोर से रोए जा रहा था। उसे कमर में चोट लगी थी और पैर की हड्डी भी टूट गयी थी.. शायद। इसलिए वह उठ नहीं पा रहा था। एक कार वाले ने उसकी स्कूटी को टक्कर मार दी थी। पास ही पड़ी थी उसकी पत्नी... बुरी तरह लहुलूहान... बेजान-सी..। पता नहीं क्या हुआ है उसे..! हाथ बढ़ाकर वह उसे छू भी तो नहीं पा रहा था..! उसकी चीख सड़क पर बेतहाशा चल रहे वाहनों के शोरगुल व दौड़ते-भागते इंसानों की भीड़ में बेआवाज गूँजती रही। मदद को हाथ तो नहीं मिले, मगर दिलवालों के उस शहर में लोग बस...वीडियो बनाते रहे। संवेदनाएँ कराहती रहीं...।

तभी अचानक कहीं से एक कुत्ता भीड़ को चीरता हुआ तेजी से पास आया। पास आकर वह बेहोश पड़ी महिला का मुँह सूँघने लगा... उस रोते हुए व्यक्ति को चाटने लगा और फिर तेजी से पलटकर बाहर निकल गया।

कुछ देर के बाद वह कुत्ता वापस लौटा...और उसके साथ दो-तीन युवक भी! उन्होंने खून से लथपथ महिला को उठाया और घायल व्यक्ति को पीठ पर लादकर तेजी से भीड़ से बाहर चल दिए।

मुर्दा तमाशबीन भीड़ कभी उन्हें जाते हुए देखती रही, कभी बुरी तरह क्षतिग्रस्त स्कूटी को, तो कभी खून से सनी उस सड़क को...! सड़क पर बिखरी खून में लिपटी लाल-हरी काँच की चूड़ियाँ प्रश्नवाचक निगाहों से भीड़ की ओर देखती हैं और कुछ और चिटक जाती हैं...!

धर्म और मजहब

जंगल के सारे जानवर बेचैन हो गये थे। पास के नगर के भयंकर सन्नाटे ने उन्हें परेशान कर दिया था। नगर का दृश्य देख वे सिहर गये। चारों ओर आग की उठती लपटें, धुआँ, कालिख, राख और जली हुई बस्तियाँ...यत्र-तत्र बिखरे जले-अधजले शव और हवाओं में घुली अमानुषिक और दमघोंटू गंध।

'लगता है लोग यहाँ आपस में ही लड़ मरे हैं।' - एक वृद्ध जानवर ने लंबी साँसें खींचते हुए कहा। 'क्या? ऐसा? मगर वे तो इंसान हैं। सृष्टि के सबसे बुद्धिमान और विवेकशील जीव! वे ऐसा कैसे कर सकते हैं?' - एक साथ सभी जानवर बोल पड़े।

'उससे क्या फर्क पड़ता है। जब विचार कलुषित और दूषित हो जाते हैं, तो लोग जानवर से भी बदतर हो जाते हैं? जाति-धर्म के आधार पर जब वे बँट जाते हैं, तो फिर एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं। इतने जानवर तो हम भी नहीं हैं!' - एक बुजुर्ग ने तार्किक रूप से समझाने की कोशिश की। सभी जानवर उसकी ओर देखने लगे।

सहसा सबकी नजर सड़क पर मरे पड़े और खून से लथपथ एक कुत्ते की ओर गयी और प्रश्न हवाओं में तैर गया- 'मगर..इस बेजुबान का धर्म और मजहब क्या था?'

फूल कभी तो खिलेंगे!

चारों तरफ धुआँ ही धुआँ नजर आ रहा था और राख बिखरी पड़ी थी। राकेटों, बमों और मिसाइलों के धमाके से घर और मकान नेस्तनाबूद हो चुके थे। कालिख भरी दीवारें मानवता के ध्वस्त हो जाने की क्रूर कहानी कह रही थीं। चारों ओर मरघटी सन्नाटा पसरा हुआ था।

एक तरफ डायरी के कुछ फटे हुए अधजले पन्ने पड़े थे और पास ही शांत पड़ी थी एक टूटी हुई कलम। डायरी में लिखे जा रहे कुछ शब्द शायद अधूरे ही रह गये थे। ये तोप, गोला-बारूद इंसानों की भाषा नहीं समझते। बंदूक कलम नहीं है..!

एक बच्चा अपने खिलौनों से खेलते-खेलते हमेशा के लिए सो गया था। उसका टेडी बीयर उसकी बगल में बैठा कबसे उसके उठने का इंतजार कर रहा था..। उसके पास ही एक सैनिक अपना सिर थामे बैठा हुआ था।

अहंकार और सत्ता के मद में डूबकर वर्चस्व स्थापित करने की होड़ में इंसान ही इंसान का दुश्मन बन बैठा है। रूस-यूक्रेन युद्ध अपने चरम पर है। अपनी ही शाखों के फैलने और फलने-फूलने पर पेड़ ने ही शाखों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया था। नासमझ मनुष्य कभी समझ ही नहीं पाता कि युद्ध समाधान नहीं है, बल्कि खुद एक समस्या है।

अचानक मलबे से बुरी तरह लहूलुहान और कराहती हुई एक बुढ़िया की आकृति उभरती है। वह किसी तरह उस अनजान बंदूकधारी सैनिक के पास आना चाहती है।

सैनिक बेबस निगाहों से पास आती उस घायल बुढ़िया को देखता है और हाथों से कुछ इशारे करता है...मानो कहना चाह रहा हो कि.. अफसोस माँ! मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सका।

बुढ़िया उसके पास आई। उसने अपना हाथ सैनिक की ओर बढ़ाया। उसकी मुट्ठी में कुछ था, जो वह सैनिक को देना चाहती थी।

सैनिक ने काँपते स्वर में पूछा - ये क्या है माँ?

- 'ये सूरजमुखी के बीज हैं मेरे बच्चे! लो, इन्हें अपनी जेब में रख लो, ताकि तुम्हारे साथ ही ये भी कब्र में दफन हो जाएँ। और...जब युद्ध खत्म हो जाये, तो ये धरती का सीना चीरकर बाहर निकलें और लोगों को मुस्कुराना सिखाएँ...।' - कहते-कहते बुढ़िया ने बीज सैनिक के हाथ में रख दिए और उसका सिर सैनिक के काँधे पर टिक गया। वह हमेशा के लिए शांत हो चुकी थी, मगर उसकी आवाज देर तक सैनिक के कानों में गूँजती रही..।

सैनिक उसके हाथों की पकड़ को अपने हाथ से छुड़ा ही नहीं पा रहा था...।

एहसास

'रुको! रुको! हेलमेट लगा लो बेटा।' चौराहे पर सिपाहियों के साथ खड़े दारोगा जी ने सामने से तेजी से जा रहे बाईक सवार को पुकारा। नया मोटर वेहिकल एक्ट लागू होने के बाद से शहर के हर चौक-चौराहे पर पुलिस की जबरदस्त चेकिंग चल रही थी।

आवाज सुनकर बाईक सवार युवक रुक गया। उसने पीछे मुड़कर देखा, दारोगा जी के पास आया और पूछा- 'अंकल, पुलिस वाले तो आजकल वाहन चेकिंग के नाम पर डंडा चलाते हैं। कॉलर पकड़ लेते हैं। मार-पीट, गाली-गलौज तक करने लगते हैं। आप इतने प्यार से क्यों बुला रहे हैं सबको? बेटा रुक जाओ...बेटी रुक जाओ... सुनो बहन...सुनो भाई...?'

दारोगा जी ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा- 'अच्छा बताओ, तुम मेरे बेटे जैसे हो कि नहीं?'

'हाँ...हाँ। क्यों नहीं अंकल? 'युवक ने सकुचाते हुए कहा और बाईक से उतर गया।'

'तो, अगर मैंने अपने बेटे को हेलमेट लगाकर बाईक चलाने को कहा, तो क्या गलत कहा?' - दारोगा जी ने उसी से पूछ लिया।

'नहीं तो..!' 'फिर ऐसी लापरवाही क्यों करते हो, बेटा? भगवान न करे अगर रास्ते में तुम्हें कुछ हो गया, तो...? 'दारोगा जी ने उसी प्यार भरे लहजे में युवक से पूछा।' सॉरी अंकल। अब ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा। थैंक्यू अंकल...।' - युवक ने कान पकड़कर कहा और हाथ जोड़ लिए। उसकी आँखें भर आयी थीं। उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था।

दारोगा जी ने उसके सिर को सहलाया और धीरे से मुस्कुराते हुए कहा - 'जाओ।'

युवक ने दारोगा जी की बोलती आँखों में झाँका, झुककर उनके पाँव छूए और बाईक स्टार्ट करके आगे बढ़ गया।

'देखना, यह लड़का अब कभी भी बिना हेलमेट लगाए बाईक नहीं चलाएगा।' - दारोगा जी ने पास खड़े सिपाही की ओर देखते हुए आत्मविश्वास से कहा।

'जी सर।' सिपाही ने भी सहमति जताई। पर वह पूछे बिना नहीं रह सका - 'लेकिन ये ऐसे थोड़े न सुधरने वाले हैं सर?' 'सुधरेंगे, जरूर सुधरेंगे।' - दारोगा जी ने सिपाही की ओर देखते हुए कहा - 'ऐसा है....प्रेम में बड़ी ताकत होती है, जो बिगड़े-से-बिगड़े इंसान को भी सुधार देती है। और फिर, अगर ये न भी सुधरे, तो कम-से-कम हमारे लिए दुआ तो करेंगे? हमें गाली तो नहीं देंगे? जुर्माना लगाने से कहीं ज्यादा जरूरी है इन्हें एहसास दिलाना। समझे! काश, यही एहसास मेरे बेटे को भी हो गया होता, तो आज...।' - शब्द जैसे उनके मुँह में ही अटक गये थे, मगर आँखों से टपकते आँसुओं ने वह सब कुछ कह दिया था, जो वह छुपाना चाहते थे।

हम इंसान नहीं हैं!

शाम का समय था। सड़क एकदम सुनसान थी।एक भी आदमी आता-जाता नहीं दिखाई पड़ रहा था।

इसी बीच एक लड़की गली से बाहर निकली। सड़क पर सन्नाटा देखकर वह बुरी तरह घबरा गयी। डरते-डरते वह एक-एक कदम बढ़ा रही थी। वापस लौट भी नहीं सकती थी। जाना जरूरी था..खटिया पर पड़ी बीमार माँ के लिए दवा लाने।

उसकी धुकधुकी बढ़ती जा रही थी, और पैर भी डर के मारे काँप रहे थे। माथे का पसीना पोंछकर वह आगे बढ़ी, तो डर और बढ़ गया..आठ-दस कुत्तों ने आकर उसे सामने से घेर लिया। आगे जाने की उसकी हिम्मत ने जवाब दे दिया।

तब तक एक कुत्ता उसके सामने आया और उसकी ओर देखते हुए बोला - 'बहन, डरो मत। तुम जाओ। हम कुत्ते हैं, इंसान नहीं।'

रेखा शाह आरबी

पता- गिरजा इलेक्ट्रॉनिक, काशीपुर, (बलिया बैरिया रोड) बलिया (उप्र) पिन नंबर -२७७००१
मोबा. 8736863697

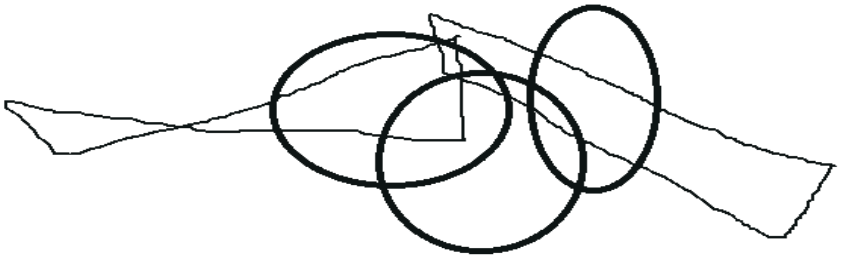

जिम्मेदारी

राम दरस जिस थाने में हवलदार की ड्यूटी पर तैनात था ..वहां का दरोगा बेहद ईमानदार और सबकी मदद करने वाला इंसान था एक दिन उसके थाने में स्वयंसेवी समाज दल के लोग आएं और उसके ईमानदार दरोगा से किसी चोरी के केस को लेकर बहस करने लगे और कहने लगे- पुलिस अपना काम कभी भी जिम्मेदारी से नहीं करती .. और इसी बात को लेकर बहस करने लगे ..दरोगा उन्हें समझा रहा था ... बहुत जल्द इस चोरी का पर्दाफाश होगा आप लोग शांति बनाए रखें तथा पुलिस का सहयोग कीजिए इस समस्या का भी हल निकल जाएगा ..पर कोई भी समझने को वहां पर तैयार नहीं था तभी वहां पर चल रहे टेलीविजन पर यह खबर प्रसारित होने लगा ...दो पुलिसकर्मियों का हाईवे पर एक्सीडेंट हुआ समय से चिकित्सीय सुविधा न मिलने से उनकी मौत और जनता तमाशबीन बनकर वीडियो बनाती रही..।

हमीदा बेगम

हमीदा बेगम जल्दी-जल्दी सामान बैग में रख रही थी .. उनकी पोती अंजुम एक कागज पर अपने अब्बु का मोबाइल नंबर लिख कर लाई और कपड़ों में रखते हुए दादी से कहा -'दादी अगर फोन बाई चांस डिस्चार्ज हो जाए तो यह अब्बु का नंबर है अब अकेले सफर कर रही इसलिए ऐतिहातन बैग में रख रही हूं।'

हमीदा बेगम कुछ नहीं बोली उनकी अनुभवी आंखों से अंजुम की उदासी ना छुप सकी.. फिर वह सामान लेकर बेटे के संग बस स्टैंड पर आ गयी बस में बहुत भीड़ थी वकार उन्हें बैठा कर घर चला गया बस चलने के आधा घंटा बाद कंडक्टर आया और टिकट के लिए पैसा मांगा.. पैसे देने के लिए जब पर्स खोजा तो हमीदा बेगम का पर्स गायब हो चुका था ..शायद किसी ने भीड़ का फायदा उठाकर उनका पर्स चुरा लिया हंगामा होने पर भी बस में उनका पर्स नहीं मिला शायद चुराने वाला किसी जगह उतर चुका था ..पर्स के साथ उनका मोबाइल भी चोरी हो चुका था बेटे से संपर्क भी नहीं कर पा रही थी.. फिर उन्हें अंजुम के रखे हुए कागज का याद आया तो उन्होंने मोबाइल मांग कर बेटे को फोन लगाया... वकार ने तुरंत फोन से कंडक्टर के खाते में पैसे भेज दिया और कुछ एक्स्ट्रा भी कंडक्टर के खाते में भेज दिया अपनी अम्मी को देने के लिए.. बहन के घर पहुंचने पर सबसे पहले उन्होंने बेटे वकार को फोन मिलाया और बोली-'वकार अंजुम का दाखिला लड़कों वाले स्कूल में कल करवा देना आखरी दिन है।'

वकार बोला - 'पर आपने ही तो मना किया था कि चाहे पढे या ना पढे.. लड़कों के साथ पढ़ने के लिए नहीं भेजा जाएगा।'

हमीदा बेगम - 'बेटे अब मैं समझ चुकी हूं कि हमारी अंजुम बहुत होशियार है उसको पढ़ाई से वंचित करना उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय होगा।'

पवित्र रिश्ता

शोभा को मायके आए हुए आज दो दिन हो गए। शाम के समय टहलते-टहलते वह पार्क के तरफ चली गई, जहां उसकी दादी अपनी सहेलियों के साथ बैठकर गप लड़ा रही थी उसने सब को नमस्ते किया और वह भी वहीं पर बैठ गई।

दादी की सहेली सुनंदा दादी ने शोभा से पूछा- 'बिटिया ससुराल के हाल-चाल बताओ।' तो वह उन्हें अपने परिवार वालों के बारे में बताने लगी तभी सामने से पारो दीदी गुजरती हुई दिखाई दी तो उसने चिल्लाकर पारो दीदी से 'नमस्ते' कहा जब पारो ने उसे देखा तो मुस्कुरा कर उसे भी 'नमस्ते' कहा... वह पास आना चाहती थी पर पता नहीं क्या सोच कर मुस्कुरा कर चली गई, उसके चले जाने के बाद सुमति दादी ने मुंह बिचकाया और बोली- 'शोभा बेटी तुझे क्या जरूरत है उस के जैसे लोगों से संपर्क रखने की।'

शोभा समझ नहीं पाई उसने सुमति दादी से कहा- 'दादी आप ऐसा क्यों कह रही हो पारो दीदी इतनी तो अच्छी हैं।' तो सुमति दादी ने कहा- 'क्या तुझे पता नहीं है इसका राजू के साथ अवैध संबंध है पति जब था तब तो थोड़ी गनीमत थी अब तो खुलेआम उसके घर में रहता है और आता जाता है एक नंबर की चरित्रहीन है पारो अपने बच्चों से भी शर्म नहीं करती।'

शोभा ने बात को बीच में काटते हुए कहा- 'दादी आप उन्हें चरित्रहीन कैसे कह सकती हैं क्या जिंदगी में एक बार गलत आदमी मांग भर दे तो उसके बाद लड़की की जिंदगी खत्म हो जाती है क्या उसे जीने का अधिकार नहीं रह जाता और रही बात पारो दीदी के पति मंगल की तो उस शराबी की पत्नी होने से अच्छा है विधवा या अविवाहित रहना अरे कौन सा सुख उसने पारो दीदी को दिया था बस एक ही सुख दिया था तीन-तीन बच्चे उसकी गोद में कम उम्र में थमा दिया और खुद होटल में काम करता था शराब पीकर पड़ा रहता था हफ्ते में एक बार उनसे मारपीट करने और पैसे छीनने के लिए चला आता था, कितने बार मोहल्ले वालों ने देखा कि वह सरेआम मारपीट कर पारो दीदी से रुपए छीन ले जाता है वह यह भी नहीं सोचता था कि खुद तो वह पैसे उन्हें नहीं देता है फिर वह बच्चों को क्या खिलाएगी वह तो राजू चाचा के डर से थोड़ा बाद में मारना-पीटना कम कर दिया और अपने शराब की लत से ही मर गया तब इसी राजू चाचा ने पारो दीदी को सहारा दिया जहां खुद काम करते हैं वहां पर उनको काम दिलवाया और अब पूरी जिम्मेदारी से पारो दीदी का साथ निभा रहे हैं साथ ही अपने परिवार को भी संभालते हैं... जिस राजू चाचा के साथ संबंध के चलते आप चरित्रहीन कह रही हैं उसी राजू चाचा की देन है कि पारो दीदी की दोनों बेटियां ब्याह करके अच्छे घरों में सुखी ससुराल जा चुकी हैं और बेटा भी काम करके अब अपनी मां का सहारा बन रहा है अगर उस समय राजू चाचा ना होते तो शायद पारो दीदी अपने बच्चों के साथ भुखमरी से खुदकुशी कर लेती या किसी गलत धंधे में पहुंच जाती क्योंकि एक जवान खूबसूरत औरत सबको मौके की तरह लगती है जिम्मेदारी की तरह नहीं!!!

पूरे समाज में यदि किसी ने यह जिम्मेदारी उठाई तो राजू चाचा थे और अब भी वह जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाते हैं पारो दीदी की भी तथा अपने परिवार को भी.. आज जब मैं खुद बाल बच्चे दार हूं तब मुझे यह बात समझ में आती है कितना मुश्किल होता है सारी जिम्मेदारियों को इस महंगाई के जमाने में निभाना जबकि हम दोनों मियां बीवी दोनों ही कमाते हैं फिर भी कुछ ना कुछ कमी रह जाती है तो सोचिए वह अकेली तीन तीन बच्चों के साथ किस प्रकार गुजर-बसर करती अगर उन्होंने किसी का हाथ ईमानदारी से थाम लिया तो मेरे लिए उस शराबी और जलील के रिश्ते से ज्यादा 'पवित्र रिश्ता' राजू चाचा और पारो दीदी का लगता है आपके लिए बेशक वह गलत होगा पर मेरे लिए रत्ती भर भी नहीं है।'

दादी शोभा की बातें सुनकर कुछ भी प्रतिउत्तर में नहीं बोल सकी...।

यादों की डाली

सुलक्षणा के पति को गुजरे महीने दिन भी नहीं बीते कि .. .उसके दोनों बेटे समर्थ और सागर बंटवारे पर आमादा हो गए। उनकी बंटवारे की बात सुनकर पहले से ही पति के दुख में दुखी सुलक्ष्णा चुप सी हो गई। एक तो पति के जाने का गम ऊपर से बेटों के बंटवारे का दुख अंदर ही अंदर तोड़ रहा था ..सागर और समर्थ ने मां के कमरे को छोड़कर बाकी कमरों का बंटवारा कर लिया। अब बात रह गई आंगन में दीवार उठाने की जिससे सब अपने हिस्से में चैन से रह सके ..लेकिन आंगन के बीचो-बीच खड़ा आम का पेड़ काटे बिना बंटवारा नहीं हो सकता था और जब पेड़ को काटने की बात चली तो सुलक्षणा चुप ना रह सकी... उसने अपने बेटों से कहा - 'तुमने जितना सब कुछ बांटना चाहा मैंने तुम्हें नहीं रोका लेकिन यह पेड़ मैंने और तेरे बापू जी ने एक साथ मिलकर लगाए थे.. साथ में उनके सावन के झूले को झूली हूं .. तुम लोग इन्हीं डालियों पर खेलते हुए और इसके फल खाकर बडे हुए.. मेरे जिंदा रहते यह पेड़ नहीं कट सकता ...' और फफक कर रोने लगी .मां के याद दिलाने पर सागर और समर्थ को एहसास हुआ कि सचमुच इस पेड़ के साथ कितनी यादें और कितने एहसास जुड़े हुए हैं ..उन्होंने पेड़ काटने का इरादा छोड़ दिया और घर के बंटवारे का भी...।

तिरंगे के पांच रंग

एक स्कूल में गणतंत्र दिवस की तैयारियां चल रही थी क्लास में टीचर बच्चों को तिरंगे का चित्र बनाकर बच्चों को तिरंगे के बारे में जानकारियां दी जा रही थी उसके बाद टीचर ने बच्चों से पूछा- 'अच्छा बच्चों बताओ तिरंगे में कितने रंग होते हैं!' सभी बच्चों ने उत्तर दिया- 'तीन रंग होते हैं सर।' लेकिन एक बच्चे ने उत्तर दिया- 'सर पाच रंग होते हैं।' टीचर को बहुत गुस्सा आया उसने कहा - 'अभी मैंने आप सभी लोगों को तिरंगे का चित्र बना कर दिखाया बताया सभी बच्चों ने सही उत्तर दिया पर तुम कैसे कह सकते हो कि तिरंगे में पांच रंग होते हैं जबकि मैंने तुम्हें अभी बताया कि तीन रंग होते हैं।'

बच्चे ने कहा- 'सर तिरंगे को जब मैंने देखा तो उसमें पांच रंग थे सफेद, केसरिया, हरा और बीच में चक्र नीले रंग का था.. और उस पर लाल रंग भी लगा था।'

अध्यापक ने पूछा- 'तुमने तिरंगा कहां पर देखा था।'

बच्चा रोते हुए कहने लगा- 'जब तिरंगे में मेरे पिताजी को लपेट कर लाया गया था।'

अध्यापक निशब्द होकर बच्चे को आंसू भरी आंखों से देखने लगा।

समीर उपाध्याय 'ललित'

मनहर पार्क ६६/ए, चोटिला- ३६३५२०
जिला- सुरेंद्रनगर गुजरात
मोबा. 9265717398
E-mail : upadhyay1975@gmail.com

मां अभी जिंदा है

छोटा बेटा कर्तव्य अपनी बयासी साल की वृद्ध मां की सेवा को ही अपना धर्म समझता था। 'मातृदेवो भवः' यही उसका जीवन मंत्र था।

बड़ा बेटा भाविक अपने परिवार समेत पास की सोसाइटी में ही रहता था। मां रोज अपने बेटे-बहू और बच्चों को याद किया करती। आखिर मां जो है! लेकिन उनके चेहरों को देखना मां के नसीब में.....।

आज भाविक चार-धाम की यात्रा करके मां से मिलने आया है। मां- 'बेटे, हर रोज तुम्हें, बहू और बच्चों को याद किया करती हूं। आज लगभग दो महीने बाद तुम्हारा चेहरा देखने को मिला। अब मेरे शरीर का कोई भरोसा नहीं। न जाने ईश्वर का कब बुलावा आ जाए!'

इतना बोलकर मां गहरी नींद में सो गई और खर्राटे लेने लगी।

भाविक- 'कर्तव्य, आज ब्रह्म-भोजन है। क्या तुम्हारे यहां न्योता आया है? जमींदार बादल सिंह आज अपने पितरों के पीछे ब्रह्म-भोजन करवा रहे हैं। हमारी पूरी बिरादरी को न्योता दिया है।'

कर्तव्य- 'हां, कल एक लड़का निमंत्रण पत्र दे गया है।'

भाविक- 'मां के जाने के बाद हमें भी पूरी बिरादरी को भोजन करवाना होगा। लोग बातें करेंग कि पांचों लड़के इतना कमाते हैं, फिर भी मां के पीछे ब्रह्म-भोजन नहीं करवाया।'

कर्तव्य मन ही मन- 'मां के जीते जी उनके पीछे ब्रह्म-भोजन करवाने की बात कहां तक उचित है? भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि मां सौ वर्ष की आयु पूरी करें और बड़ी धूम-धाम से उनका जन्म शताब्दी महोत्सव मनाऊं।'

भाविक- 'कर्तव्य, किस सोच में पड़ गए?'

बड़े भाई भाविक की मां के प्रति भावशून्यता और संवेदनहीनता को देखकर कर्तव्य को बड़ा आघात पहुंचा। अपने आंसुओं को रोक लिया और इतना ही बोल पाया- 'भैया, मां अभी जिंदा है।'

मुखौटा

सुशीला- 'बेटे वसंत, अपनी बहू से त्रस्त तुम्हारी बुआ हमारे यहां दस दिन रुक कर गई। बहू ने खूब देखभाल की और हररोज नई-नई वानगिया बनाकर खिलाई। जाते वक्त बहू से गले मिलकर भावुक होकर रो पड़ी।'

वसंत- 'मां, बुआ जीवन में पहली बार हमारे यहां आकर रुकी, तो हमारा यह कर्तव्य बनता है कि उनकी अच्छी तरह देखभाल करें।'

सुशीला- 'बेटे, मेरे हाथ पैर तो अब कहां चलते हैं! मेहमान-नवाजी तो बहू ने ही की है। अच्छा हुआ तूने शादी कर ली। हम दोनों की जिंदगी संवर गई। वरना मेरा तो बुढापे में क्या हाल होता भगवान ही जाने!'

इतने में बहू प्रज्ञा ने अपने कमरे से आवाज दी- 'सुनते हो जी, आपका टिफिन तैयार कर दिया है। मुझे आपसे कुछ बात करनी है। थोड़ी देर के लिए यहां आइए।'

वसंत- 'बोलो, क्या काम है? क्या बाजार से कुछ लाना है?'

प्रज्ञा- 'कल से वोकेशन की छुट्टियों के दिन हैं। मन करता है थोड़े दिन के लिए पीहर चली जाऊं।'

वसंत- 'अभी दो महीने पहले तुम एक सप्ताह रुककर आई हो और अब वापस? तुम जानती हो कि मां को अकेले घर में छोड़ना.... बाहर जाता हूं तो भी चिंता बनी रहती है कि कहीं फिसल न गई हो।'

प्रज्ञा- 'बड़ी दीदी का घर यहीं शहर में है। मां को एक सप्ताह वहां छोड़ आते हैं।'

वसंत- 'लेकिन उसके ऊपर भी संयुक्त परिवार की जिम्मेदारियां है।'

प्रज्ञा- 'ठीक है, आपके शाम को आने के बाद सोचेंगे।'

आज वसंत एक घंटा पहले घर वापस आ गया। प्रज्ञा कहीं दिखाई नहीं दी। ऊपर के कमरे में जाकर देखा तो वह मोबाइल में अपनी बहन के साथ बात कर रही थी- 'आज तो मैंने अपनी ननंद से कह दिया कि बुढ़िया को संभालने की जिम्मेदारी सिर्फ हमारी नहीं है। उसने आपको भी जन्म दिया है, इसलिए आपकी भी उनके प्रति जिम्मेदारी बनती है। मैं तो तंग आ गई हूं बुढ़िया से।'

प्रज्ञा के मुंह से यह सुनकर वसंत के पैरों तले जमीन खिसक गई और बिना बोले सीढ़ी के सोपान उतर गया। जीवन में आई पतझड़ को देख मन ही मन बोला- 'अब तक जिन्हें वह अपना समझता रहा वे क्या निकले? ऐसे लोग जो मुखौटा लगाकर जिंदगी जीते हैं! मुखौटे पे मुखौटा??? मुखौटे पे मुखौटा???'

कहीं तुम्हें मेरी नजर न लग जाए...

मिलन और मेघना की आज शादी की पांचवीं सालगिरह है। घर पर शाम को एक बहुत बड़ी पार्टी का आयोजन किया है। बड़ी धूमधाम के साथ मेहमान नवाजी होने वाली है।

मिलन- 'मेघना, आज मन करता है कि तुम्हारी इन लंबी काली-काली जुल्फों में उलझ जाऊं और लाल रंग के फूलों का ये ब्रोच लगाऊं।'

मेघना- 'बहुत खूब! आज बड़े रोमांटिक मिजाज में लग रहे हैं!'

मिलन- 'मैं चाहता हूं कि आज शाम पार्टी में तुम अपने लंबे काले बालों में लाल फूलों का ब्रोच लगाओ। बड़े प्यार से इसे बाजार से खरीद कर लाया हूं। इस ब्रोच को मेरी ओर से तुम्हें प्यार का तोहफा समझो।'

मेघना- 'आप कमरे की सजावट कीजिए। समय बहुत कम है। अभी मेहमान आ जाएंगे। मैं अपने कमरे में तैयार होने के लिए जा रही हूं।'

मिलन ने अकेले रंग-बिरंगे पताकों, गुब्बारों और फूलों से पूरे कमरे को सजाया। कमरे की सजावट में उसे पूरे दो घंटे लग गएं। मेघना ने अपने कमरे से आवाज लगाई- 'सुनते हो जी! अब मैं तैयार हो गई हूं। जरा मेरी साड़ी में पीन लगा दीजिए।'

मिलन तुरंत मेघना के कमरे में पहुंचा और देखा कि मेघना सज-धज कर तैयार हो गई है। मेघना के कहने के मुताबिक मिलन में उसकी साड़ी में पीन लगा दी।

मेघना- 'मेहमानों का आने का वक्त हो गया है। आप पांच मिनट में फटाफट तैयार हो जाइए।'

मिलन- 'मुझे कपड़े बदलने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।'

मेघना- 'मिलन, देखो यह काले रंग की गोल्डन बॉर्डर वाली साड़ी मुझे कितनी जच रही है! यह साड़ी मेरी मां ने भेजी है। यह पेंडल सेट देखो जो मेरी दीदी ने अहमदाबाद से भेजा है। मुझे बेहद पसंद आया। ये चूड़ियां देखो जो मेरी मौसी ने भेजी है। मैं कितनी सुंदर लग रही हूं!'

मिलन- 'बहुत सुंदर लग रही हो! तुम्हारी सुंदरता को चार चांद लग जाते यदि तुमने...'

मेघना- 'मतलब?'

मिलन- 'कुछ भी नहीं। बहुत सुंदर लग रही हो। तुम्हें देखकर ऐसा लगता है कि जैसे पूरी कायनात जमीन पर उतर आई हो!'

मेघना- 'अरे! आप पीछे क्यों मुड़ गएं?'

मेघना के बालों में लाल फूलों के ब्रोच को न देख कर अपनी व्यथा को दिल में दबा कर मिलन बोला- 'बस, इसलिए कि कहीं तुम्हें मेरी नजर न लग जाए।'

प्रेम की परिभाषा

प्रिया, आशा और निशा आज अपनी सहेली राधा के घर पर उसे मिलने आई हैं। तीनों अपने-अपने पति के साथ प्रेम-संबंधों की बातें शुरू करती हैं।

प्रिया- 'मेरे पति मेरी कोई बात टालते नहीं। इस बार तो वैकेशन की छुट्टियों में मुझे मनाली जाने की इच्छा है। मैं अपनी जिद पूरी करके रही। कल ही वे टिकट बुक कराके आये है। कितना प्रेम करते है मुझे!'

आशा- 'मेरे पतिदेव भी किसी से कम नहीं है। मुझे गहनों का बेहद शौक है। इस बार तो मेरे जन्मदिन पर बैंक से लोन लेकर मेरे लिए तीस ग्राम का सोने का पैंडल सैट लेकर आये। ये प्रेम नहीं तो और क्या है?'

निशा- 'मुझे तो हौटलों में खाना खाने का एक ही शौक है। वे कभी मना नहीं करते। रविवार की शाम घर पर रसोई बनाती ही नहीं।'

राधा- 'आप तीनों बातें कीजिए मैं चाय और नाश्ता लेकर आती हूं।'

प्रिया, आशा और निशा राधा की जिंदगी के बारे में बातें शुरू करती है। बेचारी, राधा की जिंदगी कितनी नीरस है! न कहीं आना और न कहीं जाना। गृहस्थी के बोझ को

झेल रही है। उसके पति बिल्कुल रोमांटिक नहीं है। लेकिन दोनों चेहरे पर हंसी की रेखाएं हमेशा बनी रहती हैं। आखिर इसका कारण क्या है? हमारी तो बार-बार पति के साथ अनबन हो जाती है! इतने में राधा चाय और नाश्ते की डिशें लेकर आती है।

प्रिया- 'राधा, तूं भी अपने पति के प्रेम के बारे में कुछ बता। हमें बड़ी जिज्ञासा है।'

आशा और निशा- 'हां...हां...कुछ तो बता अपने प्रेम के बारे में।'

राधा- 'हम दोनों ने मन से व्यापार को हटा दिया है। हम सिर्फ एक दूसरे के लिए जीते हैं। बिना बोले ही मन के भावों और विचारों को समझ लेते हैं। एक दूसरे के चेहरे को आसानी से पढ़ लेते हैं। हम सिर्फ देना जानते हैं। बदले में कुछ पाने की अपेक्षा नहीं रखते। एक दूसरे की खुशी में ही संतोष मिलता है। हम एक दूसरे के भक्त हैं और भगवान भी। हमें कहीं जाने की इच्छा ही नहीं होती। इस छोटे-से घरौंदे में ही जीवन की सारी सकारात्मक ऊर्जा मिल जाती है, क्योंकि हमारा प्रेम निरपेक्ष है।'

राधा के मुंह से प्रेम की परिभाषा सुनकर प्रिया, आशा और निशा लज्जित और चुप हो गई। तीनों में से किसी की आगे एक भी सवाल पूछने की हिम्मत नहीं हुई।

सच्चा अभिषेक

शिवांश और उमा की शादी हुए पांच साल हो गएं थे। लेकिन आंगन बच्चे की किलकारी के बिना सूना था।

उमा ने अब भक्ति में मन लगा दिया था। शिवांश ऑफिस चला जाता और उमा अपना अधिकांश समय पूजा, पाठ, व्रत, जप और तप में व्यतित करती।

श्रावण मास चल रहा था। उनकी सोसायटी के शिव मंदिर में लोगों ने १९७ लीटर दूध से शिवाभिषेक का आयोजन किया था। उमा को अभिषेक करने की बड़ी इच्छा थी। उसने शिवांश से कहा- 'सुनिए जी, जल्दी तैयार हो जाइए। आज हमें शिवाभिषेक करना है।'

इतने में उनके द्वार पर आवाज सुनाई दी- 'मां, दो दिन से कुछ खाया नहीं। कुछ दे दो।' शिवांश ने बाहर निकलकर देखा तो आठ-दस साल का एक अधनंगा मासूम बच्चा लाचार मुंह किए खड़ा था।

शिवांश ने पूछा- 'बेटे, कहां रहते हो?'

बच्चा- 'यहीं पास वाले मैदान में एक कोठरी में।'

शिवांश- 'घर में और कौन-कौन है?'

बच्चा- 'बाप था, लेकिन शराब पीकर मर गया। मां है और दादी अम्मा।'

शिवांश ने उमा से कहा- 'उमा, पहले मेरे साथ चलो इस बच्चे के घर।'

उमा- 'लेकिन हमें तो अभिषेक के लिए....।'

शिवांश- 'नहीं, पहले मेरे साथ चलो। आज का अभिषेक वहीं होगा।'

शिवांश और उमा उस बच्चे को लेकर उसकी कोठरी पर पहुंचे। जाकर देखा तो बच्चे की मां एक मैली-सी चादर से अपने बदन को ढंककर मायूस चेहरा लेकर बैठी थी। कोठरी बिल्कुल खाली थी। एक मटमैली खटिया पर बूढ़ी दादी अम्मा पड़ी-पड़ी कराह रही थी। यह देखकर शिवांश का दिल द्रवित हो गया। उसने उमा से कहा- 'तुम यहीं ठहरो। मैं बाजार से कुछ सामान लेकर आता हूं।'

थोड़ी देर में शिवांश बाजार से दो-तीन साड़ियां, बच्चे के लिए कपड़े और खाने-पीने की बहुत सारी चीजें लेकर वापस आया। बच्चे की मां और दादी अम्मा में जैसे शक्ति का संचार हो गया। दादी अम्मा खटिया से खड़ी हो गई और बोली- 'बेटे, भगवान तुम्हारी झोली खुशियों से भर दें। दूधो नहाओ और पूतों फलो।'

शिवांश एक आत्मसंतोष की भावना के साथ उमा को लेकर घर वापस आया। शाम को उमा की तबीयत कुछ बिगड़ गई। शिवांश उमा को लेकर अपने डॉक्टर मित्र के पास गया। डॉक्टर ने जांचकर कहा- 'गजानन के आगमन की तैयारी कीजिए। उमा के उदर में गर्भ पल रहा है।'

शिवांश और उमा के चेहरे खुशी से खिल उठे। शिवांश- 'उमा, यह हमने कल किए हुए अभिषेक और दादी अम्मा के दिल से निकली हुई दुआओं की फलश्रुति है। यही है सच्चा अभिषेक।'

आज उमा ने शिवांश से सच्चे अभिषेक के मर्म को जाना। मातृत्व के एहसास की खुशी में उसकी आंखों से अश्रु छलक आएं।

राजेन्द्र ओझा

रायपुर, छत्तीसगढ़
9575467733
8770391717

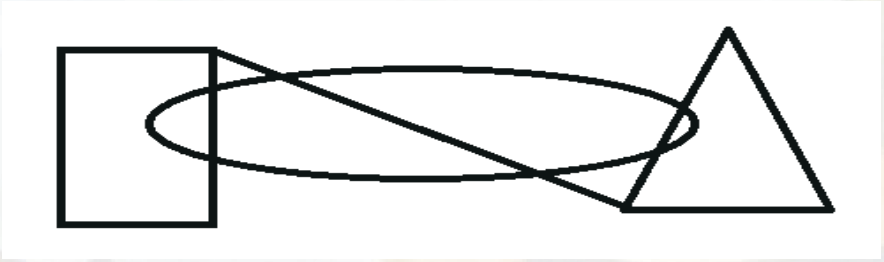

फूल

मुझे क्यों तोड़ रहे हो - फूल ने कहा
तुम तो पैदा ही इसीलिए हुए हो - उसने कहा
नहीं, मुझसे बीज भी बनाए जा सकते हैं - फूल ने कहा।
ओह, मुझसे ये कैसी उम्मीद।
और ... कोमल होना क्या लाचार होना भी है ?

इरादे

हलो
नमस्कार
अरे, मैंने तो मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया था।
मिलाने? या पकड़कर खींचने के लिए?
अ अ तुम्हें कैसे पता चला ?
इरादे पहले, हाथ बाद में दिखाई पड़ते हैं।

बचाओ

बचाओ - बचाओ, वह चिल्ला रहा था।
कहां हो भाई, मैं तो तुम्हें ही ढूंढ रहा हूँ- जनसेवक ने कहा।
अरे यहां, नीचे गड्ढे में-चिल्लाना फुसफुसाहट में बदल गया था।
ओह, लेकिन मैं तो तुम्हें देख नहीं पा रहा हूं- जनसेवक ने कहा।
दबे-कुचलों को देख कैसे पाओगे, इतनी तोंद जो निकली हुई है- वह गिडगिडाया।
अरे, ऐसा है क्या, तो मैं आता हूं- जनसेवक ने कहा।
कहां चले हुजूर - आवाज में अब दया भी घुल गई थी।
तोंद कम करने, तभी तो तुम्हें देख पाऊंगा, बचा पाऊंगा - जनसेवक ने विश्वास दिलाया।
अरे लेकिन तब तक तो मैं ...
अब भैया ये तो तुम पर है, तुम किस रूप में निकलना चाहते हो। जिंदा या मेरा काम तुम्हें निकालने भर का है।
गड्ढे में सब दब जाता है, बहुत बार आवाज भी।

कार

देखो 'कार' लगी हुई है मेरे साथ।
उसने चहकते और मुझे लगभग चिढाते हुए कहा।
मैने देखा, फिर 'हां' कहा और पूछ लिया- तो क्या हुआ?
अरे, मतलब कम से कम चार लोगों को अपने साथ रख सकता हूं।
ओह, तभी मैं सोचूं, तुम कुछ भी लिख देते हो, चार लोग 'ताली' बजा ही देते हैं।
हां भइया, ठंड और बरसात में पकौड़े और गरमी में छाछ भी पिलाता हूं इनको।
हां, तब ही तो 'ताली' की गूंज दूर तक भी जाती है।
वे चार भी हमारी यह बात सुन रहे थे और 'ताली बजाने' शब्द के किसी और निहितार्थ को समझ भी रहे थे, लेकिन थे व्यंग्य 'कार' के साथ ही, सो चुप बैठे थे।
अब तक वह भी मेरी भाषा को ताड़ गया था और बोला - यार, तुम तो मेरा खेल बिगाड़ दोगे।
मैंने कहा- खिलाए हो नमक, चेहरे पर तुम्हारे वो बिखेरेंगे ही चमक।
मैं वहां से निकल गया।
वे चारों 'कार' के साथ चाय की चुस्की में मगन हो गए।
'कार' ने पकौड़ा नहीं खिलाया नमक पर विश्वास घुलने लग गया था।

शिक्षा

यह सुबह का वह वक्त था, जब लोग निकलते हैं तो उसे 'मोर्निंग वॉक' कहते हैं। कई लोगों का मोर्निंग वॉक का समय वह होता है जो बहुत से लोगों का ऑफिस वॉक का समय होता है।
वह अपने करीब तीन-चार साल के बेटे के साथ घूमने निकला था, और रोज की तरह उनका कुत्ता भी उनके साथ था। घूमते-घूमते उनका बेटा कभी इधर तो कभी उधर हो जाता तो वे कहते- कहां घूम रहा है बे इधर-उधर, ठीक से नहीं चल सकता।
कुत्ते के इधर-उधर हो जाने पर वे पहले सिटी बजाते और फिर कहते- हलो, हलो। कम, कम। कम हियर। कुत्ता दुम हिलाते हुए आ जाता और वो उसे गोद में उठा लेते।
उन्हें नहीं पता था, लेकिन बच्चा शिक्षित हो रहा था।

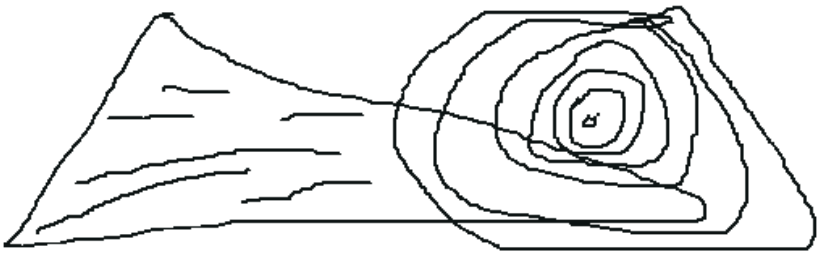

शिल्पी शर्मा 'निशा'

ग्राम : रहसू
पोस्ट : सिन्धुआ बाँगर
जिला : कुशीनगर , उत्तरप्रदेश
मोबा. - 7985504415

उछल रहा चीनू

घर में मातम सा माहौल बना हुआ था, परन्तु महामारी की विभीषिका से अनजान चीनू खुशी के मारे उछल-उछल कर खेल रहा था कि उसके घर में भी कोरोना आ गया।

३ साल का चीनू अपनी माँ से पूछता - मम्मी तुम इतनी दुखी क्यों हो? अब तो अपने घर में भी कोरोना आ गया ना! इस अबोध बालक को समझाते हुए पापा ने कहा - बेटा यह एक जानलेवा बीमारी है। जो व्यक्ति में एक दूसरे को छूने से फैल रही है। यह बीमारी मुझे और आपकी मम्मी को भी हो गई है। अब आप कुछ दिन हमसे दूर रहेंगे, जिससे आप तक न फैले और हम सब जल्दी से ठीक हो जाएंगे।

बातों को सुनते हुए चीनू ने अनायास ही गुनगुनाया - 'जीत जाएंगे हम तू अगर संग है, जिंदगी हर कदम एक नई जंग है।'

अचानक से गाये हुए इस गाने को सुनकर उसके मम्मी पापा जोर से हंसने लगे। छोटे से बच्चे से मिली इस प्रेरणा और शरारतों को देखते हुए वे सब जल्द ही ठीक हो गए। एक बार फिर से उस घर में चीनू की हंसी गूंजने लगी।

सोनार का कचरा

आज सुबह से ही घर में रौनक है। क्योंकि आज बुआ आई हैं। जिससे हम सब बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं है। अब तो मजे ही मजे हैं। हम सब रोज घूमने जाएंगे।

हम उनके साथ रोज घूमने जाते। एक दिन बुआ बोली - तुम जल्दी से तैयार हो जाओ। आज हम लोग बाजार जल्दी जाएंगे। आज मुझे सोनार के यहाँ भी जाना है। इतना सुनते ही मैं उछल पड़ी। आनन-फानन में तैयार हो गई और बुआ के साथ बाजार पहुँच गई।

बुआ- चलो अच्छा है समय से निकले हैं। ऐसा कहते हुए हम सोनार की दुकान में पहुँच गए।

आइए, आइए की आवाज सुनकर हम सब हँसते हुए बैठ गए। अब बुआ अपनी पोटली में से एक पुरानी अँगूठी के साथ सोने के कुछ महीन टुकड़े निकालकर सोनार को दिया।

भइया इसका वजन करो, जरा देखो कि कितने तक का होगा? इसे बदलकर मुझे कान के लिए लेना है।

सोनार अँगूठी को प्लेट में रखा और बाकी टुकड़ों को हटाते हुए कहा- बहन जी इससे बड़े टुकड़े तो हम कचरे में फेंक देते हैं। इतना कहकर सोनार उन टुकड़ों को फेंकने लगा। इतना देखते ही बुआ गुस्से में बोली - तुम्हारे लिए सोनार का कचरा है, मेरे लिए जीवन की पूँजी। रहने दो मुझे कोई गहने नहीं बनवाने।

इतना कहकर बुआ उन टुकड़ों को आँचल में समेटती हुई बोली- चलो घर चलें।

काली माई

उधर नजर पड़ते ही अचानक मुँह से निकल पड़ा- अरे वाह! इतना सुंदर डांस कौन है ये? कितनी सुंदर लग रही है, इसका लहंगा देखो जैसे इसी के लिए बना हो।

तारीफ के यह बोल उसके कान में शीशे की तरह चुभ गए। झटके से उसने जबाब दिया- अरे मैं हूँ काली माई पहचाने नहीं। जिसका तुम हमेशा मजाक बनाये और रिश्ता तोड़ कर चले गए थे।

इतना सुनते ही राजीव सन्न रह गया मानो पैर तले जमीन खिसक गई हो। अब वह बगल में खड़ी अपनी पत्नी को देखने लगा जो राजीव को गुस्से में घूरे जा रही थी।

राजीव- कैसी हो कनक? इस समय तुम यहाँ? किसके साथ आई हो?

कनक - (हँसते हुए) आज यहाँ मेरी शादी का संगीत है। परसों मेरी शादी है। लेकिन तुम यहाँ कैसे?

राजीव- मैं अपने बॉस की शादी में आया हूँ।

हँसती हुई कनक राजीव को अपने होने वाले पति से मिलवाई तो राजीव देखकर दंग रह गया। क्योंकि कनक के पति कोई और नहीं उनका बहस ही था।

राजीव- (लड़खड़ाते हुए) बधाई हो सर।

ऐसा कहकर राजीव भूले हुए पथिक की तरह राह पूछते हुए जाने लगा।

रूपा

आज रूपा की महफिल में घुँघरुओं की आवाज नहीं आ रही थी। चारों तरफ सन्नाटा था। क्योंकि आज उसकी बेटी ने अपनी माँ से पहली बार कुछ सवाल किए थे।

रूपा एक वेश्या है। जिसके यहाँ नाच-गाना, पुरुषों को रिझाना आम बात थी। उसने यह कभी नहीं सोचा था कि उसकी बेटी ऐसे सवाल पूँछ बैठेगी।

बेटी- ये सब कौन हैं? हमारे घर इतने लोग क्यों आते हैं? माँ क्या मुझे भी बड़े होकर यही करना पड़ेगा?

माँ मैं पढ़ना चाहती हूँ। तुम मुझे पढाओगी ना?

इतना सुनते ही रूपा घुँघरुओं को हाथ में लेकर बैठ गई और मन में उठ रहे तूफान में डूबने-उतराने लगी। रूपा अपने बचपन को याद करने लगी। किस तरह वह अपने माता-पिता की लाडली हुआ करती थी। अपनी जिद और गलतियों के कारण वह आज इस नरक में पहुँच गई।

पुराने दिन याद करके रूपा अपने आपको रोक न सकी और अपनी बेटी को पकड़कर फफक-फफक कर रोने लगी।

बेटी- क्या बात है माँ? तुम कुछ बोल क्यों नहीं रही? जबाब दो।

रूपा- हाँ बेटा, मैं तुम्हें जरूर पढ़ाऊंगी। जिससे तुम समाज में सर उठाकर जी सको, सही और गलत का निर्णय ले सको।

यह बात सुनते ही रूपा की बेटी हँसने लगी। उसको हँसता देखकर रूपा ने कहा- सामान बाँध लो बेटा, अब हम यहाँ नहीं रहेंगे।

मझली बहू

आज घर में त्यौहार जैसा माहौल है। क्योंकि बहू को विदा कराने उसके मायके वाले आने वाले हैं। सभी लोग किसी न किसी काम में व्यस्त हैं। हंसते-मुस्कुराते दोपहर से रात हो गई लेकिन घर में बिजली का अभी तक कोई पता नहीं था।

बाहर से आवाज आई- बहू कहाँ हो? जरा देखना लाइट क्यों नहीं आई? कुछ सूझ नहीं रहा कहाँ क्या रखा है।

बहू - जी माँ, देखती हूँ। (अंदर से आवाज आई)

सासू माँ - अच्छा छत पर जा रही हो तो घूँघट करके जाना। नहीं तो लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे, कि बहू को घूँघट करना भी नहीं सिखाया।

जैसे - तैसे बहू छत पर गई और हाथ में बड़ा सा डंडा लिए खम्भे से बिजली ठीक करने लगी। थोड़ी देर के प्रयास से घर में बिजली आ गई , और बहू ने पूरे विश्वास के साथ घूँघट को हटाकर अपने जीवन में रोशनी भर दी। नीचे आँगन में सभी लोग बैठे थे। बहू सर ढककर चेहरे को खोले हुए नीचे आकर बोली - माँ बिजली ठीक हो गई।

(सास एकटक बहू को देखती हुई इशारे में कुछ समझाती हुई) बहू देर हो रही है , जाओ अब काम कर लो।

बहू - (बगल में बैठती हुई) अभी नहीं माँ , पहले सबसे बात कर लूँ काम तो चलता रहेगा।

सासू माँ - (बहू के भाव समझकर सबसे परिचय कराती हुई) ये मेरी मझली बहू है। शिक्षित, साहसी और कुशल गृहणी।

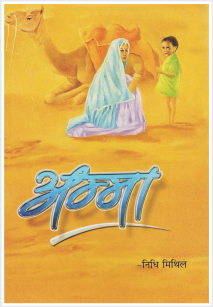

ओपन डोर की प्रस्तुति

७ जुलाई २०२२ से प्रत्येक माह की ७ तारीख को
धारावाहिक रूप में पढ़ सकेंगे निधि मिथिल का उपन्यास

'अम्मा'

व्यग्र पाण्डे

कर्मचारी कालोनी, गंगापुर सिटी,
सवाई माधोपुर (राज.) ३२२२०१
मोबाइल नंबर- 9549165579
E-mail : vishwambharvyagra@gmail.com

मास्टर जी

सड़क के दोनों ओर पेड़ों की कतारे थी। पेड़ों की कतारों से सड़क की शोभा को चार चाँद लगे हुये थे। सैकड़ो की संख्या में हर आयुवर्ग के लोग प्रभात-भ्रमण हेतु उस ओर खिंचे चले आते थे। पिछले कुछ दिनों से एक शिक्षक भी हमारे संग घूमने आने लगे थे वो अभी-अभी स्थानांतरित होकर इस शहर में आये थे। अचानक एक सुबह हम सब को रोक कर शिक्षक बोले- 'आप सब इन नीमों को देखकर क्या सोचते हो? जरा बताइये।' हम में से एक बोले- सोचना क्या? हम सब घूमने आते हैं और रोज इनसे दातुन तोड़ कर दातुन करते हैं, बताया भी गया है कि नीम की दातुन स्वास्थ्य के लिए अच्छी होती है।

'क्या आपने अन्य पेड़ों की तुलना में इन नीम के पेड़ो की दशा पर भी ध्यान दिया, शिक्षक ने कहा, ये नीम के पेड़ कक्षा में कुपोषण के शिकार बच्चों की भाँति सबसे अलग-अलग से दिखाई नहीं दे रहे, इनकी इस दशा के उत्तरदायी क्या हम सब नहीं! बताइये, आधे शहर की दातुन की जिम्मेदारी क्या यें निभा पायेंगे!! हम सब उनकी बात सुनकर चकित रह गये। हममें से एक बुजुर्ग ने कहा- मास्टरजी, इस तरह तो हमने सोचा ही नहीं, लेकिन देर आयद-दुरस्त आयद अब हम दातुन नहीं तोड़ेंगें साथ ही अन्य को भी समझायेंगे। कुछ दिनों बाद गर्मियों की छुट्टी बिताने मास्टरजी अपने गाँव चले गये।

आज एक जुलाई है। मास्टर जी, अपने गाँव से छुट्टियां बिताकर सुबह वाली बस से शहर आ रहे हैं। जैसे-जैसे शहर करीब आने लगा, उनकी आँखे कुछ अधीर होने लगीं अचानक बस की खिड़की से क्या देखते हैं कि उन नीमों की डालियों पर नव कोंपलें हिल-हिल कर आने जाने वालो का अभिवादन कर रही थीं, अब वो कुपोषित बच्चों जैसे नहीं लग रहे थे। ये दृश्य देखकर मास्टर जी के चेहरे पर मुस्कान बिखर गयी। इस रहस्य को बस में अन्य कोई भी नहीं समझ पाया।

भिखारी

सरकारी दफ्तर में अपना काम निपटा, मैं जल्दी-जल्दी स्टेशन आया। गाड़ी एक घंटे बिलम्ब से आ रही थी। मैंने घर से लाये पराठें निकाले और खाने लगा। तभी एक भिखारी जो हड्डियों का ढांचा मात्र था मेरे पास आकर, हाथ फैला कर चुपचाप खड़ा हो गया। भिखारी के एक हाथ में पहले से ही मांगी गई, रोटियों से भरी एक बड़ी पालिथिन की थैली मौजूद थी। एक बार तो मुझे लगा कि इसने इतनी रोटियाँ मांग रखी है फिर ये, अब क्यों मांग रहा है? मैंने बेमन भिखारी को एक परांठा दे दिया। वह फिर सामने खाना खा रहे एक दम्पति के पास जाकर खड़ा हो गया। दम्पति ने उसे कहा-'यहाँ आके क्यों खड़े हुए हो, खाना खाने दो, आ जाते हैं ना जाने कहाँ-कहां से' वह भिखारी फिर, किसी तीसरे के पास जाके खड़ा हो गया भीख माँगने, इस बीच मेरा खाना पूरा हुआ मैं स्टेशन के बाहर प्याऊ पर ठण्डा पानी पीने गया तो मैं क्या देखता हूँ कि वही भिखारी कुत्तों, सुअरों को मांगी हुई रोटियां समभाव से खिला रहा है और वे सभी जानवर पूंछ हिला-हिला कर उस भिखारी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं। इस दृश्य को देखकर कुछ देर के लिये तो मैं पानी पीना ही भूल गया फिर मैंने पानी पिया और वापस स्टेशन पर ट्रेन की प्रतिक्षा में आके बैठ गया। थोड़ी देर बाद वही भिखारी, मुझसे कुछ दूरी पर एक सवारी के पास खड़ा दिखाई दिया जो खाना खा रही थी ...

अंतर कैसा?

शहर में बलवा फैल गया। चारों तरफ चित्कारें, अफरा-तफरी, धुआँ के गुबार, आपस में पड़ौसी ही जान के प्यासे बने हुए थे। हमारी सच्चरित्र पुलिस दूर से खड़ी-खड़ी उस दृश्य को बिना हाथ-पैर हिलाये देख रही थी। हाँ, कभी कभी ये जरूर कहकर अपना दायित्व निभाने का प्रयास किया जा रहा था कि अरे भाई! अब तो रहने दो, बहुत हो गया। क्या, पूरे शहर को ही जलाने का इरादा है? पूरा शहर सहमा-सहमा सारी रात सो नहीं पाया। सुबह अखबारों में दंगाइयों के कुकृत्य व जले हुए शहर की फोटो के साथ एक विशेष फोटो भी छपी हुई थी जो आसपास के क्षेत्र में विशेष चर्चा का विषय बनी। फोटो एक सिपाही की थी जो एक जलते हुए मकान में से एक छोटे बालक और उसकी माँ को, आग से बचा कर सुरक्षित निकाल कर ला रहा था। जवान जिसने स्वयं की परवाह किए बिना उस कठिन कार्य को अंजाम दिया। दूर-दराज में लोग अखबारों को बार-बार पढ़कर पुलिस के इस दो तरह के चरित्र पर आपस में विचार रखते हुए ये कह रहे थे कि जब पुलिस-पुलिस एक तो फिर ये 'अंतर कैसा?' डर में भी इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ रह थे और इसके अलावा समान्य आदमी कर भी क्या सकता था।

पिल्ला पीहर का...

यूँ तो जीव-प्रेम के लिए पूरा शहर जे पी को बखूबी जानता था। उन्हें गली-मोहल्ले, यहाँ-वहाँ, कहीं भी कोई खूबसूरत या दुःखी जानवर या पक्षी मिल जाता तो वो उसे घर ले आते और पालते और उसकी देख-रेख भी स्वयं जे पी को ही करनी पड़ती, कारण कि उनकी इस आदत से पत्नी बिल्कुल भी सरोकार नहीं रखती थी। इस कारण ना चाहते हुए भी लाये गये जानवर जे पी को कुछ दिन बाद बापस छोड़ कर आने पड़ते। पर कुछ अंतराल के बाद फिर कोई दूसरा मेहमान घर में आ जाता और फिर घरवाली की नाराजगी के कारण उन्हें किसी जान पहचान वाले को देकर आना पड़ता। ये क्रम वर्षों से चला आ रहा था। पिछले पखवाड़े जे पी को अपने ससुराल जाना पड़ा। वहाँ उन्हें एक सुन्दर सा कुत्ते का पिल्ला पसंद आ गया। ससुराल वाले भी जे पी की इस आदत से बखूबी परिचित थे। बापस आते समय सासु माँ ने ग्यारह सौ रुपये के साथ नारियल की जगह वह पिल्ला भेंट के रूप में प्रदान किया। अपने जीव-प्रेम के संस्कारों के कारण जे पी मना नहीं कर सके और झिझकते झिझकते पिल्ले को ले आये। घर में प्रवेश करते ही श्रीमती के प्रश्नों की बौछारों का सामना करना पड़ा पर ये पता चलने पर कि ये पिल्ला अपने घर वालों की कुतिया का है और माँ ने स्पेशल रूप से विदा में दिया है तो अचानक वो बौछारें रुक गयी। और दौड़ कर श्रीमती ने उस पिल्ले को गोद में उठा लिया और चूमने लगी और तुरंत ही चेहरे पर मुस्कराहट बिखेरते हुए कहा कि ये काम आपने अच्छा किया जो इस पिल्ले को यहाँ ले आये। पर जे पी को इस बात का डर सता रहा था कि कुछ दिनों बाद इसे भी बापस ससुराल पहुँचाना पड़ेगा। पर आज उस पिल्ले को लाये हुए दो महीने हो गये, घर में कोई तू-तू मैं-मैं उसे लेकर बिल्कुल नहीं। पिल्ले से संबंधित सभी कार्य यहाँ तक उसकी पोटी की सफाई भी बड़ी जिम्मेदारी के साथ खुशी खुशी स्वयं श्रीमती कर लेती हैं। पिल्ला जो ठहरा पीहर का ...।

पानी के छींटे

कल्याणी पुराने विचारों की एक धार्मिक महिला है। इस बात को पूरा मोहल्ला जानता भी था। वह अपने बहु-बेटे के साथ रहती थी। उसकी बहु पढ़ी-लिखी व आजाद खयालातों की थी। कल्याणी के सहज स्वभाव का फायदा उठाते हुए बहु हमेशा कुछ न कुछ सास से कहती रहती, पर सास कुछ भी नहीं कहती। हाँ, अंदर ही अंदर परेशान रहने लगी थी। आज शीतलाष्टमी थी दोनों सास-बहु ने शीतला मंदिर में जाकर शीतला माता का पूजन किया। उस दरम्यान कल्याणी को किसी महिला ने एक उपाय बता डाला की तुम घर जाकर अपनी बहू पर इस पूजा-कलश के पानी के छींटे देकर शीतला माता से प्रार्थना करना, देखना शायद, बहु के स्वभाव में परिवर्तन आ जाये। दोनों घर पहुँची, कल्याणी ने घर के बरामदे में बहू को डरते-डरते रोका और छींटे देने लगी। बहू ने कहा- ये क्या कर रही हो? सास माँ! सास ने झिझकते-झिझकते कहा- 'तेरा स्वास्थ्य अच्छा बना रहे, बस इसके लिए। पढ़ी-लिखी बहू सब कुछ समझ गई थी उसने उस दिन से सास के प्रति अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लिया। यूँ तो शीतलाष्टमी वर्ष में एक बार ही पूजी जाती है पर कल्याणी ने अबकी बार पन्द्रह दिन बाद ही अपनी बहू से पुनः पूजन के लिए चलने को कहा। दोनों पूजन करके घर बापस लौटी तो बहू ने मुस्कुराते हुए सास माँ से कहा- 'आज भी मुझ पर छींटे दीजिए' तो कल्याणी ने भी मुस्कुराते हुए कहा- 'अब इसकी जरूरत नहीं है।'

साप्ताहिक ओपन डोर को आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

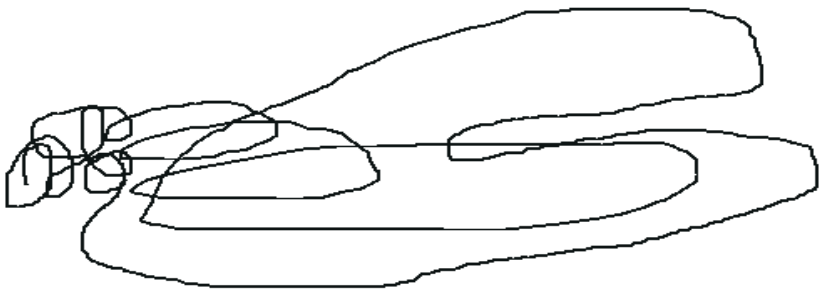

सतेन्द्र शर्मा 'तरंग'

५, राजपुर मार्ग,
देहरादून (उत्तराखंड)
मोबा. 9258513939
E-mail : satendratarang@gmail.com

हिन्दी की विजय

रामबाबू की पुत्री शालिनी के हिन्दी माध्यम से शासकीय सेवा में चयन के समाचार से घर में खुशी की लहर दौड़ गयी।

रामबाबू भावातिरेक में शालिनी को सीने से लगाये बड़बड़ा रहे थे... 'आज हिन्दी की विजय हुई है...बेटी! तूने उन सबका मुंह बन्द कर दिया जो मुझे ताना देते थे कि हिन्दी माध्यम से बेटी को शासकीय सेवा में भेजने का स्वप्न कभी साकार नहीं होगा।'

शालिनी ने पूछा, 'बापू आप धीरे-धीरे क्या कह रहे हैं।'

एक सरकारी कार्यालय में मुख्य लिपिक के पद पर कार्यरत रामबाबू को वर्षों पहले बीता हुआ कुछ याद आ गया।

बेटी शालिनी....'तुम्हें पहली कक्षा में हिन्दी माध्यम के विद्यालय में प्रवेश दिलाते समय मुझे इस बात का खेद हो रहा था कि मेरी आर्थिक स्थिति तुम्हें अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में प्रवेश नहीं करा पायी'... रामबाबू ने कहा।

रामबाबू के समक्ष यादें तैरने लगीं, 'परन्तु मैंने तुम्हारी योग्यता को देखकर तुम्हारे लिए शासकीय सेवा का स्वप्न देखा। मेरे सहकर्मी मेरी हंसी उड़ाते, ताने मारते कि हिन्दी माध्यम से पढ़कर भी भला कोई शासकीय सेवा में जा सकता है।'

कोई कहता कि रामबाबू मुंगेरीलाल की तरह हसीन सपने देखता है। दुनिया की बातें सुनकर कभी-कभी मुझे भी लगता कि मैं खयाली पुलाव पका रहा हूं।

रामबाबू भावुक स्वर में कहे जा रहे थे, 'बेटी शालिनी आज तुमने सिद्ध कर दिया कि 'हिन्दी की शिक्षा' भी बड़ा पद दिला सकती है।'

'तुमने मुझे और उन सभी को करारा जवाब दिया है जिन्हें अपनी मातृभाषा पर विश्वास नहीं है।'

शालिनी ने तब अपने बापू से कहा....'पिताजी! मातृभाषा हमारे लिए गौरव और सम्मान का प्रतीक है। मातृभाषा हिन्दी हमारी शक्ति है। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं अपनी मातृभाषा हिन्दी की शिक्षा के कारण ही इस पद पर आसीन हुई हूं।'

प्रार्थना की शक्ति

शुभम के मन में अक्सर प्रश्न उठता कि जब कर्म प्रधान है तो फिर प्रार्थना करने से क्या लाभ। उसकी माताजी धर्म-परायण स्त्री थीं और प्रार्थना की शक्ति के विभिन्न उदाहरण देकर शुभम को समझाती थीं, परन्तु शुभम कहता कि... यदि मैं पढ़ूंगा नहीं तो क्या प्रार्थना करके उत्तीर्ण हो जाऊंगा। आखिरकार माताजी चुप हो जातीं।

एक दिन शुभम की माताजी गम्भीर रूप से बीमार हो गयीं। अच्छे अस्पताल में उन्हें भर्ती कराया गया। योग्य चिकित्सक द्वारा उनकी चिकित्सा की जा रही थी। शुभम अपनी माताजी से बहुत प्यार करता था। वह अत्याधिक परेशान हो गया। उसकी बेचैनी खत्म ही नहीं हो रही थी।

शाम को जब शुभम अस्पताल से घर आया तो स्वयं ही पूजा कक्ष में जाकर प्रभु के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा।

धीरे-धीरे उसके मन को सांत्वना मिलती जा रही थी और उसके मन में अपनी माताजी के स्वस्थ होने का विश्वास उत्पन्न होता जा रहा था। प्रार्थना करने के उपरांत वह एक अदृश्य शान्ति का अनुभव कर रहा था।

कुछ दिन बाद जब उसकी माताजी पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर घर आ गयीं तो उसने यह बात उन्हें बतायी।

माताजी ने कहा... 'बेटा! मुझे स्वस्थ करने के लिए चिकित्सक ने तो अपना कर्म किया ही... परन्तु प्रार्थना से मुझे अपनी बीमारी से लड़ने के लिए शक्ति और विश्वास प्राप्त हुआ और तुझे इस विषम परिस्थिति में धैर्य और शान्ति प्राप्त हुई।'

तब शुभम बोला... 'हां मां! मैं समझ गया कि कर्म तो प्रधान है ही, परन्तु कर्म करने की शक्ति और कर्म की सफलता का विश्वास हमें प्रार्थना से ही मिलता है।'

घर छिनने की पीड़ा

सेठ अनुभवीलाल की अनुभवी दृष्टि ने भांप लिया था कि यदि छः लेन सड़क उनके बाग के बीच से निकले तो उनके वारे-न्यारे हो जायेंगे। उन्होंने अपने पैसों की ताकत से बाग के बीच से सड़क के गुजरने की मंजूरी सरकारी महकमों से ले ली। पेड़ काटने की अनुमति जैसे दुष्कर कार्य को भी वन विभाग के कुछ भ्रष्ट अधिकारियों ने रिश्वत लेकर सरल बना दिया।

निश्चित दिन को पेड़ों को काटने का कार्य करने वाली टीम आ गयी। बाग में चहल-पहल देखकर पेड़ों पर रहने वाले पक्षियों में व्याकुलता उत्पन्न हो गयी। ईश्वर ने जो बौद्धिक क्षमता उन्हें दी थी, उससे पक्षी समझ गये कि उनका बसेरा छिनने वाला है। बाग की वह धरती, जो इन पक्षियों के कलरव से चहचहाती थी, कराहने लगी और पक्षियों का रुदन न्याय की भीख मांग रहा था। पर इन सबसे निष्ठुर लालची सेठ और भ्रष्ट अधिकारियों को कुछ सरोकार नहीं था।

परन्तु वन्यजीव प्रेमियों तक पक्षियों की कराहट और रुदन पहुंच गया। तत्काल ही न्यायालय में उचित तर्कों के साथ गुहार लगाई गयी। न्यायालय से भेजी गयी समिति ने पाया कि इस सड़क को बाग के पास की शुष्क जमीन से होकर बनाने में कोई बाधा नहीं है।

माननीय न्यायालय ने तत्काल आदेश जारी कर सड़क के कार्य को प्रारम्भ होने से पहले ही रोक दिया। इस प्रकार वन्यजीव प्रेमियों की सक्रियता से बाग में रहने वाले पक्षियों को समय रहते 'घर छिनने की पीड़ा' से छुटकारा मिल गया।

भीड़-भीड़ में अन्तर

चार पुत्र, पुत्र-वधुओं और आठ पोते-पोतियों से भरे हुए घर की भीड़ में रामावतार जी के मन को बहुत शान्ति मिलती थी। धर्मपत्नी के स्वर्गवासी हो जाने के बाद इस परिवार के कोलाहल में भी सुखद अनुभूति होती थी उन्हें। जिस सुखी सामूहिक परिवार को देखकर दुनिया को आश्चर्यमिश्रित जलन होती थी उसी परिवार में वक्त के परिंदे ने शान्ति की शाख से उड़कर अलगाव की ओर प्रस्थान करना शुरू किया तो जिस भीड़ में रामावतार जी को शान्ति मिलती थी उसके बिखराव के भय ने उन्हें अशांत करना शुरू कर दिया।

एक दिन चारों पुत्र एकमत होकर आये और बड़े बेटे रमेश ने कहा, 'पिताजी! हम सभी अलग-अलग होना चाहते हैं। हमारी गृहस्थी की मजबूती के लिए आप हमारा हिस्सा दे दीजिए।'

लाख समझाने के बाद वृद्ध पिता हार मान गये। सबका हिस्सा अलग होने के बाद दूसरे बेटे सोमेश ने प्रश्न किया कि पिताजी किसके पास रहेंगे?

कृतघ्न बेटों के मध्य सहमति बनी कि पिताजी वृद्धाश्रम में रहेंगे।

रामावतार जी ने लाख कहा कि बेटों! मुझे इस पारिवारिक भीड़ में आनन्द और चैन मिलता है। परन्तु वृद्धाश्रम के द्वार पर बेटों ने उन्हें पहुंचाकर ही दम लिया।

वृद्ध स्त्री-पुरुषों की भीड़ को दिखाते हुए रमेश ने कहा, 'पिताजी! देखिये, यहां पर भी कितनी भीड़ है।'

रामावतार जी बेटों को समझा नहीं पाये कि...'परिवार की भीड़' और 'वृद्धाश्रम की भीड़' में जमीन-आसमान का अन्तर है।

विद्यार्थी जीवन

विभूतिकांत तरुणावस्था से ही साहित्य के अनुरागी थे। अपनी मातृभाषा हिन्दी से बहुत प्यार करते थे। परन्तु मात्र १६ वर्ष की आयु में माँ-पिताजी ने विवाह कर दिया और गृहस्थी के दायित्वों का निर्वहन करने में ऐसे उलझे कि साहित्य सेवक बनना बस एक स्वप्न ही रह गया।

जीवन पथ पर निरन्तर चलते-चलते और मन में साहित्यिक सृजन न कर पाने का क्षोभ समेटे उम्र के ३४ बसंत पर अचानक उनकी मुलाकात अपने बाल सखा रविकांत से हुई।

रविकांत भी उनकी तरह साहित्य अनुरागी थे और वर्तमान में साहित्यकारों के मध्य एक सम्मानित परिचय थे।

बातचीत के मध्य जब विभूतिकांत ने अपने साहित्य सेवा और सृजन के सपने के अधूरे रहने के विषय में रविकांत को बताया तो रविकांत ने उसके कंधे पर हाथ रखकर एक गहरी मुस्कान से कहा, 'विभूति! एक विद्यार्थी और वह भी साहित्य का विद्यार्थी सदैव विद्यार्थी ही रहता है। उसका अध्ययन कुछ समय के लिए रुक तो सकता है परन्तु कभी भी समाप्त नहीं हो सकता। विद्यार्थी जीवन में अध्ययन और साहित्यिक जीवन में सृजन हेतु उम्र कभी भी बाधा नहीं बन सकती।'

रविकांत ने विभूतिकांत को प्रोत्साहित करते हुए कहा, 'मित्र! अभी समय नहीं बीता है। चलो! डटो! आज से ही एक बार फिर साहित्य के विद्यार्थी बनो। साहित्य ऐसी पावन धारा है जिसमें बहने के लिए आयु का कोई प्रतिबंध नहीं होता।'

विभूतिकांत की कामनाओं को पंख मिल गये और उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह एक बार फिर अपना साहित्यिक अध्ययन प्रारंभ करेगा, क्योंकि मनुष्य आजीवन विद्यार्थी ही रहता है।

डॉ. सुपर्णा मुखर्जी

हैदराबाद
मोबा. 9603224007
E-Mail : drsuparna.mukherjee.81@gmail.com

पहचान

गला सूखा जा रहा है पर शरीर में जैसे जान ही न हो, आँखें खुलने को तैयार नहीं प्यास है कि पानी के बिना बुझने को तैयार नहीं। कुछ मिनट यूँ ही खुद के साथ जद्दोजहद करने के बाद ऋचा झटके से उठ बैठने को तैयार ही हुई कि मुँह से ओह माँ! निकल गया। याद आया उसे एक सप्ताह भी तो नहीं हुआ है उसके ट्यूमर का ऑपरेशन हुए। नींद ही अच्छी थी खुमारी में खाली प्यास सता रहा था आँख खुली तो शरीर से भी ज्यादा मन का दर्द सताने लगा। बच्चेदानी निकाल फेंकना पड़ा। नहीं, बाँझ नहीं है। वह एक प्यारी सी बिटिया है लेकिन अब परिवार को कुलदीपक किसी हालत में वह नहीं दे सकेगी। पानी पीते-पीते उसने अनुभव किया पानी का स्वाद नमकीन हो गया है। ग्लास को पास ही के टेबल पर रखकर सोने के लिए फिर से आँख बंद किया तो कल वाली लेडीज परफ्यूम की खुशबू उसके चारों ओर मंडराने लगी। खाली कलवाली लेडीज परफ्यूम नहीं करीबन ११ साल से अलग-अलग न जाने कितनी खुशबूओं को उसने सूंघा था सब जैसे उसे मुँह चिढ़ाने लगी, सब जैसे उस पर हँस रही थी। जैसे कह रही हो अब उसका कोई अस्तित्व ही नहीं। आँख बंद करना मुश्किल हो गया। जैसे -तैसे कपड़े समेटकर ऋचा टेबल के पास गई अपनी बनाई पेंटिंग्स को देखती रही। जमाना हो गया कैनवास, रंग, तूलिका इनको छुए हुए। घर-गृहस्थी उसी में तो रमी हुई थी वह। अब यही घर-गृहस्थी गृहस्थ का मालिक सब आराम से सो रहे हैं उसे अकेला छोड़कर। शरीर की तकलीफ शायद थोड़ी कम हो जाती अगर सिरहाने बैठकर कोई यूँ ही बालों को सहला देता। उसे अपनी ही सोच पर हँसी आ गई। फिर वहीं बैठकर लकीरें खिंचते-खींचते बना डाली परफ्यूम की बोतलें शीर्षक दिया 'यह मैं नहीं' रात बीत चुकी थी आँखें जल रही थी ऋचा की नहीं सोने के कारण पर मन बहुत शांत था।

प्रायश्चित

'क्या मुझे माफ कर सकोगी?' हाथ जोड़े आज वह इंसान इतने साल बाद जो सामने आ खड़ा हुआ तो शीतल समझ नहीं पा रही थी असल में उसे क्या कहना चाहिए? न तो पुरानी बातें यह याद करने का समय था और न ही मौका था। ऑफिस के बाहर आते-जाते लोग उसे देख रहे थे। इसलिए बात को आगे न बढ़ाकर भीड़ में गुम हो जाना ही शीतल को ठीक लगा। वैसे भी महानगर के व्यस्ततम सड़क के भीड़ में खो जाना कोई कठिन काम नहीं है। राकेश आगे कुछ कहता उससे पहले ही शीतल उसे अनदेखा करते हुए आगे बढ़ चुकी थी। राकेश उसके पीछे लगभग भागते हुए आया लेकिन शीतल के स्पीड के साथ वह खुद को जोड़ न सका। उसकी साँस चढ़ने लगी शीतल नुक्कड़ तक आकर ऑटो में बैठ चुकी थी। दो-चार बार उसने पीछे मुड़कर देखा कहीं राकेश पीछा तो नहीं कर रहा फिर वह समझ गई पीछे कोई नहीं है। घर आकर वह आज कई सालों के बाद माँ पापा के कमरे में गई। हाँ, कई सालों बाद ही वह उस कमरे में गई। उसे आज भी यही लगता है उसके कारण ही माँ-पापा को सब कुछ गंवाना पड़ा। कहने को तो शीतल का घर दो कमरों वाला फ्लैट था, छोटी सी किचन, सामने बरामदा जहाँ से खुला आसमान दिखता था यहीं शीतल का समय बीतता है। काम से लौटकर वह यहीं बैठकर खाना खाती और फिर उँघते-उँघते, तारों के साथ बात करते-करते वहीं बरामदे में ही सो जाती। करीब १० साल से यही उसकी जीवनशैली है। माँ-पापा को गुजरे भी यही करीब ८ साल हुए होंगे। राकेश को घोटाले से बचाने के लिए माँ -पापा ने अपना पुरखों का घर तक बेच दिया था बदले में राकेश ने क्या दिया? जब फिर से माँ-पापा के लिए घर खरीदने की बात आई तो वह मुकर गया। बात इतनी सी होती तो फिर भी सम्भल जाती राकेश ने शीतल को माँ-पापा से मिलने को मना कर दिया। तर्क यह कि माँ पापा को देखकर उसे पिछली बातें याद आती है पर यह तो कुतर्क था असल में माँ-पापा से सब कुछ हड़प लेने के बाद बाद माँ-पापा अब उसके लिए बोझ बन चूके थे। नहीं, उसे और कुछ सोचना नहीं है। वह कमरे से बाहर वहीं अपने बरामदे में आ गई। तभी सेल की घंटी बजी। अनजाना नम्बर था न चाहते हुए भी शीतल ने फोन उठा लिया। उधर से राकेश की आवाज सुनाई दी, 'फोन मत काटना शायद यही आखरी फोन हो ब्रेन ट्यूमर का मरीज हूँ। आखरी स्टेज है। बहुत मुश्किल से तुम्हारी मौसी से तुम्हारा नम्बर मिला। मैं सब कुछ तुम्हारे नाम करना चाहता हूँ। सुन रही हो? एक बार मिलो। हैलो, हैलो सुन रही हो।' पर उधर से कोई आवाज नहीं आवाज कहाँ से आती। शीतल उन्मादिनी सी खुद को कोरे मार रही थी। फोन को उसने कब का बरामदे के स्टूल पर छोड़ दिया था। यही उसकी आदत है अगर गलती से भी उसे राकेश की याद आती तो वह खुद को ही कोड़े मारने लगती। यह उसके हिस्से का 'प्रायश्चित' था।

सिर्फ मेरा बच्चा

अब धीरे-धीरे नीता को होश आ रहा था। साथ ही थोड़ा बहुत दर्द का भी एहसास था। पर वह पूरी ताकत के साथ आँख खोलना चाह रही थी उसे अपने बच्चे को जो देखना था। धीरे-धीरे अपनी उंगलियों को वह अंदाजे से आँखें बंद किये ही अपने बेड के पास पड़ी हुई पालने के पास ले जाने का प्रयास करने लगी। इतने में नर्स कमरे में आई तो नीता ने भी हिम्मत करके आँख खोल ही ली। अरे वाह! 'आपको होश आ गया मैं अभी डॉक्टर को और आपके परिवारवालों को बताती हूँ' यह कहकर नर्स कमरे से बाहर जाने लगी तो नीता ने पूछ ही लिया, 'सिस्टर मेरा बच्चा... वो बात पूरा कर ही पाती कि नर्स ने बीच में टोक दिया, 'आराम कीजिये अभी बातें नहीं।' और वह चली गई। पर नीता आराम कैसे करें? ६ महीने के इंतजार के बाद, घुप्प बेहोशी से बाहर आने के बाद एक माँ अपने नवजात शिशु का मुँह देखे बगैर कैसे आराम करे? वह बेचैन हो उठी। इतने में नवीन, उसकी सास, और माँ भी कमरे में आएँ। डॉक्टर बी. पी. चेक करने लगी पर नीता की आँखें बच्चे को खोज रही थीं सबके गोद में। रहा न गया तो उसने डॉक्टर को पूछ ही लिया, 'मेरा बच्चा अभी तक देखा ही नहीं कैसा है?' डॉक्टर कुछ कहती उससे पहले ही नवीन ने कहा, 'धैर्य रखो, अभी तो तुम्हें कदम-कदम पर बच्चे के साथ ही चलना है उसे तुम्हारे सहारे की बड़ी जरूरत होगी। इसलिए अभी तुम आराम करो।' नीता असमंजस में नवीन को देखती रही। नवीन ने कहा, 'हमारा बच्चा सिर्फ बच्चा नहीं किन्नर देश का खिलौना है, जिसे ये समाज इंसान नहीं खिलौना समझकर ही खेलेंगे अगर तुम, मैं, हम सब उसका साथ नहीं देंगे। बोलो, लड़ सकोगी न ये लड़ाई। उसे सिर्फ पालना नहीं है, उसे उसकी आत्मा को लेकर गर्वित होना भी सिखाना है।' नीता के आँखों में आँसू थे बस पूछ लिया, 'हमारे साथ ही ऐसा क्यों?' पास खड़ी उसकी सास ने कहा, 'सबके बस में कहाँ होता है शिखंडी बनकर धर्म की लड़ाई लड़ना। समझ ये तेरे हिस्से का महाभारत है। सोच बदलने के लिए।' नर्स बच्चे को लेकर आ गई थी। नीता अपने आँचल में अपने बच्चे को छिपाकर उसे आनेवाले जीवनयुद्ध को जितने के लिए अमृत रस दे रही थी। उसकी आँखों से दुख के नहीं अपनी पहली संतान को पाने का सुख छलक रहा था।

मन का लॉकर

घर धीरे-धीरे सामान से भरने लगा था। दिल के मैल भी धुल चूके थे। करीबन ६ साल बाद अमित को खुलकर हँसता हुआ देखकर मैं वाकई खुश थी।

मैंने तो कभी घर का बँटवारा, जमीन- जायदाद में हिस्सा ये सब पाने का सोचा ही नहीं था। जैसे काले धुएँ का असर था कि सब ओर गलतफहमी का जहर फैल चूका था।

पर कहते हैं न 'अंत भला तो सब भला' अब जैसे मुझे लग रहा था कि बहुत जल्दी ही परेशानियों के बादल छट जायेंगे। पर कहाँ, ऐसा होता है कि मुझे बिना दर्द कुछ मिल जाए।

अब कसूर भी तो मेरा ही था। किसी ने जोर जबरदस्ती तो की नहीं थी। बेकार में खून से मन रंगा लिया।

एक शाम अलमारी साफ करते-करते ऊन का गोला हाथ लग गया। आधा ही बुन पाई थी मोजा उसी समय तो आसमान मेरे सर पर गिरा था।

अमित ने कितना मना किया था पर नहीं मेरे सर पर तो जैसे फिर से माँ बनने का भूत सवार था।

वजह... वजह कुछ भी नहीं।

आज ऊन के गोले को हाथ में लेकर मैं खुद से पूछने लगी, 'घर सामान से जैसे भर रहा है क्या मन भी उसके बिना भरा हुआ नहीं है?

आज सब है पर दिल के हुक को क्या अकेले मैं ही नहीं सह रही हूँ'?

इतने में बच्चों की आवाज आने लगी खेलकर वापस आ गए थे। मैंने ऊन के गोले को अलमारी के लॉकर में ही

रख दिया।
कुछ बातें ऐसे ही मन के लॉकर में रह जाती है। जीवन भागता है।

वृद्धाश्रम

वृद्धाश्रम में आकर रूद्राक्षी को दो साल हो गए थे। कभी उसे किसी ने दुखी नहीं देखा। वह जीवन से उकतायी हुई नहीं थी। बीच-बीच में दोनों बच्चे अपने परिवार के साथ मिलने आते थे। वह भी घर जाती थी एक-दो रात रहती थी पर फिर वापस वृद्धाश्रम लौट आती थी। वहाँ रहने वाले लोगों को अचरज होता था कि जब इतना सुखी परिवार रुद्राक्षी के पास है तो फिर वह वृद्धाश्रम आई क्यों?

वृद्धाश्रम में काम करने आती थी मंगला। बेचारी बड़ी परेशान थी उसकी बेटी ६वीं में पढ़ती थी वह चाहती थी बेटी को ट्यूशन भेजे ताकि बिटिया का रेजल्ट अच्छा आए। पर गरीब के सपने, सपने ही रह जाते हैं। रुद्राक्षी को जब पता चला तो अंजली को पढ़ाने उसकी बस्ती में भी पहुँच गई। कुछ और गरीब बच्चे भी पढ़ने आने लगे रुद्राक्षी ने अपना दोपहर उनके नाम कर दिया। आज १०वीं कक्षा का परिणाम आनेवाला था। जितने उतावले वे बच्चे थे उतने ही उतावले वृद्धाश्रमवाले थे और रुद्राक्षी का परिवार भी था ।

सिर्फ रुद्राक्षी अपने कमरे में बैठकर सोच रही थी बरसों बीत गए जब कभी एक दिन रूद्राक्षी बहू बनकर अपने ससुराल आई थी। ओम को जिस दिन से उसने देखा था उसे अपना पति और उसके परिवार को अपना परिवार ही तो मान लिया था। भरापूरा परिवार था। रूद्राक्षी नौकरीपेशा थी लेकिन गृहस्थी और नौकरी के बीच सामंजस्य बिठाना ही है ये उसने खुद से वादा किया था। समय बितता गया और रूद्राक्षी दो प्यारे बच्चों की माँ भी बन गई। जीवन की आपाधापी बढ़ी मुश्किलात भी बढ़ने लगे ससुरालवालों का रंग भी धीरे-धीरे सामने आने लगा हालातों ने उसे समझाया कि कामकाजी औरतों को दोहरी मार झेलनी पड़ती है फिर भी बिना हिम्मत हारे गृहस्थी की गाड़ी तो चलानी ही पड़ती है पर गाड़ी सिर्फ गृहस्थी की ही चल रही थी दाम्पत्य की नहीं हर छोटी बात पर ओम के साथ झगड़ा होना आम बात हो गई थी लड़ने के बाद एक दूसरे को मना लेना भी फर्ज है ये दोनों ही भूल चुके थे। फिर एकदिन ये पता चला कि ओम के पिता जी के दोनों किडनी खराब हो चुके हैं डायलिसिस का ही सहारा बचा था। ओम के पिताजी सरकारी अफसर थे अच्छी खासी पेंशन थी जमापूँजी भी थी पर उन्होंने साफ कह दिया 'उनके मरने के बाद सब कुछ ओम का ही है तो फिलहाल ये ओम का फर्ज है पिता की सेवा करना।' इस कर्तव्य का पालन उन्होंने भी किया है और उनके पिता के पिता ने भी आगे ओम की इच्छा .... ओम और रुद्राक्षी दोनों प्राइवेट कंपनी में काम करते थे घर का लोन, बच्चों की पढ़ाई और भी न जाने क्या-क्या जिम्मेदारी? अब बात संस्कार की थी तो फिर और क्या कहा जा सकता था? यूँ ही इलाज चलाते चलाते ससुर जी गुजर गए उनके जाने के बाद जो धन सम्पत्ति मिली वह उनके इलाज में हुए खर्च के मुकाबले ऊँट के मुँह में जीरा समान ही था। सिर्फ संतोष यही मिला कि संस्कारी बेटे-बहू का तमगा मिला इसके बदले न जाने कितनी छोटी-छोटी खुशियों का गला घोंट देना पड़ा। बच्चे बड़े होकर अपने जीवन में व्यस्त हो चुके थे बच्चों की शादी हो गई तो दोनों ने सोचा अब साथ मिलकर बुढ़ापे का ही मजा उठाएंगे लेकिन एक अल्लसुबह ओम का अचानक उसे सदा के लिए संसार में अकेले छोड़कर चला जाना रुद्राक्षी सहन ही न कर सकी। हर दिन कोई एक नयी बीमारी उसे जकड़ लेता वह चाहती थी कि बहू बेटे पर बोझ न बने पर वह बोझ ही तो बनती जा रही थी एक दिन बहुत धीमी आवाज उसके कान में आ ही गई 'माजी के दवाइयों के कारण देखो घर खर्च फिर इधर उधर हो ही गया। आप बड़े भाई साहब से बात करो न कि कुछ दिन माजी को अपने पास ले जाए।' बेटे ने तुरंत बहू को डपटकर चुप करा दिया। लेकिन रुद्राक्षी को लगा जैसे ओम ने उसे डाँटा हो जैसे उससे कह रहा हो 'देखो हमारे बच्चें भी अब हमारी तरह पीस रहे हैं कोशिश कर रहे हैं संस्कृति और संबधों की दकियानुसी गाड़ी को खिंचने की।' क्या करे वह सोचने लगी। फिर उसके बीमारी के कारण बेटे-बहू का सिनेमा जाने का प्लैन फेल होते हुए देखा तो उससे न रहा गया दिल रो उठा उसका खुद को इतना कमजोर देखकर। बार-बार खुद को आईने में देखकर खुद से पूछने लगी, 'क्या मैं इतनी बीमार इतनी कमजोर हूँ? जवाब शायद उसके भीतर समाया ओम दे रहा था 'नहीं रुद्राक्षी तुम खुद को संभाल सकती हो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। मत बनो किसी पर बोझ। खुद जीओ, दूसरों को भी जीने का रास्ता बताओ।'

बस, रुद्राक्षी ने मन बना लिया अब और नहीं उसके और ओम के प्रेम की निशानी है ये बच्चे इनको ऐसे हैरान परेशान होते वह नहीं देख सकती। फिलहाल वह सबल भी है उसने मन बना लिया वृद्धाश्रम में चले आने का। बहू-बेटों के साथ उसने साफ-साफ बात की उसे वहाँ पहुँचा आने की जिम्मेदारी भी उसने उन्हीं पर छोड़ी पहले तो सबको लगा वह गुस्से में घर छोड़ रही है पर जब उसने स्वतंत्र होकर बाकी जीवन को बिताने की बात कही तो सबको उसकी बात माननी ही पड़ी।

और देखो आज उसके उसी आत्मविश्वास के कारण अंजली और दूसरे बच्चे १० वी पास कर गए।

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'
गुजरातियान, धामपुर-२४६७६१
बिजनौर, उत्तर प्रदेश, मोबाइल-९७१९०६४६३०

अनिष्ट

उस रात वर्मा जी घर पर नहीं थे। मिसेज शर्मा घर में अकेली थी। घर के सभी दरवाजे बंद करके वह सोने चली गयी। आधी रात को कुत्तों के रोने की आवाज सुनकर मिसेज वर्मा सोते से जाग उठीं। अरे, कुत्तों का रोना तो अपशकुन होता है, यह सोचकर उन्होंने बालकोनी से एक ईंट कुत्तों की ओर उछाल दी।

तभी सड़क पर से एक चीख सुनाई दी। मिसेज वर्मा नीचे उतरकर आई। वहां देखा उनका छोटा भाई सिर पकड़े बैठा है।उसका सिर खून से लथपथ था और ऊपर से फेंकी गई ईंट भी पास पड़ी थी। अनिष्ट हो गया।

अब पास-पड़ोस के लोग कुत्तों को भगा रहे थे, उनका रोना ना जाने और कौन-सा अनिष्ट करा दें।

रावण कौन?

बस खचाखच भरी जा रही थी। अचानक रुक गयी। बिना स्टाप के बस क्यों रुकी, इसी जिज्ञासा से कुछ लोग नीचे उतर गये और कुछ खिड़कियों से बाहर झांकने लगे।

कुछ लड़कों ने बस के परिचालक को पकड़ रखा था। वह कह रहे थे 'मारो साले को।'

एक नेता टाइप के लड़के ने परिचालक को समझाने के अंदाज में कहा, 'क्यों बे साले, सुबह तूने चंदा देने से मना कर दिया था। अबे वो सोने की लंका के रावण की दौलत भी यूं ही रह गयी थी। ये तो धर्म का काम है दे दे चंदा...।' और उसने परिचालक के साथ से कुछ नोट खींच लिए।

परिचालक बस में आ गया। वह बड़बड़ा रहा था, समझ में नहीं आ रहा था वो ये है या वो, जिसका पुतला जलाने को यह जबरन वसूली की जा रही है।

उधार की चमक

पूर्णिमा की रात थी। सारे आकाश में चंद्रमा की रोशनी फैल रही थी। तारों की रोशनी फीकी पड़ रही थी।

चंद्रमा ने तारों से कहा, 'अरे, यह उदास से क्यों हो? चमको न। देखो मैं तुम सब पर भारी पड़ रहा हूं।'

एक नन्हा तारा बोला, 'भैया हम जितना चमक रहे हैं, उससे ज्यादा नहीं चमक सकते। हम किसी और पर रोशनी के दम पर ज्यादा चमकने पर विश्वास नहीं करते। अपनी रोशनी से ही संतुष्ट रहते हैं।'

इस तरह की बात में ही रात बीत गयी।

कुछ दिन बाद अमावस्या की रात आती। आकाश में तारे ही चमक रहे थे। चंद्रमा का दूर-दूर तक पता नहीं था। उस नन्हें तारे की चमक सबसे तेज थी।

संयोजक

सड़क पर पंडाल लगा दिया गया। रास्ता बंद कर मंच बनाया गया। स्वतंत्रता दिवस पर डांस कंपटीशन जो होना था। कालोनी का यह एकमात्र चौड़ा रास्ता था, जो मुख्य मार्ग से जुड़ता था। अनर्थ तो छोटी गोलियां थी। बरसात के कारण उनमें पानी भरा था। श्यामलाल के पिताजी को अचानक हॉर्ट अटैक हुआ। कालोनी के डॉक्टर का क्लीनिक बंद था। उन्हें शहर ले जाना था, किंतु मार्ग में पंडाल और मंच लगा होने के कारण टैक्सी वहां से नहीं जा सकती थी। गलियों के रास्ते तो बेकार थे ही।

अब श्यामलाल जी आयोजकों को कोस रहे थे। वह भूल गये थे कि आयोजन समिति के संयोजक वह स्वयं है।

खजूर का पेड़

वह अपने घर से बाहर निकल पार्क में आ गया। उसके दिमाग में अभी भी अपने बेटे के शब्दों को लेकर उथल पुथल मची थी।

'क्या किया आपने हमारे लिए। अपनी मस्ती के लिए लाईन लगा दी हमारी। ना ढंग का खा सकते हैं, ना पहन सकते हैं।'

उसके बेटे ने ठीक ही तो कहा। लेकिन बेटे का कहने का अंदाज तो ठीक नहीं था।

मन में इन बातों का विचार करते हुए, अपनी नम हुई आंखों को वह पोंछने लगा।

वह सोच रहा था, मैं अपने मां बाप का इकलौता बेटा रहा। मां बाप को कुछ सुख ना दे सका। अब सोचता था कि मेरे चार पांच बेटे होंगे तो मुझे कुछ सुख मिलेगा, लेकिन मैं तो उनकी परवरिश ही ठीक तरह नहीं कर पाया। मैं तो खजूर का पेड़ रहा। ना किसी को छाया दे सका और ना फल।

निशा भास्कर(शिक्षिका)
आर जेड-एफ, साधनगर-२,
पालम कालोनी नयी दिल्ली-४५
E-Mail : nisha.bhaskar71@gmail.com

उम्मीद

रेड लाइट होने पर सभी वाहन एक-एक कर चौराहे पर रुक गए। स्कूटी पर सवार चित्रा जी का ध्यान चौराहे पर खड़े विशाल पीपल के पेड़ पर गया। जिसके नीचे तीन-चार परिवार अपना बसेरा बनाए हुए था। उसमें से एक महिला कुछ जानी-पहचानी सी लगी। उसका पूरा ध्यान उस बच्ची पर लगा था। जो पुलिस की टोपी पहन कर बहुत प्रफुल्लित मुद्रा में अपनी मां को देख रही थीं। उसकी मां के आंखों में भी एक सपना तैर रहा था।

ग्रीन लाइट हो चुकी थी। गाड़ियों के हार्न से चित्रा जी की तंद्रा टूटी। उन्होंने जल्दी से स्कूटी को साईड किया। वह रोज इसी सड़क से अपने ऑफिस जाया करती है। परंतु आज का यह दृश्य उन्हें इस परिवार से मिलने के लिए बाध्य कर दिया। वह उन मां-बेटी के सामने जाकर खड़ी हो गई। मां और बेटी अभी भी उसी मुद्रा में निमग्न बैठी थी। आंखों में अपने सपनों का संसार संजोए। गाड़ियों की पों-पों से भी उनको कुछ फर्क नहीं पड़ रहा था।

चित्रा जी मुस्कुराती हुई बोली-'हेलो'

अचानक से अपने सामने एक भद्र महिला को देखकर स्त्री हड़बड़ा कर बोली-यों तो हमारी बिटिया खेल रही है।

चित्रा जी मुस्कुरा कर बोली- 'हां-हां, मैं वहीं खेल देखने आईं हूं। फिर बच्ची की ओर देखकर कहा-टोपी पहन कर बहुत अच्छी लग रही हो।'

'अरे जीजी! ऐसा लग रहा है कि मैंने आपको पहले देखा है।' चित्रा जी ने स्त्री की ओर ध्यान से देख कर कहा-तुम रमिया, रमिया हो?

स्त्री अपना हाथ माथे पर मारकर बोली- हां याद आया। आप हमारी मालकिन की सहेली, वो क्या कहते हैं? समाज सेविका दीदी हो। आपने ही तो हमारी बिटिया का नाम सरकारी स्कूल में लिखवाने के लिए साहेब को बोला था।

चित्रा जी ने कहा-हां चंपा नाम है ना तुम्हारी बेटी का?

अपना नाम सुनकर, पुलिस की टोपी पहनी हुई चंपा ने एक शानदार सैल्यूट के साथ जय हिंद कहा।

चित्रा ने भी जयहिंद का जवाब जयहिंद से दिया। फिर उसकी टोपी उतारती हुई बोली-'ये टोपी तुम्हें कहां से मिली?'

रमिया हकलाती हुई बोली- अरे जीजी आपको पता तो है। जिस घर में मैं काम करती हूं। वो साहब बहुत बड़े पुलिस अफसर हैं। पुरानी टोपी कबाड़ में रखने के लिए कहा तो मैं अपनी चंपा के लिए मांग लाई। मेरी बिटिया भी बड़ी होकर पुलिस अफसर बनेगी। ऐसा कहते हुए रमिया की आंखों में हजारों जुगनुओं की चमक उभर आई थी। चित्रा जी ने महसूस किया कि इस पीपल के पेड़ के नीचे फुटपाथ पर रहने वालों के भीतर जीवटता की कितनी सघन शाख हैं।

अनुभूति

छत पर टहलती हुई रमा, सूने आसमान को देखे जा रही थी। रूई के फाहे जैसे सफेद काया लिए बूढ़े बादलों का झुंड आसमान में भटक रहे थे। चारों ओर ऊंची बिल्डिंग्स के अलावा और कुछ नहीं दिख रहा था। रमा का मन ऊब से भर गया। स्वयं से बोली-शहर में शोर है, रस नहीं। जीवन का सपना है, जीवंतता नहीं।

गांव में इस समय पक्षियों का कलरव संगीत का समां बांध देते हैं। आंगन में गौरैय्या की चहचहाहट जीवंतता का परिचय देते। मां कहती है- 'घर में गौरैय्या का होना सकारात्मकता पैदा करती है। वैसे गौरैय्या इंसानों के साथ ही रहना पसंद करती हैं।'

तभी तो आंगन में बैठकर अम्मा जब चावल अमनीया करती है तो गौरैय्या उनके परात से चावल चुग लेती है। तब अम्मा बोलती है- 'देख कितनी ढीठ है।'

गौरैय्या चीं-चीं करती, मटकती आगे बढ़ती। जैसे कह रही हो- 'तू ही खाएगी, मैं नहीं।'

अम्मा उससे बातें करती, खा ले। दाने-दाने पर लिखा है, खाने वाले का नाम। वह उठकर जाती और चावल के बारीक टुकड़े (खुदी) लाकर आंगन में छीट देती। छप्पर पर बैठी सारी गौरैय्या तुरंत नीचे उतर कर दाने चुगती हुईं संगीतमय वातावरण बना देती। कुछ शैतान गौरैय्या अम्मा के परात से टक-टक की ध्वनि करती हुई चावल चुगती। रमा अपनी स्मृतियों में खोई थी कि एक फुदकती हुईं नन्ही गौरैय्या चीं-चीं करती हुई अपनी चोंच गमले में मार रहीं थीं। रमा ने विस्मित नेत्रों से देखा। वह भाग कर सकोरे में पानी भर लाई। उसे छत पर रखकर, उसी उत्साह से कुछ चावल के दाने छत के कोने में डाल दी।

गौरैय्या फुदकती हुईं कभी चावल चुग लेती, कभी सकोरे से पानी पीती। फिर चीं-चीं कर अपनी खुशी जाहिर करने लगी। रमा के मुख पर एक सुखद मुस्कान छा गई।

उपहार

हेलो सेंटा! आप कितने अच्छे हो, बहुत अच्छे हो ना। तभी तो आपका इंतजार सभी बच्चे बहुत-बहुत दिनों तक करते हैं। तब आप बहुत सारे गिफ्ट और खुशियां लेकर आते हो। आप मेरे घर कब आओगे? मैं भी आपका इंतजार कर रही हूं। प्लीज आ जाओ ना, मेरे घर भी। सात साल की नन्हीं प्रिया खिलौने वाले फोन को कान से लगाकर बोले जा रही थी। अरे बेटा! आज किसके पास फोन किया है? कौन से अंकल और आंटी।

इंद्रधनुष

बिरजू का एक हाथ पकड़े, दूसरे हाथ में उसका बस्ता लिए कमला उसे स्कूल छोड़ने जा रही थीं। रास्ते में चलते-चलते बिरजू ने कहा- 'मां आज बारिश का मौसम होगा?'

अरे! तुम बारिश को बुलावा क्यों दे रहे हो? कमला को पता था कि वह ऐसा क्यों पूछ रहा है। स्कूल में वह अपने साथियों को देखता था। बारिश होने पर वे छतरी लगा कर घर जाया करते थे। परंतु वह ऐसा नही करता। कमला आंचल उढ़ाकर उसे बारिश से बचाने का प्रयत्न करती हुई घर ले जाती। इस बात की चर्चा वह अपने पिता से भी करता था।

उसके पिता अपनी मजबूरी छुपाते हुए बोलते - 'अरे तू तो मां का बड़ा लाडला है।' पिता की बात सुनकर वह टुकुर-टुकुर मां की ओर देखता। मां उसे पुचकार लेती ।

कल जैसे ही बिरजू के पिता के हाथ में तनख्वाह आई। उन्होंने सबसे पहले एक रंग-बिरंगी प्यारी-सी छतरी खरीदी। आज वह छतरी उसके बस्ते में है।

देखते ही देखते आसमान मेघों से भर गया। झमाझम बारिश होने लगी। कमला ने झट से छतरी खोलकर बिरजू को पकड़ा दिया।

'उस नन्हे बालक की चमकती आंखों को देखकर कमला मुस्कुरा उठी। स्वयं से बोली इसकी चेहरे की खुशी देखकर लग रहा है। जैसे इन्द्रधनुष इसकी आंखों में हो और छतरी इसका आसमान हो।'

कड़ी

तपती दोपहर में विनय अपनी ड्यूटी पर तैनात था। उसके कुछ साथी पेड़ की छाया में बैठे ऊंघ रहे थे। परंतु वह सड़क के बीचों-बीच खड़ा पूरी कर्तव्यनिष्ठा के साथ ट्रैफिक पुलिस की ड्यूटी कर रहा था। लाल बत्ती खराब होने की वजह से वह अपने हाथों के इशारों से वाहन की गति निर्धारित कर रहा था कि उसी समय उसकी नजर दो बच्चों पर पड़ी। उनकी उम्र यही कोई आठ और दस साल होगी। वे दोनों अपने कंधों पर कचरा का कट्टा लटकाए हुए वाहनों के बीच से सड़क पार करने की कोशिश कर रहे थे। विनय ने उन दोनों बच्चों को अपने पास बुलाकर बोला, इतनी कड़ी धूप में तुम लोग कहां जा रहे हो और इस तरह कोई सड़क पार करता है?

बड़े बच्चे ने घबराकर कहा- 'कुछ नहीं साहब! हम तो कचरा बीनने वाले हैं।'

दूसरे ने गर्दन हिला कर अपनी स्वीकृति दिया। फिर कहा 'साहब हमें जाने दो। इसे बेचकर हमें पैसा कमाना है।'

इसके कितने पैसे मिलेंगे? विनय ने पूछा।

दस से पंद्रह रुपए, इतने तो मिल ही जाएगा साहब। बड़े बच्चे ने तत्काल जवाब दिया और बोला- 'अब हमें जाने दो साहब! मेरा पैर जल रहा है।'

विनय ने देखा दूसरे बच्चे के पैर में चप्पलें थीं। पर यह अपने नंगे पैर को जलन से बचाने के लिए बारी-बारी से एक-दूसरे के ऊपर रखकर मसल रहा था। सच में आज सूर्य देवता आग बरसा रहे हैं। वह आहत होकर भींगे स्वर में बोला, बेटा मैं तेरे लिए चप्पल का इंतजाम अभी करता हूं। अभी तू मेरे पैर पर अपना पैर जमा ले। उसने बच्चे को सहारा देकर अपने पैरों के ऊपर खड़ा कर लिया।

विनय के इस व्यवहार को देखकर दोनों बच्चे कुछ सामान्य हुए। बड़े बच्चे ने कहा, साहब! आपको हमारे ऊपर दया आ रही है? आप भलेमानस हो? मेरे पापा कहते थे कि भलेमानस के दिल में दया होती है।

अब तुम्हारे पापा कहां हैं? आद्र स्वर में विनय ने पूछा।

अब वे इस दुनिया में नहीं है। हम दोनों भाई अनाथ हैं। वह निःसंकोच बोला।

तुम अनाथ नहीं हो बेटा! किसी भले मानस में मुझसे कहा था कि वक्त आने पर तू भी किसी का सहारा बन जाना।

सहारा बन जाना। बड़े बच्चे ने प्रश्नात्मक अंदाज में कहा।

हां बेटा! मैं भी जब तुम्हारे उम्र का था। तो ऐसा ही सोचता था। एक दिन ऐसे ही भरी दोपहरी में अपने पैरों को जलन से बचाने के लिए मैं केले का पत्ता बांध कर कचरा बीन रहा था। तब एक इंसान मुझे मिला। जिन्होंने मेरे सिर पर अपना हाथ रखा और आज इस लायक बना दिया। चलो मेरे साथ। कहकर विनय ने दोनों बच्चों का हाथ पकड़ा और सड़क के किनारे लाकर उनके कंधे से कचरे का कट्टा उतार कर फेंक दिया। फिर उन दोनों को देख कर कहा 'आज से यह काम बंद।'

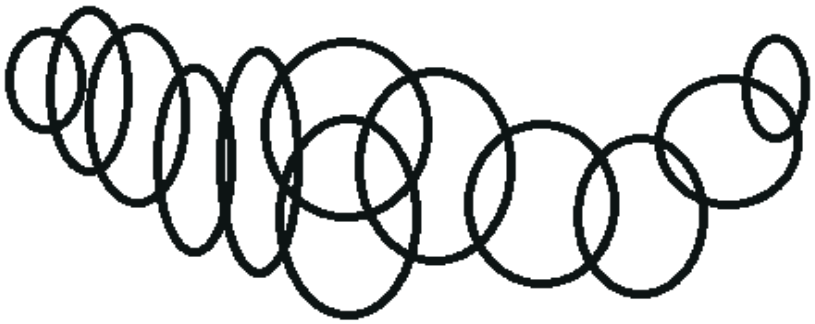

विजय गिरि गोस्वामी
'काव्यदीप'
प्राध्यापक (हिंदी)
संपर्क : मु.बोदिया,पो.मादलदा, तह.-गढी,
जिला : बाँसवाडा (राज.) ३२७०३४
मोबा. : ९६२८६६६३४४

माँ

संजय और सुमित्रा दोनों गाँव से निकलकर शहर में रहते थे। संजय एक राजकीय विद्यालय में व्याख्याता था वही सुमित्रा प्राइवेट अस्पताल में नर्स का काम करती थी। उनके दोनों बच्चे वहीं शहर में एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ते थे।

हर शनिवार को वे कभी अपने घर पर तो कभी सुमित्रा के पीहर चले जाते थे।एक दिन शनिवार की शाम संजय जब विद्यालय से घर पर आया तो उसके हाथ में एक नयी थैली थी.. सुमित्रा ने बड़े आश्चर्य से उस थैली में देखा .. तो उसमें एक नयी साड़ी थी।

'संजय यह साड़ी किसके लिए लाए हो?'

'मां के लिए।'

'लेकिन हम तो आज मेरी माँ के घर जा रहे हैं न!'

'पगली ! माँ तो माँ है फिर तेरी क्या और मेरी क्या!' संजय के चेहरे पर मुस्कान तैर रही थी।

'कैसी है साड़ी? माँ को पसंद आयेगी न!' संजय ने साड़ी को हाथ में लेकर पूछा।

'हाँ ..बहुत।' कहती हुई सुमित्रा बेडरूम में चली गई।

संजय की इस बात से वो काफी अभिभूत हो गई थी।वो मन ही मन कहने लगी- 'संजय तुम्हारी माँ हो या मेरी तुम एक नजर से देखते आये हो लेकिन मैं अभी तक ऐसा नहीं कर पायी हूँ..लेकिन मैं आज वादा करती हूँ कि अब दोनों माँओं में कोई फर्क नहीं होगा।'

उसकी आँखें गिली हो गई थी। अपने आँसू पौंछकर वह मुस्कुराते हुए संजय के पास आकर बोली- 'संजय आज हम क्यों न अपने घर चले जाए..।'

'क्यों?' संजय ने आश्चर्य से देखा।

'बस ऐसे ही।'

'फिर यह साड़ी।'

'अपनी माँ है न .इस माँ और उस माँ में क्या फर्क है .. आपकी पसंद की साड़ी माँ को बहुत पहंद आएगी।'

एक घंटे में ही वो अपने घर पहुँच गये। सुमित्रा प्रायः माँ को चरण स्पर्श करती थी लेकिन ये क्या आज तो वो माँ से लिपट गई थी।

नयी पीढ़ी

बस स्टेण्ड पर लोगों की भीड़ थी। सफेद कुर्ता पाजामा पहन सेवानिवृत्त शिक्षक श्यामलाल जी एक बुक स्टाल के पास खड़े-खड़े अखबार पढ़ रहे थे। अकस्मात उन्हें लगा कि एक नवयुवक उन्हें चरण स्पर्श करने के लिए नीचे झुक रहा है.. श्यामलाल जी आशीर्वाद में अपना हाथ उसके सर पर रखते हुए बोले 'खुश रहो बेटा।'

तब वह नवयुवक मुँह बिगाड़ते हुए खड़ा हुआ और कहने लगा 'मैं कोई आपको चरण स्पर्श नहीं कर रहा था बल्कि अपनी पेंट पर लगी धूल झाड़ रहा था।'

श्यामलाल जी मन ही मन सोचने लगे 'आजकल नयी पीढ़ी के लोगों को आशीर्वाद की जरूरत ही कहाँ है..न जाने मैं भी क्या समझ बैठा।' वो पुनः अखबार पढ़ने लगे।

कला का मान

एक बड़े मंदिर के प्रांगण में बैठी वह हारमोनियम पर भजन गा रही थी..जहाँ से दर्शनार्थी पंक्तिबद्ध होकर मंदिर में जा रहे थे। हारमोनियम की धुन लोगों का ध्यान आकृष्ट करती जिसको अधिकांश लोग नजर अंदाज कर आगे बढ़ जाते तो कुछ लोग प्रसन्न होकर पाँच-दस रुपये हारमोनियम पर रख देते थे।

थोड़ी दूर पत्थर की कुर्सी पर बैठे राधेश्याम बाबू बड़ी देर से उसे निहार रहे थे..सिर्फ निहार ही नहीं रहे थे वास्तव में वो भजनों का लुत्फ उठा रहे थे। हारमोनियम की धुन वैसे भी उनको बहुत प्रिय थी।

दो-तीन भजन सुनने के बाद वो उसके पास गये और बोले- 'आप तो बड़ी कलाकार हो..लेकिन लोग समझे तो न! आपकी कला का मान होना चाहिए।'

वो मुस्कुराते हुए बोली 'बाबुजी यदि कला का मान होता तो मुझे यों न बैठना पड़ता।'

उसने हारमोनियम पर पुनः एक नयी धुन छेड़ दी थी.. वहीं राधेश्याम बाबू अपने मोबाइल में किसी 'कला जत्था दल' के नायक का नंबर ढूँढ़ रहे थे।

संस्कार

दो बच्चे एक ही दिन अलग-अलग घरों में पैदा हुए। समय के साथ धीरे-धीरे बड़े होने लगे। पहले को सिखाया गया 'यह धरती सिर्फ हमारी है..दूसरे लोगों को यहाँ रहने का अधिकार नहीं है।' दूसरे ने सीखा 'यह धरती एक परिवार के समान है...यहाँ हर व्यक्ति को शांति से जीने का अधिकार है।'

पहला बच्चा अपने लोगों को छोड़ सबको गैर समझने लगा तो दूसरा सभी को अपने ही समझ रहा था।

पहले को सिखाया 'हथियार रखो ...बात बात पर दूसरों को धमकाओ ...मारो..हत्या कर दो।'

दूसरे ने सीखा 'सबसे प्रेम रखो..किसी को भी डराओ मत..सबकी जान बचाओ।'

कल किसी बात पर दोनों बच्चों में बहस हो गई। पहले ने घर से मिले संस्कार के अनुसार दूसरे को छूरा घोंप दिया। खून से लथपथ दूसरा घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा। यह देखकर आसपास खड़े लोग गुस्सा करते हुए पहले को मारने दौड पड़े। जमीन पर गिरे घायल छोरे ने जब यह देखा तो कराहते हुए बोला 'इसे मत मारो..पुलिस को सौप दो..!'

पास खड़े लोग घायल छोरे को देखते ही रह गये। घायल होने के बाद भी वो अपने अच्छे संस्कार नहीं भूला था।

साथ

माड़साब शांतिलाल की उम्र कोई पचपन वर्ष के करीब होगी। दो वर्ष पूर्व ही पत्नी भगवान को प्यारी हो गई थी। दो बच्चे थे ..दोनों का विवाह करवा दिया था। घर में सब कुछ था मगर उन्हें जीवन साथी की कमी महसूस हो रही थी। कोई मित्र या रिश्तेदार उन्हें पुनर्विवाह का सुझाव देता तो वो 'अब मुझे जीना ही कितना है..' कहते हुए टाल देते थे।

प्रायः वो सुबह घर के आँगन में बैठकर अखबार पढ़ते थे। उसी समय पवन जो कि उनका विद्यार्थी रहा था प्रातःकालीन भ्रमण के लिए निकलता। वह जाते या आते उन्हें अभिवादन करता रहता।

अभी चार-पाँच दिनों से पवन के साथ रमेश को भी भ्रमण के लिए जाते देख उन्होंने पूछ ही लिया- 'क्या बात है! आजकल आप दोनों साथ-साथ निकल रहे हो।'

पवन कुछ बोलता उससे पहले ही रमेश बोल पड़ा- 'साहब साथ-साथ भ्रमण का आनंद ही अलग होता है..।'

पवन ने आगे जोड़ा- 'तीन किलोमीटर का भ्रमण और करीब पौन घंटे का समय रमेश भाई के साथ कैसे बित जाता है पता ही नहीं चलता..।'

वो दोनों आगे निकल गये मगर उनके इस साथ ने माड़साब के मन में हलचल पैदा कर दी।

जीवन साथी को खोने के बाद हुए शुष्क व तपित हृदय पर मानों शीतल जल की फुहारें गिरी हों।

वो सोचने लगे 'पवन और रमेश पौन घंटे के साथ में भी इतना आनंद ले सकते हैं तो फिर मेरा जीवन सफर तो अभी लंबा है..पाँच वर्ष तो सरकारी सेवा के ही शेष हैं।'

अचानक उनके चेहरे पर एक हल्की मुस्कान तैर गई ऐसा लगा मानो उनके हृदय में एक नये साथी की इच्छा के बीज अंकुरित होने लगे थे।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

Subscribe

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

डॉ. मृदुला त्यागी

रमा जैन कन्या महाविद्यालय
नजीबाबाद, जिला-बिजनौर (उ.प्र.)
मोबाइल-९६१७६३८४८८

गुरुदक्षिणा

नैना बहुत खुश थी कि उसका नाम शोध कार्य के लिये सलैक्ट हुआ था और उसे गाइड भी अपनी पसंद की मिली थी। पैसों की जरा दिक्कत थी क्योंकि उसके पति का काम अच्छा नहीं चल रहा था। फिर भी उसने हिम्मत करके जैसे-तैसे स्नोपसिस जमा कर दिये। खाली समय में ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया ताकि पीएच-डी. का खर्च निकलता रहे। जब भी शोध कार्य से बाहर जाती नैना तो उसकी गाइड कुछ न कुछ फरमाईश कर देती कि "वहां की मिठायी बहुत प्रसिद्ध है, वहां की साड़ी बहुत प्रसिद्ध है" थोड़ा गुस्सा तो आता नैना को, पर नाराज न हो जायें कहीं, यह सोच कर वह कुछ न कुछ ले आती।

कार्य बहुत तेजी सें चल रहा था, अतः तीन साल में ही शोध पूरा हो गया। थीसीस जमा होनी थी और गाइड के साइन भी होने थे, पर हिम्मत नहीं हो रही थी। नैना की सहेली ने बताया था कि उसकी गाइड ने तो पचास हजार रुपए तभी रखवाये, तब जाकर कहीं साइन करें। पर इतनी बड़ी रकम न थी नैना के पास। बड़ी मुश्किलों के बाद पूरा कर पायी थी यह शोध कार्य। आखिर डरते-डरते वह अपनी गाइड के घर पहुंची। उनके सामने अपनी थीसीस किये तो नैना ने मिठायी का डिब्बा उनकी ओर बढ़ाते हुये पूछ ही लिया।

"आपकी फीस?" "कुछ ही नहीं" उन्होंने कहा-

"बस मेरी एक साड़ी पैंट कर देना"

सुनकर नैना का मन कृतज्ञता से भर गया और आंखों में आंसू छलक आये।

चैलेंज

"देखता हूँ तू कैसे इन बच्चों को पालेगी मेरी बिना, मेरा चैलेंज है ये।"

व्यंग्यात्मक हंसी के साथ अनिकेत ने कहा और घर से निकल गया, फिर कभी न लौटा।

लेकिन इन शब्दों ने ही जैसे कविता के जीवन को एक नया मोड़ दे दिया। कभी घर से न निकलने वाली, डरी, सहमी, हमेशा अपने काम के लिये दूसरों पर निर्भर रहने वाली कविता में अचानक बहुत बदलाव आया।

"क्या मैं कुछ नहीं कर सकती, अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिये।" यह प्रश्न दिन-रात उसे बेचैन करने लगा। उसने कमर कस ली, ठीक उसी तरह जैसे एक सैनिक युद्ध का बिगुल बजने पर अपने देश की रक्षा के लिये तैयार हो जाता है। कविता ने मन ही मन सोचा, "भले ही धन दौलत नहीं है, पर शिक्षा का हथियार तो है मेरे पास, उसी को दाल बनाकर, आगे बढ़ूंगी।" बस अपने एक कमरे में बच्चों को पढ़ाने का कार्य शुरू कर दिया। पहले छोटे बच्चे, फिर बड़े भी आने लगे। धीरे-धीरे उसकी योग्यता की चर्चा होने लगी और शिक्षा का वह कमरा एक बड़े विद्यालय के रूप में सीपित हो गया।

तभी तालियों की गड़गड़ाहट से कविता जैसे नींद से जागी।

"अरे क्या सोचने लगी आप, प्रदेश की बेस्ट शिक्षिका का अवॉर्ड मिल रहा है आपको, वो भी मुख्यमंत्री के हाथों से। अब तो खुश हो जाइये।"

स्टेज पर खड़ी एक महिला मंत्री ने कहा तो कविता की आँखों में कुछ बूंदे अनायास ही उमड़ आयी।

ममता का आंचल

सुनयना को समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या करे? जीवन में कभी ऐसा मोड़ आयेगा ये तो सोचा ही नहीं था। आज प्रताप की बेबसी और आंखों में आंसू देखकर दिल को सुकून तो मिला, लेकिन सिर्फ कुछ पलों के लिये। दिल पसीजने लगा तो उसने खुद को भाव शून्य करने का प्रयास किया। आज देहरी पर उसका पति इतने सालों बाद लौटा था, वो भी एक याचना लेकर। अब वो अकड़ कहां गयी, जो दस साल पहले थी, जब प्रताप ने दूसरा ब्याह रचाया था, क्योंकि सुनयना मां नहीं बन पायी थी। लेकिन भगवान को शायद कुछ ओर ही मंजूर था, प्रताप को दूसरी शादी करके बच्चे तो मिल गये लेकिन समय बाद उसकी दूसरी पत्नी टाइफइड बिगड़ने से चल बसी। विकट समस्या। अब बचों को कौन पाले? और तब याद आयी सुनयना की। भला उससे अच्छा ध्यान कौन रख सकता था बच्चों का। बस यही सोच कर प्रताप उसे लेने उसके मायके पहुंच गया। लेकिन उन दस सालों का क्या, जो उसने अपराधी की तरह बिताये, इसकी सजा वो प्रताप को देना चाहती थी और उसने निश्चय किया कि वो अब नहीं जायेगी। पर तभी पीछे से ज्यों ही 'मां' का उद्बोधन उसके कानों में पड़ा उसकी माता उमड़ आयी और उसने बांहे फेला कर बच्चों को अपने आंचल में समेट लिया।

श्राद्ध

अरे उठो, "कब तक सोते रहोगे" नीलू ने मयंक को झकझोरतें हुये कहा। ऊँह क्या है। "आज क्यूं उठाया जल्दी, आज तो सन्डे है भई।"

"अरे आज मांजी का श्राद्ध है, बहुत सारे पकवान बनाने है। कहते है, पितृ शांति के लिये यह बहुत जरूरी होता है। यह कहते हुये नीलू के फेन बन्द कर दिया और कपड़ा लेकर झाड़ पोछ में लग गयी।

ओह! तो ये बात है, पर जीते जी तो मांजी को एक भी दिन चैन से खाना न दिया होगा और अब यह ढोंग" मयंक मन ही मन सोचने लगा।

आखिरी समय में किनती परेशान रही अम्मा। तीनों बहुओं में यही झगड़ा रहता था, कि मैं ही क्यूं नहीं रखती। अम्मा भी क्या करती, परेशान होकर गांव चली आयी पुस्तैनी मकान में। और अपने सारे काम खुद करती रहीं, जीवन के आखिरी समय तक।

शायद उस दिन की बात अम्मा को ज्यादा चुभ गयी थी। जब छुट्टी वाले दिन नीलू ने इडली सांभर बनाया तो मां ने कहा "मैं ना खाऊंगी ये सब, मुझे तो दाल से दो रोटी बना दे बहू"। खीज कर नीलू ने कहा "छुट्टी वाले दिन इतनी फुरसत कहां कि दो-दो तरह का खाना बनाऊ" उस दिन अम्मा ने तो जैसे मौन व्रत रख लिया, पूरे दिन कुछ न खाया, बस चुपचाप कुछ सोचती रही।

और आज तो नीलू ने चार सब्जी, खीर, पूड़ी-कचौड़ी, रायता, हलुवा, चावल सब कुछ बनाया। नीलू ने आकर मयंक को हिलाया "ये पकड़ी प्लेट, दो-दो पूरी गाय, कुत्ते और कौवे को खिला आओ "यह कहकर भरी हुअी प्लेट नीलू ने मयंक को थमा दी और मयंक टुकुर-टुकुर अम्मा की तस्वीर निहार रहा था जैसे कह रहा हो "मां आज तो बहुत सारे पकवान हैं, पर तू नहीं है आ जारी तो भूखी न रहती आज।"

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय आपाक्षिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

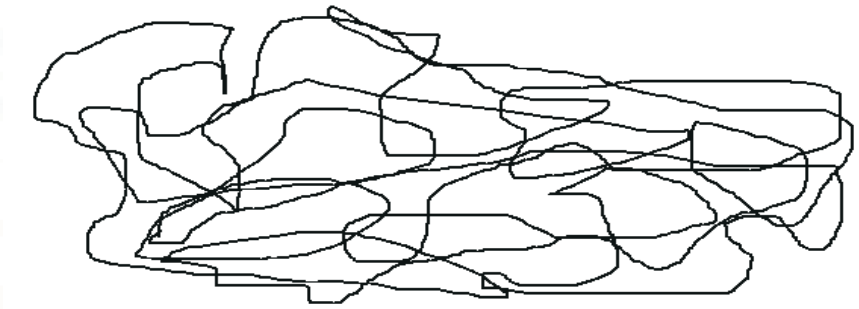

रंगनाथ द्विवेदी

जज कॉलोनी, मियांपुर
जिला-जौनपुर २२२००२ (उप्र)
मोबा. 7800824758
E-Mail : rangnathdubey90@gmail.com

पुराने कपड़े

उमा घर के पुराने-कपड़े अक्सर ऐसी जगह फेंक दिया करती थी, जहां पुरी कॉलोनी के लोग अपने-अपने घर के तमाम कचरे फेका करते थे।

लेकिन अचानक एक दिन उसे अपने पति प्रणव के साथ बनारस के एक प्रॉइवेट अस्पताल में भर्ती अपनी ननद की बिमार सास को देखने जाना था।

वह और प्रणव जल्दी से तैयार होकर बनारस जाने के लिए जब रोडवेज बस अड्डे के तिराहे पर पहुंचे तो अचानक उमा की नजर तिराहे के एक तरफ लोगों के द्वारा करीने से रखे गए पुराने कपड़े की उस ढेर पर पड़ी जिसमें से कुछ एक बच्चे और बच्चियां अपनी नाप और पसंद के कपड़ो को बड़ी तल्लीनता से ढूंढ रहे थे।

तभी उनमें से कुछ बच्चे और बच्चियां अपनी नाप व पसंद का कपड़ा पाकर इतनी ज्यादा खुश हुए कि उनकी खुशी को देखकर उमा भी खुद को खुश होने से नही रोक पाई।

लेकिन इसी के साथ उमा को यह पछतावा भी हो रहा था कि उसने अब तक घर के पुराने कपड़े को किसी ऐसी जगह क्यों नही रखा जहां ये किसी गरीब बच्चे और बच्चियों की मासूम खुशी का कारण बन सकते थे।

तभी प्रणव ने उमा को दो-तीन बार जब उमा-उमा कहकर बुलाया तो जैसे उमा अपना नाम सुनकर चौक सी गई हो। उसके इस तरह चौकने की वजह से प्रणव ने उमा से बहुत ही चिंतित लहजे में पुछा कि, -तुम ठीक तो हो उमा! तो उमा ने तुरंत ही खुद को सामान्य करते हुए प्रणव से कहा की अरे! आप तो नाहक परेशान हो रहे हैं मैं तो बिल्कुल ठीक हूं। बस! यूंही कुछ सोच रही थी इतना कहकर वह हल्के से मुस्कुरा दी। जिससे प्रणव उसके मानसिक पछतावे को किसी तरह भाप ना पाए।

फिर जब उमा प्रणव के साथ अपनी ननद की बिमार सास को देखकर बनारस से घर लौटी तो उसके ठीक दूसरे ही दिन उमा ने अपने घर के सभी पुराने कपड़े को करीने से एक बैग में रखा और रोडवेज बस अड्डे के उस तिराहे की तरफ चल पड़ी जहा शायद उसके रखें हुए पुराने कपड़े को पहनकर कुछ गरीब बच्चे और बच्चियां खुश हों सके।

कटी-पतंग

आकांक्षा आज बिल्कुल तन्हा उदास और, गुमसुम सी अपनी छत पर खड़ी तमाम उड़ती हुई पतंगों को एकटक देख रही थी। साथ ही वह यह भी सोच रही थी कि वह भी कभी इन्हीं उड़ती हुई पतंगों की तरह अपने आलोक के साथ कितनी खुश थी, लेकिन उन दिनों आकांक्षा को यह नहीं पता था कि पतंगों की नियति है एक दिन अपनी डोर से कट जाना।

अतः आकांक्षा भी एक दिन इन्हीं उड़ती पतंगों की तरह अपने- आलोक नाम के उस डोर से हमेशा-हमेशा के लिए कट गई जो उसकी जिंदगी था। अतः वह एक कटी पतंग की तरह लड़खड़ाती, इधर-उधर हवा के झोंके और थपेड़े खाती हुई दूर बहुत दूर एक गुमनाम सी दरख्त की साख पर फटकर अपनी डोर की चाहत की याद में जार जार रो और तड़प रही।

आलोक ने अपनी आकांक्षा के प्यार को ऐसे भुला दिया, जैसे किसी पतंग उड़ाने वाले, ने अपनी पुरानी कटी पतंग की जगह एक नई पतंग अपनी डोर से बांध उस प्यारी पतंग को हमेशा के लिए भुला दिया हो जिसे-अभी तलक वह बहुत प्यार से उड़ा रहा था, लेकिन आकांक्षा ऐसा नहीं कर सकी, वह आज भी अपने आलोक को नहीं भूल पाई।

तभी एक अनजानी सी पतंग कही से कटकर आकांक्षा के छत पर गिरती है जिसकी गिरने की आवाज आकांक्षा को अपने और आलोक की यादों से बाहर खींच लाती है।

पांव रिक्शा

मई की भयंकर चिलचिलाती धूप में राममनोहर अपना पांव रिक्शा तिराहे पर खड़ा कर किसी सवारी के आने का इंतजार कर रहा था, लेकिन जब काफी देर बाद भी कोई सवारी उसके पांव रिक्शे के पास नही आई तो वह काफी हताश होकर अपने पुराने गमछे से पसीने को पोछकर यह सोचने लगा कि, -एक समय वह था जब उसे दस मिनट भी ठीक से तिराहे पर खड़े हुए नही होता था कि कोई ना कोई सवारी आकर उसके रिक्शे पे बैठ जाया करती थी।

और एक समय यह हैं कि इतना इंतजार करने के बाद भी कोई सवारी उसके रिक्शे पे बैठने के लिए नही आ रही। यह सब समय का फेर हैं, वरना जो सवारी कभी रिक्शे पे बैठा करती थी, आज वही सवारी ई-रिक्शा पर बैठकर कही आ जा रही हैं। यह सब केवल शहर में ई-रिक्शा आ जानें की वजह से हुआ हैं। इसी की वजह से उसके सारे साथियों ने एक-एक कर अपना पांव रिक्शा बेच दिया और उसके बदले ई-रिक्शा खरीद लिए।

लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों और परेशानियों की वजह से राममनोहर ऐसा नही कर पाया। अब तो इस तिराहे पर ले देकर एकमात्र पांव रिक्शा केवल राममनोहर के पास ही बचा हैं। तभी उसके रिक्शे के पास दो महिला सवारी आई और उससे कहा कि, -ऐ रिक्शा भीतर कालोनी में चलोगे क्या? तो राममनोहर अपने ख्यालों से बाहर निकलकर बोला कि क्यों नही मेम साहब! इतना कहने के साथ ही उसने गमछे से रिक्शे की सीट को साफ कर कहा, -आइए बैठिए! तो उन दोनों महिलाओं ने पूछा कि, कितना किराया लोगे? राममनोहर ने कहा आप तो जानती ही हैं मेम साहब! कि वहा तक का कितना किराया होता हैं फिर भी आपकी समझ में जो भी किराया आए मुझे दे दीजिएगा।

यह बात राममनोहर ने इस डर से कही थी कि, कही यह सवारी भी उसके हाथ से ना निकल जाए। उन महिलाओं ने कहा ठीक है, चलो ! जैसे ही वे दोनो राममनोहर के रिक्शे पर बैठी वैसे ही उसने उन महिलाओं को धूप से बचने के लिए अपने रिक्शे में लगे पर्दे को खींच दिया और फिर कड़ी धूप में रिक्शे को अपने पेट और सीने के बल खींचता हुआ उस कालोनी की तरफ चल पड़ा जहा कि उसकी महिला सवारियों ने उसे छोड़ने के लिए कहा था।

पिंजड़ा

आकाश के ऑफिस चले जाने के बाद हमेशा की तरह कंक्रीट के उस पिंजड़े में कैद होकर अंजली बिल्कुल अकेली और तन्हा रह जाती थी। बिल्कुल अपनी उस पिंजड़े में पाली हुई नन्ही सी चिड़िया की तरह जो इधर-उधर अपने पंख फड़फड़ा के फिर उदास सी उसी पिजड़े में कैद होकर रह जाती थी।

न हीं इस कैद से अंजली आजाद हो पा रही और ना ही यह नन्हीं सी चिड़िया और शायद अंजली आजाद हो भी ना पाए। कैद क्या होती है? यह वह नन्ही सी चिड़िया ही जानती है जिसके सामने उसकी पसंद के कटे फल, पानी सब है फिर भी वे चिड़िया अनमने उदास मन से खाती जरूर है लेकिन उसके उस खाने में आजादी का सुख नहीं।

अंजली के पास भी इसी नन्हीं चिड़िया की तरह सब कुछ है, तमाम गहने, कीमती कपड़े, मेकअप के सामान के साथ खाने की एक से एक चीजें लेकिन अंजली के अंदर भी एक पिजड़ा है जिसमें अंजली कैद है, एक असह्य दर्द और पीड़ा के साथ।

लेकिन तभी यह क्या? कि अचानक अंजली उठती है और अपने कपकपाते और थरथराते हुए हाथों से वे उस नन्ही सी चिड़िया के पिजड़े का वे छोटा सा द्वार खोल देती है जिसमें से वे नन्हीं-सी चिड़िया बाहर निकलकर एक मर्तबा अपनी नम आँखों से खुले आसमान की तरफ देखती है और अपनी उस आजादी के लिए अंजली को शुक्रिया कह अपने नन्हें-नन्हें परो को फड़फड़ा के उड़ जाती है।

और अंजली उस नन्ही सी चिड़िया को तब तलक देखती रहती है जब तलक कि वे चिड़िया उसकी आंखों से ओझल नहीं हो जाती। उस नन्ही सी चिड़िया के आंखों से ओझल होते ही अंजली ने एक लंबी सांस छोड़ी और सोचा की क्या? उसका आकाश भी इसी तरह एक दिन इस कंक्रीट के फ्लैट के पिंजरे में कैद अपनी अंजली को आजाद कर खुली फिजा मे उसके साथ उड़ पाएगा शायद नहीं।

चूरन वाले काका

आज निर्मला अपने मायके कई सालों के बाद आई थी, वे घर के सारे सदस्यों से काफी रात तलक बाते करती रही। जिसकी वजह से उसकी नींद सुबह काफी देर से खुली. नींद खुलने के बाद निर्मला अपनी दिनचर्या के सारे काम निपटा कर अपनी उन सहेलियों से मिलने चल पड़ी जो बचपन में उसके साथ खेली व पढ़ी थी। निर्मला अपनी सभी सहेलियों से मिलने के बाद जब अंत में पुष्पा से मिलकर अपने घर लौट रही थी तो उसे-अपने स्कूल का वे गेट दिखा, स्कूल का गेट दिखते ही निर्मला के मुंह में वह बचपन का चटखारा और पानी भर आया जो उसे चूरन वाले काका को देखकर आता था।

उन दिनों निर्मला को सबसे ज्यादा पसंद वे चूरन और चूरन वाले काका ही थे। हालांकि निर्मला चूरन वाले काका

नाम नहीं जानती थी इसलिए निर्मला उनको चूरन वाले का काका कहकर बुलाती थी। निर्मला के वे चूरन वाले काका कभी कभार पैसे ना रहने पर भी उसे चुरन दे दिया करते थे। निर्मला जैसे अपने बचपन के चुरन वाले काका को अगल-बगल कहीं देख या ढूंढ रही हो, लेकिन उसके वे चूरन वाले काका कहीं दिखे नहीं उनके बारे में जानने की उत्कंठा निर्मला के मन में इतनी उठी कि वे अगल-बगल के लोगों से उस चूरन वाले काका के बारे में खुद को पूछने से नहीं रोक पाई। अगल-बगल के जानकारों से पता चला कि निर्मला के चूरन वाले काका को मरे लगभग २ वर्ष बीत चुका था। इतना सुनकर के निर्मला के मुंह में वह बचपन का चटखारा और पानी नहीं आया जो उनके चुरन के नाम पर अक्सर उसके मुंह में आ जाया करता था, हां इतना अवश्य हुआ कि वे पानी निर्मला की आंखों में भर आया। बचपन की निर्मला का अपने चुरन वाले काका के प्रति वे इतने भावुक आंसू थे जैसे किसी बिटियां ने अपनी बापू को याद किया हो। फिर न जाने क्यों निर्मला को ऐसा लगा कि जैसे तीन-चार पुड़िया चुरन की बांधे चूरन वाले काका कह रहे हो कि बिटिया तुम हमेशा खुश रहो।

डॉ. प्रणव देवेन्द्र श्रोत्रिय

शिक्षाविद, लेखक
इंदौर (मध्यप्रदेश)
मोबा. 942488518
E-Mail : drpranavds@gmail.com

वैलेंटाइन डे

अनुकृति बाजार से गुजर रही थी अचानक उसके कदम एक फूल की दुकान पर रुक गए।
'भैया यह पीले वाला गुलाब कितने का है?'
'दीदी ४० रुपए का है।'
'इतने भाव तो कभी नहीं थे!'
'आपको नहीं पता वैलेंटाइन डे।'
आज के भाव वैसे ही तेज रहते हैं।'
कोमल 'अनु यह पीला गुलाब क्यों ले रही हो? तुम्हें किसे देना है?
कॉलेज में तो कोई नहीं है, तुम्हारा परिचित?'
अनुकृति ने कहा-'मेरी बात भी सुन..मेरा भी वैलेंटाइन है, मैं उसे बहुत प्यार करती हूं, चल तुझे बताती हूं।'
दरवाजे पर बेल बजती है, दादी दरवाजा से बोली- 'आ गई मेरी लाडो रानी'...
'हाँ, यह मेरी सखी कोमल है, हमसे मिलना चाहती थी, दादी पता है, आज बड़ा त्यौहार है, लोग इसे वैलेंटाइन डे कहते हैं।
पीला गुलाब देते हुए अनु बोली दादी हैप्पी वैलेंटाइन।
-'आपका वैलेंटाइन कौन है?'
दादी ने वह फूल ठाकुर जी को चढ़ाते हुए कहा-'मेरा वैलेंटाइन मेरे कान्हा है, लो मेरे वैलेंटाइन का प्रसाद हलवा खाओ।'

नया सवेरा

कांता सुबह उठी और अपने काम पर चली गई। दो- तीन घरों का काम कर एक लंबी सांस लेकर वह बैठ गई।
नेहा- 'कांता दिनभर जी तोड़ मेहनत करती हो कभी आराम भी कर लिया करो।'
'मालकिन हम गरीबों के हिस्से में आराम कहां?, जितना काम उतना रुपया मिलता है। उम्र बढ़ने से अब ज्यादा काम नहीं हो सकेगा इसलिए कुछ रुपए जोड़ लूं जिससे अपनी खोली में एक छोटी सी दुकान खोल सकूं। यही सोच कर मैं आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करूँगी।'
यह सुनकर नेहा ने कांता से एक फॉर्म भरवाया, फिर कहा -'मैं देखती हूं क्या हो सकता है?'
कुछ दिनों के बाद नेहा ने कांता को एक पत्र देते हुए समझाया कि-'नगर पालिका ने कुछ दुकाने मुख्य बाजार के पास ही बनाई है, तुम्हारे आवेदन करने पर एक तुम्हें मिल गई है। दुकान लगाने के लिए मैं सहयोग करूंगी।'
यह सुन कांता की खुशी का ठिकाना ना रहा। 'मालकिन आपका यह उपकार कभी नहीं भूलूंगी।' घर पहुँचकर यह बात बताई। उसके तीनों बच्चों ने मिलकर दुकान के लिए आवश्यक तैयारियां कर ली। अगले दिन कांता ने देखा नया सवेरा, नई दुकान नई शुरुआत।

नन्ही व्यवसायी

गीता को यह चिंता सताएं जा रही थी कि -अब आगे क्या होगा? कोरोना महामारी ने और विराट रूप धर लिया है। कोविड से बीमार लोग अपने प्राण बचाने के लिए इधर-उधर दौड़ रहे हैं। शहर में फिर लॉकडाउन लग गया है। तारीखों का दौर चल पड़ा है। काम-काज नहीं होगा तो आमदनी कहाँ से होगी? घर खर्च चलना मुश्किल हो रहा है। इसी पशोपेश में वह घुली जा रही थी।
इसी बीच मुनिया दौड़ती-दौड़ती आई और माँ के आँचल में आकर दुबक गई।
गीता ने प्यार से कहा- 'क्यो री क्या हुआ?'
मुनिया ने कहा-'आज मैं भी कुछ कमाई करके आई हूं, यह लो रुपए। बड़े परिश्रम से जिस गुड़िया को मैं चार दिन से बना रही थी, उसे पड़ोस की कमला को अच्छे दाम में बेच दिया।'
माँ ने झिड़कर कहा- 'इसकी क्या जरूरत थी।'
भोले मन से मुनिया ने कहा- 'मैं बड़ी हो गई हूं, घर की बात क्या छुपी है मुझे, वैसे भी अभी लॉक डाउन है, ये रुपए इस कठिन समय में कुछ काम ही आएंगे।'
'माँ एक बात बताना भूल ही गई।'
मुनियाँ ने चहकते हुए कहा-'मेरी सहेली कमला के पापा बहुत अच्छे इंसान हैं।'
उन्होंने मुझसे कहा-'तुम अच्छी -अच्छी गुड़िया ब्नाओ, उन्हें बेचने की फिक्र तुम मत करो, मैं इन्हें ऑनलाइन बेचकर तुम्हे ज्यादा रुपए दिलवाऊंगा।' मुझे लगा अंकल जी मेरे लिए भगवान बनकर आए है। मैंने उन्हें गुड़िया बनाने का हाँ कह दिया।
सारी बात सुनकर माँ भाव-विभोर हो गई, भीगी आँखों मुनिया को गले लगा लिया।
गीता ने हंसकर कहा-'मेरी मुनिया भी नन्ही व्यवसायी हो गई, बधाई बिटिया, मुझे तुम पर गर्व है।

यातायात सप्ताह

शहर के सभी सिग्नलों पर सख्त व्यवस्थाएं चल रही थी।
यातायात सप्ताह पर ज्यादा सतर्कता बरती जा रही थी।
हर वाहन चालक की जांच हो रही थी। महिला चालक के लिए भी इस बार महिला पुलिस तैनात थी।
युवाओं के लिए कुछ वाहन उड़नदस्ते भी थे।
गली से चौराहों को जोड़ने वाले मोडों पर भी कैमरे से नजर रखी जा रही थी। यातायात सुगम बना हुआ था। इसी बीच मुख्य चौराहे से एक बडी गाड़ी हॉर्न बजाती लाल सिग्नल तोड़ चली जाती है।
सब मौन थे!
सिर्फ हरा सिग्नल लाल पर गुर्राया-'मेरी बारी से पहले वह गाड़ी क्यो निकली?'
लाल सिग्नल ने मुस्कराते हुए कहा-'नेताजी सदन में देर से पहुँचते तो यातायात सप्ताह की रिपोर्ट कौन देता??'

नई कलेक्टर

'माही क्या तैयारी चल रही है तुम्हारी? राजेश को कहो वह गाड़ी तैयार रखें।'
अंकिता-'क्या बात है दादी क्यों हुक्म चला रही हो सुबह -सुबह??'
'अभी मुझे बात करने की फुर्सत नहीं मैं व्यस्त हूं,
तुम्हारी बातों का जवाब बाद में दूंगी।'
कमल काका ताजे फूल तोड़ कर लाओ।
बहुत दिनों के बाद आज खुशी का अवसर आया है।
राधा घर के पर्दे लगाओ।
'आज क्या-क्या बन रहा है? सारी पसंद की चीजें बनना चाहिए, चना दाल जरूर बना लेना, उसे बहुत पसंद है।'
'यह चल क्या रहा है कोई मुझे बताएगा?' अंकिता ने पूछा।
दादी ने गर्वित भाव से कहा-'आज मैं पड़ोसी कमला को बताऊंगी, वर्षों पहले उसने जो ताना मारा था, उसका जवाब आज मेरी लाडली पोती नव्या ने दिया है। स्वागत करो मेरे दिल के करीब शहर की नई कलेक्टर नव्या आनंद का... अभिनन्दन बिटियाँ।' गाड़ी से उतरकर नव्या ने दादी के पैर छूकर आशीर्वाद लिया।

प्रकाशन
आपकी किताब आपके द्वार...
ओपन डोर
नजीबाबाद
पुस्तक प्रकाशित कराएं

ओपन डोर लघु कथा पढ़ें और निर्णय करें

लेखकगण अपनी रचनाओं को शामिल न करें, जबकि पाठक को जो भी रचनाएं अच्छी लगें उनके बारे में तीन रचनाएं एवं उनके लेखक का नाम प्राथमिकता के क्रम में नीचे लिखें-

१. आपको सबसे अच्छी लघुकथा कौन-सी लगी? किन्हीं तीन लघु कथा के शीर्षक एवं लेखक का नाम लिखें-

लघु कथा का शीर्षक	लेखक का नाम
१.	.....
२.	.....
३.	.....

हस्ताक्षर निर्णयकर्ता

नोट- सभी लेखकों को यह क्रम बनाकर भेजना अनिवार्य है। यदि कोई लेखक अपना निर्णय नहीं देता है तो उसे 'ओपन डोर' साप्ताहिक की 'लघुकथा प्रतियोगिता' से बाहर मान लिया जाएगा। बराबरी की स्थिति में संपादक मंडल का निर्णय सभी को मानना होगा। आप अपने निर्णय प्रारूप का फोटो खींचकर मोबा. 9897742814 पर वाट्स एप करें।

निर्णयकर्ता का नाम व पता

प्रथम विजेता को ११००/-, प्रमाण-पत्र द्वितीय विजेता को ५०१/-, प्रमाण-पत्र तृतीय विजेता को २५१/-, प्रमाण-पत्र
सभी प्रतिभागियों को प्रतिभाग प्रमाण-पत्र

'ओपन डोर' साप्ताहिक के नियमित ग्राहक बनें

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	सभी विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४८/३८	४
द्विवार्षिक	- १६००	६६/७६	८
पंचवार्षिक	- ४८००	२४०/१६०	२०

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

आगामी आयोजन

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
₹ 200 वर्ष : 4 अंक : 3 जून-अगस्त, 2022
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की पत्रिका **'शोधादर्श' (त्रैमासिक)** में **साहित्य, मानविकी आदि विषयों** पर शोधपरक लेखों का प्रकाशन होता है, जिससे शोध प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के साथ ज्ञानपिपासु पाठकों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। पत्रिका का आगामी अंक 'आजादी का अमृत महोत्सव' को ध्यान में रखते हुए **'जनपद बिजनौर'** विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाना है। जिसमें जनपद बिजनौर का इतिहास, साहित्य, भूगोल, प्रतिभा, स्वास्थ्य, शिक्षा, पत्रकारिता, उद्योग, राजनीति, संस्कृति एवं समाजसेवा आदि विषय समाहित रहेंगे। जिसमें आप अपने विभाग, निकाय, संस्थान, मंत्रालय, प्रतिष्ठान, उत्पाद, उत्कृष्ट सेवाओं आदि की विशिष्टताओं तथा उनकी प्रगति से संबंधित विज्ञापन देकर उनका प्रचार प्रसार जन–जन तक कर सकते हैं।

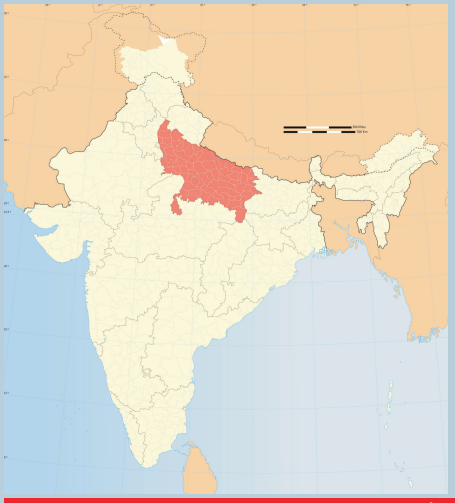

जून–अगस्त 2022 (बिजनौर विशेषांक) में संभावित सामग्री

- जनपद बिजनौर का भौगोलिक परिचय
- स्वतंत्रता आंदोलन एवं जनपद के स्वतंत्रता सेनानी
- जनपद बिजनौर की राजनीति एवं राजनेता
- जनपद बिजनौर में समाजसेवी एवं सामाजिक संस्थाएं
- जनपद बिजनौर में स्वास्थ्य सेवाएं
- जनपद बिजनौर में महिला सशक्तीकरण
- जनपद बिजनौर और सिने जगत
- जनपद बिजनौर में कृषि
- जनपद बिजनौर की संस्कृति
- जनपद बिजनौर के ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्थल
- जनपद बिजनौर का ग्रामीण विकास
- जनपद बिजनौर में वन एवं पर्यावरण आदि
- जनपद बिजनौर का इतिहास
- जनपद बिजनौर का साहित्य एवं साहित्यकार
- जनपद बिजनौर की पत्रकारिता एवं पत्रकार
- जनपद बिजनौर में शिक्षा एवं विद्यालय
- जनपद बिजनौर में सहकारिता
- जनपद बिजनौर के लोकगीत
- जनपद बिजनौर और खेल जगत
- जनपद बिजनौर के उद्योग धंधे
- जनपद बिजनौर के प्रसिद्ध मेले
- जनपद बिजनौर का नगरीय विकास
- जनपद बिजनौर की नदियाँ
- अन्य ऐसे विषय जो आवश्यक समझे जाएंगे

जून–अगस्त 2022
बिजनौर विशेषांक

सितम्बर–नवम्बर 2022
दुष्यंत कुमार त्यागी विशेषांक

दिसंबर 2022–फरवरी 2023
प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

अपने शोध लेख समयानुसार

shodhadarsh2018@gmail.com
पर भेजने का कष्ट करें।
अधिक जानकारी के लिए
9897742814 पर सम्पर्क करे

शोध लेखों की त्रैमासिक पत्रिका 'शोधार्दश' की सदस्यता लेकर प्रकाशन और पढ़ने का लाभ उठाएं। प्रकाशनोपरांत पत्रिका आपके पंजीकृत पते पर रजिस्टर्ड पार्सल से पहुंच जाएगी।

वार्षिक सदस्य – 1000 रुपए
पांच वर्ष – 5000 रुपए

Name - Shodhadarsh
Bank - Indian oversees bank
Branch - Najibabad
Account no - 368602000000186
IFSC - IOBA0003686

ऑनलाइन सदस्यता के लिए फार्म भरें
https://forms.gle/B4T6AKwXxRePSNsz9

शोधादर्श में प्रकाशित विज्ञापन रेट

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

मकैनिकल डाटा– 10.75x8.5 inch, कवर–आर्ट पेपर कलर प्रिंटिंग, अंदर पेपर–मैफलिथो श्वेत–श्याम प्रिंटिंगि, आवश्यक होने पर अंदर के कुछ पृष्ठ रंगीन भी प्रकाशित होते हैं। प्रिंटिंग एरिया–9.75x7 inch (नोट- पत्रिका के आकार, छपाई और उपयोगी काग़ज़ में बदलाव आवश्यकतानुसार संभव है)